ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

जन्माष्टमी महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

कन्हड़ होय कर बंसी बजाई, गऊ चराई।
धरती छेदी काली नाथ्यो,
असुर मार किया क्षयकारी।

– गुरु जाम्भोजी

वर्ष : 65 अंक : 8-9 सितम्बर, 2014

अवतार स्थली पीपासर
जिला–नागौर, राजस्थान

ज्ञान स्थल सम्भराथल धोरा जहां पर
श्री जम्भेश्वर भगवान ने
सन् 1485 में बिश्नोई पंथ का
प्रवर्त्तन किया था

लालासर साथरी जहां पर श्री जम्भेश्वर
भगवान ने अपनी संसारिक यात्रा पूरी
कर निर्वाण प्राप्त किया था

निज मन्दिर मुक्ति धाम
मुकाम जहाँ श्री जम्भेश्वर भगवान
की समाधि स्थित है

गुरु जम्भेश्वर वन्दना

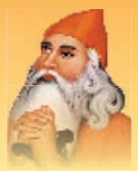

जम्भाष्टक

❀ मुखे चारू शोभं महामन्द हास्यं, करे जाप्य मालं गले जीर्ण चैलम।
महागैर रक्तं शिरस्थान जूटं, परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम्।।1।।

❀ स्थले चोपवेशं वरे धूर वेष्टं, मुखे शब्द शास्त्रं श्रुतेः पार जातम्।
जनैर्वैष्टमान सदा साधु वृन्दे, परब्रह्म रूप भजे जम्भमीशम्।।2।।

❀ अदृश्योदरं दृष्ट भूतं तथापि, सदैवभिमंत्रं महायोग सिद्धः।
करे चारू पात्रं महावृक्ष फलं, परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम्।।3।।

❀ स्वयं शेष रूपं स्वयं ब्रह्मरूपं, सदा निर्विकारं सदामात्र देहम्।
महाकांति शोभं जितं षड्गुणेशं, परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम्।।4।।

❀ गतं रोग शोकं गतं द्वेष रागं, गतं पाप पुण्यं गतं क्रोध कामम्।
गुणातीत विष्णु निराकार रूपं, परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम्।।5।।

❀ दया ज्ञान सिन्धु ध्रुवं लोकबन्धुं, शुचि शीलवन्तं शुभालोकवन्तम्।
कृतं पाप दूरं मनोवाक दूरं, परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम्।।6।।

❀ कृतानन्द भक्तं निवृताक्षे लब्धं, विनाक्षेर्प्रभुक्ति जनस्यातिहादम्।
मुख ख्यात बोधं गति देहिनां च, परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम्।।7।।

❀ महायोग वैद्यं हतं पापिनां च, नृणामेक गम्यं जलानामिवाब्धि।
महादैत्यनाशं सदाधर्म पालं, परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम्।।8।।

श्री जम्भाष्टकं मनसा, प्रातरूत्थाय मानवः।
विजितेन्द्रियः पठेन्नित्यं, सर्व पापै प्रमुच्यते।।

श्री जम्भ स्तुति एवं मंगलाचरण

- संसार सागर अथाह जल, सूझत वार न पार।
  गुरु गोविन्द कृपा करो, गावां मंगलाचार॥
- श्रीपति पहले सिंवरिये, अलष अपार अनन्त।
  झंभ गुरु जल थल रहे, भव भांजण भगवंत॥
- श्री गुरु संत चरण सिर नाऊं, अज्ञा होय विष्णु जस गाऊं।
  महाविष्णु के चरित अपारा, सुर नर मुनि जन लहै न पारा॥
- सिंवरो सिरजण हार, कलि जुगि कायम राजा आवियो।
  प्रमेसर प्रगट संसार, भागि परपति भगतां पावियो॥
- ओ३म् पूरण गुरु परमात्मा, अविगत अलख अभेव।
  जम्भ गुरु महाराज है, देवा ही अति देव॥
- बाबो सही विश्वा बीस, साचौ गुरु समरथलै।
  कान्ह कंवर नंदलाल, किरपा कर आये भले॥
- काचै करवे जल राखा, सबद जगाया दीप।
  बाभण को प्रचा दिया, अैसा अचरज कीप॥
  जो बूझा सोई कहा, अलख लखाया भेव।
  धोषा सबे गवाइया, जब सबद कहा जंभदेव॥
- निवण करूं गुरु आपणै, बंदु चरण सुभाव।
  भगतां तारण भो हरण, तीन लोक को राव॥
- रिधपति सिधपति सीलपति, सुरपति सदा सहाय।
  गति दाता गोविन्द सुमरि, गोकलि हरि गुण गाय॥
- श्री जम्भ गुरु सिंवरो सदा, सकल वियापी सोई।
  दुःख मेटण दालद्द हरण, जिंह सिंवरया सुख होई॥

गुरु जम्भेश्वर प्रणीत उन्नतीस धर्म नियम

❀ तीस दिन सूतक, पांच ऋतुवन्ती न्यारो।
सेरो करो स्नान, शील सन्तोष शुचि प्यारो।।

❀ द्विकाल सन्ध्या करो, सांझ आरती गुण गावो।
होम हित चित्त प्रीत सूं होय, बास बैकुण्ठा पावो।।

❀ पाणी वाणी इन्धणी दूध, इतना लीजै छाण।
क्षमा दया हृदय धरो, गुरु बतायो जाण।।

❀ चोरी निन्दा झूठ बरजियो, बाद न करणो कोय।
अमावस्या व्रत राखणों, भजन विष्णु बतायो जोय।।

❀ जीव दया पालणी, रुंख लीला नहिं घावै।
अजर जरै जीवत मरै, वे वास बैकुण्ठा पावै।।

❀ करै रसोई हाथ सूं, आन सूं पला न लावै।।
अमर रखावै थाट, बैल बधिया न करावै।।

❀ अमल तमाखू भांग मांस, मद्य सूं दूर ही भागै।
लील न लावै अंग, देखत दूर ही त्यागे।।

उन्नतीस धर्म की आखड़ी, हिरदै धरियो जोय।
जाम्भे जी किरपा करी, नाम बिश्नोई होय।।

नमो श्री राम सरूप अपार, नमो श्री कृष्ण विस्तार।
नमो श्री बौद्ध सरूप धरो, नमो गुरु जंभ सहाय करो।।

भक्ताधीन सो जंभ गुरू, धर्म चलायो सार।
विष्णु धर्म की उपासना, क्रिया नेम आचार।।

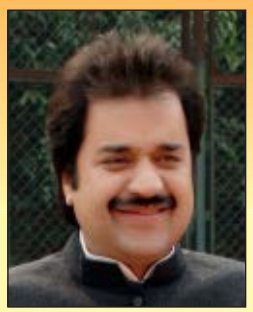

शुभ सन्देश

चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई
संरक्षक
अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा

अति हर्ष का विषय है कि गुरु जम्भेश्वर भगवान के 564वें अवतार दिवस के उपलक्ष पर बिश्नोई समाज की प्रमुख मासिक पत्रिका 'अमर ज्योति' का विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। 'अमर ज्योति' का निरन्तर प्रकाशन और इसके विशेषांक प्रकाशित करना बिश्नोई सभा हिसार का अति सराहनीय कार्य है। 'अमर ज्योति' ने गत 65 वर्षों में गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार और सामाजिक जागरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। समाज को संगठित करने में भी 'अमर ज्योति' की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसका प्रत्येक अंक उपयोगी व ज्ञानवर्धक होता है परन्तु जन्माष्टमी विशेषांक का अपना ही आकर्षण होता है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक ज्ञानवर्धक सामग्री से भरपूर होगा तथा गुरु जम्भेश्वर भगवान की लोक कल्याणकारी शिक्षाओं का सार्थक संवाहक होगा। मैं इस विशेषांक के प्रकाशन पर अमर ज्योति को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देता हूं।

गुरु जम्भेश्वर भगवान का अवतार दिवस हमारे लिए विशेष संदेश लेकर आता है। इस भौतिकवादी युग में गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाएं हमारे लिए कवच के समान हैं। आज विश्व अलगाववाद, आतंकवाद व पर्यावरण जैसी गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है। इसका कारण यही है कि स्वार्थ में डूबा मनुष्य गुरु जम्भेश्वर महाराज द्वारा आलोकित पथ की ओर ध्यान नहीं दे रहा है। इस अवतार दिवस पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम गुरु जम्भेश्वर जी द्वारा प्रदत 29 धर्म नियमों की आचार संहिता का पूरी निष्ठा के साथ पालन करेंगे। इस आचार संहिता का पालन केवल पालनकर्ता का ही कल्याण नहीं है अपितु पूरे विश्व का कल्याण है।

इस शुभ अवसर पर मैं समाज को विश्वास दिलाना चाहूंगा कि जिस प्रकार बिश्नोई रत्न स्व. चौ. भजनलाल जी ने समाज के चहुंमुखी विकास और उत्थान में अपना सर्वस्व योगदान दिया था उसी प्रकार मैं भी पूर्ण लगन और निष्ठा से समाज की सेवा करता रहूंगा। इस घोर कलयुग में एकता को ही बड़ी शक्ति माना गया है। मैं आप सब से निवेदन करता हूं कि अपने छोटे-मोटे हितों को छोड़कर समाज हित में हमें संगठित होकर कार्य करना चाहिए।

जन्माष्टमी महापर्व और गुरु जम्भेश्वर भगवान के 564वें अवतार दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(कुलदीप सिंह बिश्नोई)

प्रकाशक
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 70
आजीवन सदस्यता : ₹ 700
(50 वर्ष के लिए)

'अमर ज्योति'
का ज्ञान दीप अपने
घर आँगन में जलाइये।

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 01662-225808

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804
email: editor@amarjyotipatrika.com,
info@amarjyotipatrika.com
Website : www.amarjyotipatrika.com

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	8
2.	सबद-30	9
3.	जम्भवाणी एवं भगवद्गीता	12
4.	जम्भवाणी की सामाजिक प्रासंगिकता	16
5.	गुरु तत्त्व	19
6.	जम्भ जन्माष्टमी	22
7.	जन्माष्टमी महापर्व पर बिश्नोई सभा, हिसार...	23
8.	बिश्नोई सभा हिसार : एक नजर	24
9.	बिश्नोई धर्म में सर्वमान्य संस्कार विधि	27
10.	नील न लावै अंग, देखत दूर ही त्यागै	31
11.	भजन: सद्गुरु आया, जम्भेश्वर अवतार लिया	33
12.	महाउद्धारक गुरु जाम्भोजी	34
13.	चमत्कारी अवतार गुरु जाम्भोजी	35
14.	अनूठा है बिश्नोई समाज: मारिया शोवो	36
15.	गुरु जाम्भोजी का अवतार: एक वैशिष्ट्य	39
16.	गुरुवाना हो तो ऐसा हो	40
17.	जीवत मरो रे जीवत मरो, जिन जीवन की विध जाणी	41
18.	बधाई सन्देश	43
19.	पर्यावरण संरक्षण एवं बिश्नोई पंथ	44

क्र.	विषय	पृष्ठ
20.	संत ब्रह्मानन्द सरस्वती के साहित्य में लोक....	47
21.	गुरु जम्भेश्वर: जुग चौथे दसवौं विसन	50
22.	सुकरत अहल्यौ न जाई	52
23.	गुरु जाम्भोजी की वाणी में लोक चेतना	54
24.	गुरु जांभोजी की वाणी में मनुष्य	57
25.	गुरु जाम्भोजी ही मोक्ष का मार्ग दिखाते हैं	58
26.	खुजली	59
27.	श्रीकृष्ण भगवान: सबदवाणी के परिप्रेक्षय में	60
28.	विष्णु अवतार गुरु जाम्भोजी	61
29.	समाज में नारी का स्थान	64
30.	अमर शहीद शैतान सिंह बिश्नोई कथा	65
31.	अवतारतत्त्व- मीमांसा	66
32.	क्यों विशेष है जन्माष्टमी ?	68
33.	क्षमा: वैर परम्परा को शान्त करती है	69
34.	खेजड़ली रो खड़ाणों: सिंहावलोकन	72
35.	अमर ज्योति नियमावली	73
36.	पर्यावरण तीर्थराज खेजड़ली	74
37.	सामाजिक हलचल	75-78
38.	जांभाणी पर्व एवं अमावस्या	78

''अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें''

इस पत्रिका में व्यवस्थापक के अतिरिक्त उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सम्पादकीय

बल बल होयसां बारम्बारूं

भगवान विष्णु ने अपने कृष्णावतार में उद्घोष किया है कि जब-जब धरती पर अधर्म बढ़ेगा, धर्म की हानि होगी, दुष्ट प्रवृत्ति के लोग सज्जनों को सताएंगे तब-तब सज्जनों की रक्षा के लिए व धर्म की पुनः स्थापना के लिए मैं इस धरा-धाम पर अवतार लूंगा। यह भगवान विष्णु का स्वभाव है कि जब वे अपने भक्तों को त्रस्त व दुःखी देखते हैं तो वैकुण्ठ का सुख त्यागने में पल भी नहीं लगाते और इस धरा-धाम पर आकर मानवता की रक्षा करते हैं। सृष्टि उत्पन्न काल से लेकर अब तक ऐसे अनेक अवसर आएं हैं जब भगवान विष्णु ने अपने इस लोक कल्याणकारी चरित्र को प्रकट किया है।

मध्यकाल अनेक कारणों से संक्रमण काल माना जाता है। इस काल में धार्मिक ताना-बाना छिन्न-भिन्न होने लगा था। चारों ओर पाखण्ड का बोलबाला था। धर्म के नाम पर व्यवसाय किया जा रहा था। मानवता अपने पथ से विचलित हो गई थी। इस प्रकार के विषाक्त वातावरण में आम आदमी का दम घुटने लगा था। सनातन धर्म की जड़ें उखड़ने लगी थीं। ऐसे विकट समय में भगवान विष्णु ने पीपासर की पावन धरा पर गुरु जम्भेश्वर के रूप में अवतार धारण कर धर्म की डगमगाती नाव की पतवार संभाली थी। भगवान विष्णु का यह अवतार अपने पूर्व अवतारों से भिन्न था। गुरु जम्भेश्वर भगवान ने ज्ञान रूपी खड्ग से भूली-भटकी जनता को सद्पथ पर लाने का कार्य किया था। उन्होंने न केवल भक्त प्रह्लाद से बिछुड़े 12 करोड़ जीवों का उद्धार किया था बल्कि बिश्नोई पंथ की स्थापना कर युगों-युगों तक मानव के लिए मोक्ष का द्वार खोल दिया था। उन्होंने 29 धर्म नियमों की आचारसंहिता प्रदान कर मानवता की नई परिभाषा गढ़ी थी।

आप्त महापुरुषों के वचन व उपदेश कालजयी होते हैं। ये उपदेश हर युग में अपनी प्रासंगिकता रखते हैं। गुरु जम्भेश्वर भगवान के उपदेश आज भी अपनी उतनी ही महता रखते हैं जितनी 16वीं शताब्दी में थी। आज भौतिक चकाचौंध में मानव दया, क्षमा, त्याग, परोपकार, यज्ञ आदि को छोड़कर झूठ, फरेब, शोषण, चुगली, परनिंदा आदि में रत है। बाजारवाद और वैश्वीकरण के दौर ने मानव का आन्तरिक व बाह्य पर्यावरण दूषित कर दिया है। अपनी सुख-सुविधा के लिए मनुष्य प्रकृति से खिलवाड़ करने लगा है। यह सब अधिक दिन तक चलने वाला नहीं है। मनुष्य जिस प्रकार से गुरु जम्भेश्वर भगवान के वचनों की अवहेलना कर प्रकृति को समाप्त करने में लगा हुआ है तो उसकी प्रतिक्रिया भी स्वभाविक है। पूरा विश्व सम्प्रदायवाद की आग में जल रहा है। विभिन्न धर्मों के अनुयायी एक-दूसरे के खून के प्यासे हो रखे हैं। इस प्रकार के संकटग्रस्त वातावरण में गुरु जम्भेश्वर भगवान के सिद्धान्तों का मूल्य और भी अधिक बढ़ जाता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि दिखावे को छोड़कर गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा आलोकित पथ पर चला जाए और उन द्वारा प्रदत्त 29 धर्म नियमों का दृढ़ता के साथ पालन किया जाए। यदि कोई दृढ़ता के साथ इन नियमों का पालन करता है तो भगवान स्वयं उसकी रक्षा करेंगे। सज्जनों को अपने पथ से विचलित नहीं होना चाहिए। उनके हर संकट का निवारण भगवान स्वयं करेंगे क्योंकि गुरु जम्भेश्वर भगवान ने अपनी वाणी में वचन दिया है कि- **"म्हे तद पण होता, अब पण आछे बल बल होयसां बारम्बारूं"**।

सबद–30

दोहा–

शब्द कहो करणी कहो, ज्यूं खुलै मोक्ष द्वार।
नार पुरुष एकै मतै, चालै करणी सार।
क्रिया करणी दृढ़ रहै, आठ धर्म ले जान।
हस्त लगाया उघड़े, सतगुरु कही बखान।
तीन पुनै सतगुरु कही, शरणागति कही च्यार।
रूंख पोलियां जान ले, ऐसे कह्यो विचार।

एक समय अनेक नारी–पुरुष सम्भराथल पर एकत्रित हुए तथा सभी एक स्वर से कहने लगे– हे देव! हम सभी आपका कहना लोप नहीं करेंगे, आप हमें करणीय कार्य बताइये, जिससे हम लोग शरीर को छोड़कर प्रस्थान करें तभी आगे स्वर्ग का द्वार खुल जाये, इसलिये ऐसी कूंची आप हमें देने की महती कृपा करें। जम्भगुरु जी ने कहा कि चार प्रकार की शरणागति जिसको प्रहलाद, हरिश्चन्द्र, युधिष्ठिर तथा इस समय विष्णु रूप परमात्मा ने अपनायी है और तीन प्रकार के पुण्य अर्थात् सतगुरु की अमर वाणी का पठन–पाठन, मनन, निदिध्यासन तथा शुभ कर्म और ज्ञान ही पुण्य है। इसे जीवन में धारण करो और आठवां वृक्षों की रक्षा रूप पोलिया जो द्वारपाल है वे सभी आपको स्वर्ग द्वार में प्रवेश अवश्य ही दिला देंगे। यही स्वर्ग द्वार खोलने की कुंजी है। यहां से प्रस्थान करते समय साथ अवश्य ही लेकर जायें। इस प्रकार का आश्वासन देकर यह शब्द सुनाया।

सबद–30

ओ३म् आयो हंकारो जीवड़ो बुलायो, कह जीवड़ा के करण कमायो। थर हर कपै जीवड़ो डोलै, उत माई पीव न कोई बोलै।

भावार्थ– मृत्युकाल रूपी हंकारो जब आता है तो इस जीव को शरीर से बाहर बुला लेता है। आगे स्वर्ग या नरक रूपी न्यायालय में पेश किया जाता है, वहां पर न्यायाधीश यमराज या धर्मराज उसे पूछते हैं कि जीवड़ा तूं सच्ची बात बतला दे कि संसार में रहकर तुमने क्या कर्म किये? वैसे तो कर्मों की सूची पहले ही उनके पास पहुंच जाती है। किन्तु जीव के द्वारा भी उनके हिसाब– किताब को पेश करवाया जाता है। वहां शुभ कर्म कर्ता जीव तो धर्मराज के सामने अपने जीवन की कहानी आनन्द सहित बखान करता है किन्तु पापी जीव तो यमराज का भयंकर रूप देखकर पाप कर्मों का हिसाब देता हुआ थर–थर कांपने लगता है। वहां पर उसे डर से छुटकारा दिलाने के लिये न तो माता बोलती है और न ही पिता ही छुटकारा दिला सकता है क्योंकि वे तो पीछे ही रह जाते हैं।

सुकरत साथ सगाई चालै, स्वामी पवणा पाणी नवण करंतो। चंदे सूरे शीस निवंतो, विष्णु सूरां पोह पूछ लहन्तो।

अन्तिम समय में भी गवाह के रूप में साथ रहने वाले परमपिता परमेश्वर सबके स्वामी पवन देवता चन्द्र देवता आदि ही है। जीवन–यापन करते हुए तुमने इनको कभी नमन नहीं किया क्योंकि जो देता है वही देवता है ये तो सभी हर क्षण हमें अपनी ऊर्जा शक्ति देते ही रहते हैं। जिससे हमारा जीवन चलता रहता है। इनके बिना तो जीवन जीने की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इसलिये ये सभी जीवन दाता देव नमन करने योग्य है। संसार में जीवन निर्वाह करने के लिये कर्म करते हुए भी यमदूतों से छूटने के लिये विष्णु लोक की प्राप्ति का मार्ग किसी सद्गुरु से पूछना चाहिये था। यह भी इस अभागे जीव ने नहीं किया।

इहिं खोटे जनमन्तर स्वामी, अहनिश तेरो नाम जपंतो।

हे जीव! जब तूं अनेकानेक दु:खदायी छोटी–मोटी योनियों में भटक रहा था तब पुकारता था कि हे प्रभो! आप मुझे इस नरकीय जीवन से जल्दी छुटकारा दिला दीजिये। मैं मनुष्य जीवन धारण करके दिन–रात तुम्हारा ही स्मरण करूंगा, कभी नहीं भूलूंगा।

निगम कमाई मांगी मांग, सुरपति साथ सुरासूं रंग।
सुरपति साथ सुरां सूं मेलो, निज पोह खोज ध्याइये।

इस संसार के न्यायाधीशों को तो कोई चतुर व्यक्ति धोखा दे सकता है किन्तु वहां पर मृत्यु उपरांत देवराज इन्द्र तथा उनकी परिषद् के समूह के सामने झूठ कपट पूर्ण

व्यवहार नहीं चल सकता। इह लोक में तो हो सकता है राजा प्रजा अन्यायकारी हो किन्तु परलोक में तो अन्याय होना संभव नहीं है। जो भी व्यक्ति न्याय द्वारा शुभ पवित्र धार्मिक सिद्ध हो जायेगा उसे तो देवताओं के साथ ही स्थान प्राप्त होगा उन्हीं के रंग में, सुख शान्ति में सम्मिलित हो जायेगा। इसलिये यह जीवन रहते हुए ही स्वकीय सद्मार्ग जो स्वर्ग तक पहुंचा दे उसकी खोज करके, उस पर अति शीघ्रता से चलें। यही जीवन का सार है। यमदूत से छूटने का परम उपाय है।

भोम भली कृषाण भी भला, बूठो है जहां बाहिये।
करषण करो सनेही खेती, तिसियां साख निपाइये।

यह जीवन कृषि की तरह फलदायी है। जिस प्रकार से किसान बीज बोने से पूर्व खेती को सुधारता है तथा स्वयं तो सचेत रहता है, समय पर खेती के लिये तैयार रहता है वर्षा होने पर तुरंत जोताई करके बीज बो देता है। फिर उसमें परिश्रम करके कम वर्षा के बावजूद ही खेती को निपजा देता है। उससे फल प्राप्त कर लेता है। ठीक उसी प्रकार से ही यह शरीर ही खेत है। यह जीवात्मा ही किसान है। ये दोनों ही अति पवित्र अन्त:करण वाले होंगे कि जहां कहीं भी वर्षा रूपी ज्ञान चर्चा होगी वहीं पर जाकर निरंतर अभ्यास करेगा तभी यह परिश्रम की खेती का आनन्द रूप फल प्राप्त होगा।

लुण चुण लीयो मुरातब कीयो, कण काजै खड़ गाहिये।
कण तुस झेड़ो होय नवेड़ो, गुरु मुख पवन उड़ाइये।
पवणां डोलै तुस उड़ेला, कण ले अर्थ लगाइये।

जब फसल पककर तैयार हो जाती है तो चुन-चुन करके एकत्रित की जाती है। फिर डूर यानि भूसा के अन्दर से अन्न निकालने के लिये गाहन-गाहटा किया जाता है। बाद में पवन देवता के वेग से थोथा घास उड़ा दिया जाता है तो पीछे कण रूप अन्न ही शेष रह जाता है। जो भोजन बन करके भूख की निवृत्ति करता है। उसी प्रकार से किसान सदृश साधक को भी साधना द्वारा साध्य तैयार हो जाये तब उसे इधर-उधर जहां से भी ज्ञान प्राप्त हो सके वहीं से करना चाहिये। जब अधिक ज्ञान की सामग्री एकत्रित हो जाती है तब अपने जीवनोपयोगी सामग्री का प्रयोग कर लेना चाहिये। सत्य असत्य के विवेक के लिये गुरु मुख से निकले हुए शब्द ही वायु है, जो कण और तुस के झगड़े को नवेड़ा-निर्णय कर देता है। जब गुरु मुख से विवेक होगा तो व्यर्थ की असत् बातें उड़ जायेगी। कण रूपी तत्व ज्ञान ही शेष रह जायेगा। उसी कण तत्त्व को अपने जीवन में अपनाओगे तो जीवन आनन्दमय अवस्था को प्राप्त हो जायेगा।

यूं क्यूं भलो जे आप न फरिये, अवरां अफर फराइये।
यूं क्यूं भलो जे आप न डरिये, अवरां अडर डराइये।

इसमें भलाई कैसे हो सकती है जो आप स्वयं तो करता नहीं है अर्थात् फल प्राप्ति पर्यन्त कर्म करता नही औरों को ही फरमाता है तथा स्वयं तो पाप कर्मों से परमात्मा से डरता नहीं है और दूसरों को ही डराता है। भयजनक कथाओं से भयभीत करता है।

यूं क्यूं भलो जे आप न जरिये, अवरां अजर जराइये।
यूं क्यूं भलो जे आप न मरिये, अवरां मारण धाइये।

ऐसे भला कैसे हो सकता है जो स्वयं तो जरणा रखता नहीं है तथा दूसरों को जरणा रखने का उपदेश देता है तथा स्वयं तो मरना चाहता नहीं है किन्तु दूसरों को मारने के लिये दौड़ पड़ता है।

पहलै किरिया आप कमाइये, तो औरां न फरमाइये।
जो कुछ कीजै मरणै पहले, मत भल कहि मर जाइयै।

क्योंकि किसी दूसरों को कहने से पहले वही कार्य स्वयं करके दिखाइये फिर दूसरों के प्रति कहिये। जब तक स्वयं अपने जीवन में शुभ कर्मों को नहीं अपनाओगे तब तक आप दूसरों को कहने के अधिकारी नहीं है। यदि आप कहते हैं तो उसका कोई महत्त्व नहीं हुआ करता। यदि कुछ करना है तो मृत्यु से पूर्व ही कर लीजिये। बाद में करेंगे, फिर करेंगे इस भूल में ही समाप्त नहीं हो जाना।

शौच स्नान करो क्यूं नाही, जिवड़ा काजै न्हाइये।
शौच स्नान कियो जिन नाही, होय भैंतूला बहाइये।

इसी शरीर व जीवात्मा की पवित्रता के लिये शौच यानि बाह्य आन्तरिक मल त्याग के बाद जल मृतिका से पवित्रता तथा स्नान क्यों नहीं किया। यह तो तुझे इस जीव की भलाई के लिये करना चाहिये था। जिस व्यक्ति ने शौच स्नान नहीं किया उसे भूत-प्रेत की अपवित्र योनि प्राप्त होगी जो भैंतूला वायु की गांठ विशेष होकर दु:खी जीवन व्यतीत करते हुऐ विचरण करना पड़ेगा।

शील विवरजित जीव दुहेलो, यमपुरी ये सताइये।

रतन काया मुख सुवर बरगो, अबखल झंखे पाइये।

शील से रहित यह जीव इह लोक में दु:खी होता हुआ यम की पुरी नरक में दु:ख रूप दण्ड से दंडित किया जायेगा। तेरी यह काया रतन सदृश थी, इस मुख से अमृतमय सत्य प्रिय हित कर वचन बोलना चाहिये था किन्तु अबखल झूठ, निंदा व्यर्थ का बकवास ही बोला तो तेरा यह मुख सूवर के मुख जैसा ही है और आगामी जीवन में भी होने की पूरी सम्भावना है।

सवामण सोनो करणै पाखो, किण पर वाह चलाइये।
एक गऊ ग्वाला ऋषि मांगी, करण पखों किण सुरह सुबच्छ दुहाइये।

सवा मण सोने का दान कर्ण नित्य प्रति करता था। कर्ण के अतिरिक्त कौन ऐसा होगा जिसे वाह वाह दी जाय। कर्ण ने ग्वालों से ऋषि की प्रार्थना पर अच्छी दुधारू छोटे बच्छे वाली गाय उनको तुरंत प्रदान की थी। कर्ण के विना ऐसा दानवीर कौन हो सका था तथा-

करण पखों किन कंचन दीन्हों, राजा कवन कहाइये।
रिण ऋद्धे स्वामी करण पाखों, कुण हीरा डसन पुलाइये।

दानवीर कर्ण के अतिरिक्त इतना कंचन किसने दिया और इस पृथ्वी पर शूरवीर राजा भी कौन कहलाया। कर्ण ने दान रूपी ऋण सदा ही दिया फिर भी रिद्धि-सिद्धि का स्वामी कर्ण के समान और कौन हुआ। कर्ण ने ही तो युद्ध भूमि में घायलावस्था में ही कृष्ण अर्जुन के मांगने पर हीरे स्वर्ण जड़ित दांतों को तोड़कर समर्पित किया था। कर्ण के विना ऐसा कौन कर सकता था।

किहिं निस धर्म हुवै धुर पुरो, सुर की सभा समाइये।
जे नविये नवणी, खविये खवणी, जरिये जरणी।
करिये करणी, तो सीख हुयां घर जाइये।

कर्ण महादानी तो था किन्तु एकदेशीय धर्म का पालन करने वाला था। केवल दान ही सम्पूर्ण धर्म नहीं है। सम्पूर्णता के लिये तो अन्य आवश्यक कर्म भी अपनाने होते हैं। जो व्यक्ति नम्रता, योग्य स्थान में नमन करते हुए, क्षमा स्थान में क्षमाशील होते हुए, जरणीय दोशों की जरणा रखते हुए ही पूर्ण धर्म को अपना सकता है। वही देव सभा में सुशोभित होकर वहां स्थायी रूप से रह सकता है। यही अन्तिम विदाई भी दी जाती है कि तुम अपने घर वापिस जाओ।

अहनिश धर्म हुवै धुर पूरौ, सुर की सभा समाइये।

इस प्रकार से दिन रात प्रति क्षण धर्म पूर्णता से निभाया जा सके तो देवताओं की सभा में सम्मिलित हो सकता है। यदि अधूरा रहा तो फिर उस क्षणिक सुख फल को भोग करके वापिस आना पड़ेगा।

किहिं गुण विदरों पार पहुंतो, करणै फेर बसाइये।
मन मुख दान जु दीन्हों करणै, आवागवण जु आइयै।
गुरु मुख दान जु दीन्हों बिदुरै, सुर की सभा समाइये।

विदुर ने कौनसा गुण धारण किया जिससे पार पहुंच गया और कर्ण ने कौनसा अवगुण धारण किया जिससे वह वापिस जन्म-मरण के चक्कर में आ गया। इसका कारण बतलाते हैं कि गुरु मुखी होकर दान विदुर ने दिया तथा नम्रता-शीलता,निरभिमानता आदि गुण धारण कियें जिससे विदुर तो देव सभा में सुशोभित हुआ, जन्म-मरण के चक्कर से छूट गया तथा कर्ण ने दान तो बहुत ज्यादा दिया किन्तु मनमुखी होकर अभिमान सहित दिया तथा नम्रता शीलता आदि गुणों को धारण नहीं किया। इसलिये आवागवण के चक्कर से छूट नहीं सका।

निज पोह पाखों पार असी पुर, जाणी गीत विवाहे गाइयै।
भरमी भूला वाद विवाद, आचार विचार न जाणत स्वाद।

कुछ लोग पार उतरने के लिये सद्मार्ग को तो जानते नहीं तथा इस संसार से पार उतरने की बात को सामान्य ही मानते हैं। जैसे विवाह में गीत गाये जाते हैं। उनका कुछ भी अर्थ, सत्यता, गंभीरता नहीं होती वैसे ही राग मात्र ही होती है। इतना सरल मार्ग दर्शन शास्त्र नहीं है ये शास्त्र तथा धर्म मार्ग विवाह के गीत जैसे नहीं है कुछ भ्रम के अन्दर भूले हुए लोग वाद-विवाद में ही समय व्यतीत कर देते है। वे आचार विचार के स्वाद को नहीं जानते।

कीरत के रंग राता मुरखा मन हट मरे, ते पार गिराये कित उतरै।

आचार-विचार के स्वाद रहित भ्रम में पड़कर वाद-विवाद करने वाले जन वे अपनी ही कीर्ति चाहते हैं। मेरा ही इस संसार में नाम हो, आदर सत्कार हो ऐसे अभिमान रूपी कीर्ति के रंग में रचे हुए महामूर्ख जन इस संसार से पार कैसे उतरेंगे। वे तो अत्यधिक गहराई में डूब चुके हैं।

❐ **साभार-जम्भसागर**

विवेचन

जम्भवाणी एवं भगवद्गीता

जम्भवाणी युग-द्रष्टा गुरु जाम्भो जी के वचनामृत की संहिता है। बिश्नोई समाज में गुरु जाम्भोजी का वही स्थान है जो सत्य सनातन-हिन्दू धर्म में भगवान् श्रीकृष्ण का है। इसी प्रकार जम्भवाणी को वही प्रतिष्ठा प्राप्त है जो भगवान् श्रीकृष्ण-प्रोक्त भगवद्गीता और वेद-उपनिषद् को है।

गुरु जाम्भो जी ने स्वयं कहा है- **'मोरा उपाख्यान वेदूं'** (शब्द सं. 14) अर्थात् मेरा उपाख्यान वेदामृत है। **'गीता नाद कविता नाउं। रंग फटा रस टारूं।'** (शब्द संख्या 33) अर्थात् गीता मात्र कविता ही नहीं है अपितु यह अनहद नाद वाणी है। गीता-ज्ञान ने ही अर्जुन के मोह का नाशकर उन्हें कर्त्तव्य-पथ पर आरूढ़ किया था। गुरु जाम्भो जी को श्रीकृष्ण का ही अवतार माना जाता है। गुरु जी का अवतरण भी भगवान् श्रीकृष्ण के समान विक्रम संवत् 1508 (सन् 1451 ई.) को भादव वदि अष्टमी की अर्द्धरात्रि को ग्राम पीपासर (जिला नागौर, राजस्थान) में हुआ था। वे जाति से पंवार राजपूत थे। उनके पूज्य पिता का नाम लोहट जी पंवार था। उनकी माता हांसा देवी भगवान् श्रीकृष्ण के पवित्र कुल- यादव वंश की कन्या थी। वे यादव वंशी भाटियों से निःसृत खिलहरी कुल के मोहकम सिंह भाटी की पुत्री थी, जो छापर गांव के निवासी थे। यादव कुल की महिमा के बारे में श्रीमद्भागवत में लिखा है- **'यदोर्वंशंनरः श्रुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ यत्रावतीर्णो भगवान् परमात्मा नराकृतिः॥** -भागवत (9/23/19-20)। अर्थात् यदुवंश का इतिहास सुनने से मनुष्य पाप-मुक्त हो जाता है, क्योंकि यही वह पवित्र वंश है जिसमें परमात्मा ने मनुष्य रूप में अवतार लिया था।

गुरु जाम्भोजी के जीवन-चरित्र और कार्यों का प्रामाणिक विवरण उनके समकालीन और उनकी परम्परा में हुए रचनाकारों की रचनाओं से मिलता है। वील्हो जी (सन 1532-1673), केसोजी (सन् 1573-1679), सुरजन जी (सन् 1583-1691) ऊदोजी नैण (सन् 1447-1538) आदि ने गुरु जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर सम्यक् प्रकाश डाला है। जाम्भोजी की परम्परा में वील्होजी अत्यन्त प्रामाणिक रचनाकार माने जाते हैं। इन्होंने अपने एक कवित्त में जाम्भोजी के जीवन-सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण घटनाएं वर्णित की हैं। इसके अनुसार जाम्भोजी ने सात वर्ष बाल-लीला में बिताये, 27 वर्ष तक गायें चराईं और इक्यावन वर्ष तक 'सबद' - कथन किया। इस प्रकार 85 वर्ष 3 माह बीते। विक्रम संवत् 1593 के मार्गशीर्ष वदि नवमी (सन् 1536 ई.) को उनका वैकुण्ठवास हुआ।

बरस सात संसार बाल लीला निरहारी।
बरस पांच बावीस पाल एता दिन चारी।
ग्यारै और चालीस सबद कथिया अविनासी।
बाल गुवाल गुरज्ञान मास तीन व्रस पच्यासी।
पनरासै'र तिराणवें वदि मंगसर नुंवि आगले।
पालटे रूप रहियो रिधू इडग जोति संभराथलै।

भगवान् श्रीकृष्ण की भांति प्रभु जाम्भो जी ने लोकमंगल के अनेक कार्य किये थे। मुस्लिम शासकों सिकन्दर लोदी (1489-1517 ई.), अजमेर के सूबेदार मल्लू खां, नागौर के मुहम्मद खां नागौरी तथा कर्नाटक के नवाब शेख सद्दो को ज्ञानोपदेश दिया तथा उनसे गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगवाया। मुल्तान का सधारी मुल्ला भी उनसे ज्ञानचर्चा करके प्रभावित हुआ था। कुछ ने तो मांस खाना भी छोड़ दिया था। गुरुजी ने मेड़ता के राव दूदा (मीरा के दादा), जैसलमेर के यादव (भाटी) राजा रावल जैतसी, जोधपुर के राठौर राव सांतल और मेवाड़ के राणा सांगा (संग्रामसिंह), रानी झाली, जोधपुर के राजा मालदेव आदि को प्रभावित कर शासन में लोक-कल्याणकारी तत्वों का समावेश कराया। राजस्थान में अकाल पड़ने पर गुरु महाराज ने अन्न-वितरण कराकर लोगों का कष्ट दूर किया। वि.सं. 1542 तदनुसार सन् 1485 ई. में गुरु जाम्भोजी जी ने धर्म की रक्षा, सनातन मूल्यों की सुरक्षा, यज्ञीय ज्वाला को वर्धापना, पशु-पक्षी-वनस्पति-कल्याण -कामना तथा धर्मान्तरण से रक्षा जैसे पवित्र कार्यों की सिद्धि के लिए निर्मल बिश्नोई पंथ की स्थापना की। सर्वहितकारी 29 नियमों की संहिता में समाज को दीक्षित किया।

सबदवाणी का लक्ष्य :

सबदवाणी का लक्ष्य कर्मशीलता, आत्मज्ञान और लोकमंगल है। वह मानव को जड़ता, कुसंस्कार, अज्ञान

और भ्रम से मुक्त कराकर उसको ऊंचा उठाती है। वेद का तात्पर्य ज्ञान है और वे शब्दपरक है। अत: सबद (शब्द) का अर्थ है ज्ञान। जाम्भो जी गुरु है और हमारी संस्कृति में गुरु की प्रतिष्ठा ब्रह्म के समान ही है। अत: बिश्नोई-पंथ-परम्परा में गुरुवाणी या सबदवाणी को वेदवाणी के रूप में स्वीकार किया गया है और वह स्वत: प्रमाण है। अल्लूजी कविया (1463-1563) तथा गोकलजी आदि कवियों ने इसको पांचवां वेद माना है -

पांचवों वेद सांभलि सबद, च्यार वेद हूंता चलू।
केवली झंभ सावल कवल, आज साच पायो अलू॥

-अल्लू कविया

गुर पांचमूं वेद पढ़ै मुख परगट सो गुरुवाणी सांभलियो॥

-गोकल जी

गोरक्षा व्रत: गुरु जाम्भोजी और भगवान् श्रीकृष्ण को जो महान् कृत्य बिल्कुल समीप ला देता है, वह है गोरक्षा, गोपालन, गोसंवर्द्धन। यह बात ध्यान देने की है कि श्रीकृष्ण ने ग्यारह वर्ष की आयु तक गोकुल में गोचारण किया था। गोसंवर्द्धन और संरक्षण के लिए ही उनका देवराज इन्द्र से संघर्ष हुआ था। अनेक राक्षसों का वध भी उन्होंने गो-गोप और ग्वालों की रक्षा हेतु ही किया था। मध्यकाल में (पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी ईस्वी) गुरु जाम्भो जी और संत कवि नरहरि ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया था। गुरु नानक ने सोलह वर्ष तक गोचारण किया था और गुरु जाम्भोजी ने सत्ताईस वर्ष तक गोमाता की सेवा की थी। गुरु जी मुसलमानों को समझाते हैं भाई से प्यारा बैल है, तुम उसके गले पर छुरी क्यों चलाते हो (शब्द 9)। तुम गाय की हत्या क्यों करते हो ? यदि यह वैध है तो करीम (ईश्वर=कृष्ण) ने गाएं क्यों चराई थीं ? यदि गोवध करते हो तो उसका दूध, दही, घी आदि क्यों खाते हो ? और उसके ये पदार्थ खाकर उसका मांस, रक्त क्यों खाते-पीते हो ? (सबद सं. 9)।

गुरु जाम्भोजी की शिक्षा की एक विशेषता उन्हें अन्य गुरुओं से पृथक कर देती है और ऊंचा भी उठा देती है, वह है- "गलदश्रु भावुकता, अपने को अधम और पतित मानने की भावना जाम्भो जी में नहीं है और न ही वे इसका उपदेश देते हैं। वे झुकते हैं तो केवल गुणों के सम्मुख। उन्होंने अपने गुणवान शिष्यों का दास तक होना स्वीकार किया है।"

-(डॉ. हीरालाल माहेश्वरी-जाम्भोजी पृ. 46, 47, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1981 ई.)

जम्भवाणी एवं भगवद्गीता में समरूपता

सारी-की-सारी जम्भवाणी भगवान् श्रीकृष्ण के चरित्र के महिमागान से समलंकृत है। उदाहरणार्थ-

'कृष्णचरित बिन काचै करवे रह्यो न रहसी पाणी'॥1॥ 'कृष्ण चरित बिन क्यों क्यूं बाघ डिारत गाई'॥14॥ 'कृष्ण चरित बिन सींचाण कबही न सुजाऊ॥14॥ 'कृष्ण चरित बिन ओछा कबही न पूरूं''कृष्ण माया चौखण्ड कृषणी, जम्बूदीप चरीलो'। 'कृष्ण चरित बिन नाहिं उतरिबा पारूं'॥32॥ 'तउवा दान जू कृष्णी माया, और भी फूलत दानों'। 58। 'सहजै राखीलो म्हे कन्हड़ बालो आप जती॥67॥ गुरु महाराज कहते हैं- द्वापर युग में कृष्णावतार के समय मैंने भौमासुर के कारागार से सोलह सहस्र गोपियों को स्वतंत्र कराया था। दुष्टों का वध किया था। **'कान्ह चराई रनबे बानी, निरगुन रूप हमें पतियानौ॥75॥** निराकार श्रीकृष्ण ने साकार होकर कृष्ण रूप में गौएं चराई, वंशी की मधुर ध्वनि सुनायी। हमें भी गऊ पालन की दिव्य प्रेरणा दी और वन की महत्ता बतलायी। **'कृष्ण मया तिहूं लोका साक्षी, अमृत फूल फलीजै।' 'तीन भवन की राहीं रूक्मणा मतूंतो थल सिर आण बसाऊं॥116॥** गुरु जी एक नाथ योगी से कहते हैं- 'तू मुझे ये तुच्छ सिद्धियां दिखा रहा है। मैं चाहूं तो तीनों लोकों की महारानी रूक्मिणी को यहां लाकर दर्शन करा दूं। कौरव पाण्डव योद्धाओं को उपस्थित कर दूं, उदय होते हुए सूर्य को रोक दूं" (जैसा श्रीकृष्ण ने जयद्रथ वध के समय किया था)। इस प्रकार से पाहल मन्त्र में भी श्रीकृष्ण की पाहल कह करके कृष्ण की महत्ता प्रदर्शित की है।-(आचार्य कृष्णानन्द 'शब्द-वाणी दर्शन, पृ. 131-40) बिश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश, देहरादून, उत्तराखण्ड सन् 1993 ई.)।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गुरु वाणी अर्थात् जम्भवाणी श्रीकृष्ण महिमा से ओत-प्रोत है। उसके ताने-बाने में गीता के प्रवक्ता श्रीकृष्ण रचे-बसे हैं और सौ बात की एक बात यह है कि स्वयं जम्भेश्वर जी अपने को श्रीकृष्ण का अवतार ही घोषित करते हैं और गीता को ब्रह्म का अनहद-नाद स्वीकार करते हैं।

अवतारवाद : श्रीकृष्ण-प्रोक्त भगवद्गीता अवतारवाद की स्थापना और उसका सशक्त प्रतिपादन करती है। भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं- "जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, तब-तब मैं अवतार लेता हूं। धर्म की स्थापना करता हूं और दुष्टों का नाश करता हूं।'' - **"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥"** -(गीता 4/7)। गुरु जी जम्भवाणी में अल्लाह, अलेख, अयोनि, स्वयम्भू, विष्णु, राम, परशुराम, कृष्ण, बुद्ध, मत्स्य, वराह, नृसिंह, वामन आदि अवतारों को स्वयं अपना स्वरूप बतलाते हैं। ईश्वर प्रत्येक प्राणी के हृदय में निवास करता है। इस पर प्रकाश डालते हुए गुरु जी कहते हैं- **'अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर, बाहर लोका चारूँ।'** यही बात गुरु जी से चार हजार पांच सौ वर्ष पहले भगवान् श्रीकृष्ण भक्त अर्जुन से कहते हैं- **'ईश्वरःसर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।'** (गीता 18/61)। गुरु जी होम (यज्ञ); जाप (जप) और तप की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि जिस दिन किसी भी व्यक्ति ने ये कर्म नहीं किये तो समझना चाहिये कि उसने जान-बूझ कर घर में आई हुई कपिला (कामधेनु) गाय को भगा दिया- **'जा दिन तेरे होम न जाप न तप न किरिया, जान कै भागी कपिला गाई॥** (सबद 7)। श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं -

यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्॥
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्॥ -गीता 18/5

अर्थात् 'यज्ञ, दान और तप कभी नहीं त्यागने चाहिये। ये बुद्धिमान् पुरुषों को भी पवित्र करने वाले हैं'। श्रीभगवान् ने कामधेनु गौ को अपना ही स्वरूप बताया है - **'धेनूनामस्मिकामधुक।'** (गीता 10/28)

उत्तम कुली का उत्तम न होयबा, कारण किरिया सारू।
-सबद 26

उत्तम कुल में जन्म लेने मात्र से कोई महान् नहीं हो सकता। मनुष्य के श्रेष्ठ गुण-कर्म ही उसे श्रेष्ठ बनाते हैं और दुर्गुण उसका पतन कर देते हैं। श्री भगवान् ने कहा है- **चतुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।** -(गीता 4/13)

अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों का समूह गुण और कर्मों के विभागपूर्वक मेरे द्वारा रचा गया है। महाभारत के वन पर्व में स्पष्ट आया है कि श्रेष्ठ गुणों से चाण्डाल भी ब्राह्मण हो जाता है और दुर्गुणों से ब्राह्मण भी चाण्डाल हो जाता है। संत कबीर ने भी कहा है-

'ऊंचे कुल का जनमियां करनी ऊंच न होय। सुबरन कलस सुरा भरा साधू निन्दा सोय॥
पहलै किरिया आप कमाइये, तो औरं ने फरमाइये।
(सबद 30)।

किसी दूसरे को कहने से पहले, वह कार्य स्वयं करके दिखाना चाहिये। अन्यथा कथनी करनी में अन्तर होने पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। गीता में श्री भगवान् कहते हैं यद्यपि मुझे कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं है, फिर भी लोक-शिक्षण के लिए मैं कर्म-रत रहता हूं, अन्यथा लोग अकर्मण्य होकर नष्ट हो जाएंगे -

न मे पार्थास्ति कर्तव्य त्रिषु लोकेषु किञ्चन।
नानवाप्तवाप्तव्यं वर्त एवं च कर्मणि॥ -गीता 3/22
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्।
सङ्करस्य च कर्तास्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः॥ -गीता 2/24

गुरु जाम्भो जी सर्वोच्च सत्ता (ईश्वर) के विषय में कहते हैं कि वह परम तत्त्व सातों पातालों, तीनों लोकों, चौदह भुवनों एवं आकाश में, बाहर और भीतर सर्वत्र विद्यमान हैं - **'सप्त पताले तिहूं तृलोके। चवदा भवने गगन गहीरे॥** बाहर भीतर'' **सर्व निरंतर। जहां चीन्हों तहां सोई।'** (शब्द 40)। भगवद्गीता भी कहती - **'मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय। मयि सर्वमिदं प्रोंत सूत्र मणिगणा इव॥** - (गीता 7/7)। जम्भवाणी का स्वर अद्वैत प्रधान है। भगवद्गीता में भी स्थान-स्थान पर अद्वैत मत की प्रतिष्ठा है, यद्यपि उसमें द्वैत और त्रैतवाद समर्थक भी वचन विद्यमान हैं। जाम्भोजी पुनर्जन्म और कर्म-सिद्धान्त में अटल विश्वास रखते हैं। चौरासी लाख योनियों का उन्होंने मान्यतापूर्वक उल्लेख किया है **'लख चौरासी जीवा जूंणि न हुंती।'** (शब्द 3)। फल प्राप्ति अपने-अपने कर्मों के अनुसार होती है - **'भोम भली कृषाण भी भला। बूठो हैं जहां बाहियें। करषण करो सनेही खेती। तिसिया साख निपाइये।** (शब्द 28)। मनुष्य अपने कर्मों के अच्छे-बुरे फल का स्वयं उत्तरदायी है, ईश्वर नहीं। गीता कहती है -

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।

न कर्मफलसंयोग स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥14॥
नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥15॥

–गीता, अ. 5

निरन्तर विष्णु-विष्णु जप करना चाहिये। मनुष्य की आयु तिल-तिल घटती जा रही है, मृत्यु पास आ रही है। निरन्तर भवत् स्मरण से मोक्ष-लाभ होता है (सबद 120)। **'बिसन बिसन तू भंणि रे प्राणी। पैंकै लाख उपाजूं। रतन काया बैकुंठे वासो जरामरण भय भाजूं।** (सबद 119)। गीता में भी श्रीभगवान् कहते हैं -

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःख दोषानुदर्शनम्॥

–गीता 13/8

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम्॥

– गीता 8/7

अन्त में मैं बिश्नोई साहित्य के तपस्वी विद्वान् और खोजी साधक डॉ. हीरा लाल माहेश्वरी जी के इस कथन के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूं :-

"जाम्भो जी के हृदय में श्रीमद्भगवद्गीता के प्रति बड़ी निष्ठा है। वे न केवल उसकी प्रशंसा करते हुए उसे अन्य 'काव्य ग्रन्थों' में सर्वश्रेष्ठ मानते हैं, अपितु स्पष्ट शब्दों में घोषित करते हैं कि जिस प्रकार फिटकरी जल के गन्दलेपन को दूर कर देती है, उसी प्रकार यह सद्ग्रन्थ भी हमारे मन की सारी भ्रान्तियां नष्ट कर देता है (सबद 33)। वे वस्तुतः उसी के सदुपदेशों का स्मरण दिलाते हुए यह बताते हैं कि निष्काम भाव से कर्म करते हुए ही कार्यक्षेत्र में मर जाना सदा श्रेयस्कर एवं मुक्तिदायक हैं (सबद 33)"

– (डॉ. हीरालाल माहेश्वरी: जाम्भोजी, पृ. 40)

हम डॉ. हीरालाल माहेश्वरी के स्तुत्य मूल्यांकन में इतनी बात और जोड़ना चाहते हैं कि भगवान् जम्भेश्वर जी की आप्तवाणी जम्भगीता में आगे-पीछे-बीच में सर्वत्र ही हर्षित नयन प्रसन्नवदन हृषीकेश भगवान श्रीकृष्ण का आभामय श्रीविग्रह मन्द-मन्द मुस्कान विकीर्ण कर रहा है। सम्भवतः अन्य किसी भी मध्यकालीन संत ने श्रीकृष्ण को इतना आत्मसात् नहीं किया है। जम्भवाणी का कोई भी प्रसंग भगवान् श्रीकृष्ण के पुण्य स्मरण के बिना पूर्ण नहीं होता। कभी-कभी तो ऐसी अनुभूति होती है कि जाम्भोजी के श्रीमुख से स्वयं ही लोकपावन भगवान् हृषीकेश ही बोल रहे हैं।

❐ **रमेश कृष्ण**
कृष्ण कुटीर, कृष्णपुरी, लाइन पार,
मुरादाबाद, उ.प्र.

प्रगटे जब रूप निरंजन यह, जम्भेश्वर नाम कहावन को।
गेरूआ वस्त्र धर जाप जपे, संभराथल जाग जगावन को।।
गुरु आप अखण्डित एक भजै, सब लोगन के समझावन को।
जिन पावन से महि कीन्ह शुचि, धन्यवाद सदा उस पावन को।।

आदि अनादि युगादि को योगी, लोहट घर अवतार लियो है।
धनही धन भाग बड़ो जिन, हांसल को हरि मात कह्यो है।।
होत उजास प्रकाश भयो, जैसे रैन घटी और भोर भयो है।
कोटि द्वादश काज के तांहि, केशवदास भणै समराथल आय रह्यो है।।

विश्लेषण

जम्भवाणी की सामाजिक प्रासंगिकता

गुरु जम्भेश्वर ने अपनी वाणी में विश्व-विभाजन तीन "त्रिलोक" लोक के आधार पर किया है। तीन लोक में स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल हैं। जो ब्रह्माण्ड के संदर्भ में व्यक्त हुआ है। ब्रह्माण्ड में परिव्याप्त परम् सत्ता को ब्रह्म की संज्ञा से विभूषित किया गया है। परन्तु अध्यात्म परम्परा में लोक शब्द मायावी जगत के संदर्भ में अधिक महत्त्वपूर्ण है। जो सामान्य सांसारिकता से अधिक प्रासंगिक है। भारतीय वाङ्मय में यह विश्व विभाजन की प्रक्रिया वैदिक साहित्य से प्रारम्भ हुई है। गुरु जम्भेश्वर ने वेदोक्त भावों को लोक मर्यादाओं के साथ समन्वय करके उसका आचरण निर्धारित किया है। वस्तुत: उन्होंने समाज की मर्यादाओं को निर्धारित करके एक व्यापक धरातल तैयार किया जो मानवमात्र के लिए उपयोगी तथा दैनिक जीवन में प्रासंगिक और लोक कल्याण की सामाजिक भावभूमि पर आधारित था। जैसा कि उन्होंने आचरण और मर्यादा के विषय में अपनी वाणी में बतलाया है कि:-

"भरमी भूला वाद विवाद"
आचार विचार न जाणत स्वाद॥"

भ्रमित या संशयग्रस्त व्यक्ति आचार-विचार से विहीन हो जाते हैं वे कभी एकाग्रचित नहीं हो सकते, न ही स्थितप्रज्ञ हो सकते हैं। स्थितिप्रज्ञ व्यक्ति ही ध्यानास्थ हो सकते हैं। यह साधना व्यक्ति की व्यक्तिगत कार्य प्रणाली के अन्तर्गत आती है। यह सात्विक आचार-विचार जम्भवाणी का महत्त्वपूर्ण केन्द्र बिंदु है। जम्भवाणी में जहां सात्विक जीवन पद्धति को महत्त्व दिया गया है, वहां लौकिकता के साथ उनका तारतम्य भी अच्छा है। आध्यात्मिकता का सीधा संबंध मानवीय मूल्यों से है तथा मानवीय मूल्य आचार शास्त्र से प्रेरित है। जम्भवाणी का विशिष्ट प्रयोजन लोक कल्याण, लोक मंगल और जनसामान्य में विश्वास पैदा करना, जीवन को साधना के अनुकूल बनाना तथा जीवन के लक्ष्य को सामाजिक नियमों की पद्धति पर स्थापित करना इत्यादि महत्त्वपूर्ण सोपान है। उनकी लोकपरक दृष्टि अति सूक्ष्मातिसूक्ष्म है। उन्होंने न केवल अनुभव और साधना के द्वारा परमतत्व की प्राप्ति का सन्मार्ग बतलाया है बल्कि उन्होंने युगबोध के लोक जीवन को विस्तृत और व्यापक परिपेक्ष्य में देखा और उसका परीक्षण किया। अपनी स्वानुभूति पर आधारित यथार्थवादी सत्य के आधार पर उन्होंने अपनी दृष्टि को विकसित किया है। सामाजिक जीवन को त्यागकर उन्होंने आध्यात्मिक उपलब्धि को स्वीकार नहीं किया है न ही उन्होंने संसार से पलायन की प्रेरणा दी है। समाज में रहते हुए अपने परिवार या गृहस्थी का संरक्षण करते हुए उन्होंने आध्यात्मिक उपलब्धि को स्वीकार किया है:-

"हिरदै नांव विसन को जंपौ हाथे करो टबाई।"

सम्पूर्ण लोक मानस और लोक कल्याण की भावना को केन्द्र बिंदु मानते हुए उन्होंने सामाजिक उत्थान का एक सुदृढ़ आन्दोलन चलाया था इसलिए उनकी वाणी में लोक समाज की भावना अन्तर्निहित है। इसलिए ऐसी विचाधारा व्यक्तिपरक से अधिक मनुष्य परक है और व्यक्तिनिष्ठ के स्थान पर समाज निष्ठ है।

वैदिक काल से ही सत्य को धर्म का मूल आधार माना है। वेद, उपनिषद्, पुराण और महाकाव्यों ने सत्य को परमधर्म के रूप में स्वीकार किया है। धर्म के अन्य तत्त्वों का समायोजन भी सत्य में ही करने का प्रयत्न किया है। सत्य की व्यापकता असीम है। जम्भवाणी के के अनुसार सामाजिक जीवन में सत्य को स्वीकार करना, सत्य पर चलना और सत्य की अनुभूति करना मानव का श्रेष्ठ कर्म है, यही उसका धर्म है, यही उसका जीवन है। मन, वचन और कर्म से सत्य रहना ही वास्तविक सत्य है। सत्य के अनुसार कर्म करना मानव का धर्म है। सत्य पर चलने से मानव समाज की उन्नति होती है। असत्य जीवन पद्धति को उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया है। सत्य शुभ का प्रतिबिम्ब है। शुभ कर्म ही मनुष्य के साक्षी रूप में साथ चलते हैं:-

"सुकरत साथ सगाई चालै"

शुभ कर्म की उपयोगिता जीव के प्रत्येक आयाम में अंतर्निहित है। शुभ कर्म अनेक जन्मों तक भी व्यर्थ नहीं जा सकते है। "सबदवाणी" में शुभ कर्मों की प्रासंगिकता के विषय में बतलाया है कि:-

सुकृत अहल्यो न जाई।
भल बाहोलो भल बीजीलो।

शुभ कर्म करते हुए सामाजिक कार्यों, धार्मिक सुधारों, सांस्कृतिक उत्थानों के साथ-साथ गृहस्थी कार्यों में भी अपनी भूमिका का निर्वाह करने की प्रेरणा दी है। धर्मपथ पर चलते हुए सामाजिक या गृहस्थ जीवन में स्वावलम्बी होकर आध्यात्मिक उन्नति का प्रयास करना मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। हिन्दू जीवन विधि में भी चार आश्रमों की व्यवस्था की है जिसमें गृहस्थ आश्रम व्यवस्था को चार भागों को 100 वर्ष की अवधि मानकर विभाजित की

है। जिसमें 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य, 25 से 50 तक गृहस्थ जीवन 50 से 75 तक वानप्रस्थ एवं 75 से मृत्यु पर्यन्त संन्यास आश्रम की व्यवस्था की है। इसलिए गुरु जम्भेश्वर ने गृहस्थ जीवन में रहकर गृहस्थी जीवन में रहकर गृहस्थी जीवन में रहते भक्ति भावना की सुदृढ़ भित्ती स्थापित की है। गृहस्थ जीवन में रहते हुए काम, क्रोध, मोह और माया से दूर रहना एवं वैराग्य की भावना रखना मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

पवित्र और सात्विक जीवन से सामाजिक व्यवस्था में सन्तुलन रहता है। इससे कुप्रवृत्तियों और अन्धविश्वास समाप्त हो जाते हैं। दूसरी ओर साधना के अनुकूल जीवन में सादगी, सच्चाई, ईमानदारी, कर्मठता, कर्त्तव्यपरायणता, अतिथि-सत्कार, मानव सेवा, सत्संग, अहिंसा, गुरु सेवा, माता-पिता की सेवा और सहिष्णुता और सौहार्द की भावना को बढ़ावा मिलता है। मानवीय गुणों, सद्प्रवृतियों का विकास ही भारतीय संस्कृति का केन्द्रीय भाव है। इन धार्मिक एवं सामाजिक सद्वृत्तियों के साथ-साथ हमारे आदर्श और सामाजिक मूल्यों एवं नैतिक कर्त्तव्यों, मानवाधिकारों की अत्यंत प्रासंगिकता है। आज के भौतिकवादी युग में मानव स्वकेन्द्रित हो गया है। वह कई आयामों से स्वार्थी हो गया, उसकी सामाजिक दृष्टि संकीर्ण हो गयी, इसलिए इस युग में मानव दृष्टि को व्यापक बनाना, उदात्त भावना विकसित करना, संस्कारिक मूल्यों की रक्षा करना, विश्व बन्धुत्व की वृत्ति विकसित करना विश्व को कुटुम्ब बनाना इत्यादि मूल्यों की अपरिहार्यता हो गयी है। इसलिए गुरु जम्भेश्वर ने लोक मंगल, लोक कल्याण और लोक मानस की मानवतावादी दिव्य दृष्टि द्वारा सबके हृदय को उदात्त बनाने की प्रयास किया है जिससे प्राणी मात्र की रक्षा की जा सके।

गुरु जम्भेश्वर ने अपनी वाणी तथा उपदेशों द्वारा सामाजिक जीवन की परम्परागत रूढ़ीवादी या प्रचलित जनश्रुतियों का खण्डन करके साधना के अनुकूल सात्विक धरातल और स्वस्थ परम्परा व मानवीय मूल्यों की स्थापना की है। उन्होंने अनुभव पर आधारित शाश्वत और सनातन ज्ञान को जीवन तथा साधना के क्षेत्र में स्वीकार किया है। शास्त्रज्ञान की उपेक्षा नहीं की बल्कि उसमें से सारतत्त्व को ग्रहण करने का उपदेश दिया।

"कागल पोथा ना कुछा थोथा ना कुछ गाया गींऊ।"

शास्त्रज्ञान में सभी धर्मों के प्राचीन मूलग्रंथ आते हैं। वेद, उपनिषद्, महाभारत, रामायण, कुरान, पुराण बाईबल, गीता, मनुस्मृति, गुरुग्रंथ साहिब, बौद्ध और जैन धर्म के ग्रंथ इत्यादि में जो शाश्वत सत्य का ज्ञान है उसमें सार तत्त्व को ग्रहण करने का उपदेश गुरु जम्भेश्वर भगवान ने दिया है:-

"गीता नाद कवीता नाऊँ। रंग फटा रस टारूं।"

गुरु जम्भेश्वर ने गीता को भगवान श्रीकृष्ण के मुख से उच्चरित अनहद वाणी से विभूषित किया है और उन्होंने यह बताने का प्रयास किया कि गीता के उपदेश न केवल काल्पनिक कविता है बल्कि शाश्वत सत्य का ज्ञानकोष है। यदि कोई मनुष्य अनेक धर्मग्रंथ पढ़कर उसमें से सार तत्व को ग्रहण नहीं करता तो ऐसा मनुष्य पढ़कर भी खाली रह जाता है।

"पढ़ कागल वेदूं शास्त्र शब्दूं।
सुन रहिया कछु न लहिया॥"

उन्होंने अध्यात्म चिंतन के सूक्ष्म तत्वों के साथ सामाजिक आचार-विचार की व्यवहारिक पद्धति को अपनाकर परमतत्त्व की प्राप्ति की ओर अग्रसर करके लौकिकता में ही परम तत्त्व की प्राप्ति की खोज की है जो उनके मौलिक आध्यात्मिक चिंतन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। जनसाधारण को अपनी वाणी के केंद्र बिंदु में रखकर अपनी अवधारणा को लोकमानस में स्थापित किया। धर्म शास्त्रीय परम्परा में उन्होंने वेदकालीन, उपनिषद् कालीन, गीता, महाभारत, मनु:स्मृति, रामायण, पैगम्बरी परम्परा और जैन और बौद्ध धर्म ग्रंथों के प्रति समान का भाव रहता है। किसी भी धार्मिक शास्त्र के प्रति उन्होंने अनादर का भाव प्रकट नहीं किया है। उनकी साधना पद्धति शास्त्रीय ज्ञान के सार तत्त्वों को लेकर आगे चली है। शास्त्रीय ज्ञान के साथ अपने निजी अनुभवों का समन्वय करके जीवन की वास्तविक पृष्ठभूमि तैयार की है। इस व्यापक पृष्ठभूमि से सामाजिक जीवन की श्रेष्ठ मर्यादा स्थापित होती है।

प्राचीन वैदिक धर्म-दर्शन की पद्धति को परिष्कृत करके वर्तमान लौकिक जीवन को सुधारना उनका मुख्य लक्ष्य है। भारतीय धार्मिक भावना को सामाजिक जीवन के संदर्भ में स्वीकार करके सनातनी परम्परा आगे बढ़ाते हैं। परन्तु आगे आगे वे सांसारिक मनुष्यों को तन-मन पर नियंत्रण रखने और इन्द्रियों को जीतने का उपदेश देते है:-

"है कोई आछै मही मंडल में शूरा
मन राय सूँ झूझ रचायलै।"

परन्तु आगे वह यह भी कहते हैं कि जो मनुष्य इस संसार को जीतने की बात करता है वह अपने शरीर को भी जीत नहीं सकता। इसलिए सबसे पहले अपने शरीर पर विजय प्राप्त करनी चाहिए-

जंवरारै तैं जग डांडीलो। देह न जीती जांणौ।

मनुष्य के शरीर में मन रूपी राजा बैठा है। सबसे पहले उस पर विजय प्राप्त करके अपनी साधना का लक्ष्य प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य का परमधर्म है। यह मन ही इन्द्रियों को वश में करने वाला है। मन पर विजय प्राप्त करने वाला व्यक्ति ही पृथ्वी का सबसे शूरवीर प्राणी है।

आध्यात्मिक जीवन प्रणाली में मनुष्य की दो प्रवृत्तियों को महत्त्वपूर्ण माना है। एक गुरुमुखी वृत्ति और दूसरी मनुमुखी जैसा कि इन शब्दों से बोध हो जाता है कि गुरु की आज्ञा के अनुसार चलने वाला ही गुरुमुखी है और मन के मतानुसार चलने वाला मनमुखी है। गुरु जम्भेश्वर जी ने अपने उपदेशों और सिद्धान्तों में गुरुमुखी मनुष्य का पक्ष लिया है और मनमुखी प्रवृत्तियों का खण्डन किया है। उन्होंने पौराणिक धर्मग्रंथों व विधि विधानों द्वारा अनेक उदाहरण देकर गुरुमुखी भावों को अपनी वाणी में विशेष स्थान दिया है। गुरु जम्भेश्वर जी ने सांसारिकता को सामाजिक संबंधों के साथ जोड़ा है और सामाजिक जीवन की अपेक्षाओं, आशाओं, कामनाओं की अनिवार्यताओं को मध्यनज़र रखते हुए उनके लिये गौरवपूर्ण ढंग से अपनी वाणी में आह्वान किया है:-

इहिं कलयुग में दोय जन भूला, एक पिता एक भाई
बाप जाणै मेरे हलीयो टोरै, कोहर सांचण जाँई।
माय जाणै मेरे बहूटल आवै, बाजै बिरद बधाई।
हाली पूछै पाली पूछै। यह कलि पूछण हारी।
थली फिरंतो खिलेरी पूछै।
मेरी गुमाई छाली॥

प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी कामनाएं भविष्य के लिए निर्धारित करता है। जैसे पिता अपने पुत्र से यह कामना करता है कि बड़ा होकर हल चलाएगा, कुँए से पानी लाएगा, माता अपनी पुत्रवधू से कामना करती है कि वह घर में आकर घर की जिम्मेदारियों में सहभागी बनेगी और घर की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाएगी, पशुधन चराने वाला और मरूस्थल में घूमता हुए खिलेरी गौत्र का व्यक्ति गुरु जम्भेश्वर से अपनी सामाजिक समस्याओं एवं उनके निराकरण के उपाय भी पूछते हैं। शिकार करने वाला शिकारी गुरु महाराज से पूछता है कि मेरा कमान से निकला तीर किस कारण से चूक जाता है तथा अनेक प्रकार के कार्य करने वाले मनुष्य अपनी समस्याएं लेकर गुरु महाराज के पास आते हैं तथा गुरु महाराज उनकी ही भाषा में उनका प्रत्युत्तर देकर उन समस्याओं का निराकरण करते हैं। वे अनेक समस्याओं का समाधान आध्यात्मिक चिंतन द्वारा ही करते हैं। उनकी अमृतमयी वाणी प्रत्येक पद्धति, विधि, रीति, नियम आदि को सूक्ष्म रूप से परीक्षण करने पर ही वे कोई निर्णय लेते हैं। उनके सब निर्णय व्यक्ति और समाज के लिए होते हैं। वे किसी भी कार्य को स्वयं करने के उपरान्त ही दूसरों को ऐसा करने के लिए प्रेरित करते थे। उनकी कथनी-करनी समान थी। लौकिक जीवन के सुधार द्वारा ही पारलौकिक जीवन को पवित्र बनाया जा सकता है। यही उनकी सामाजिक धारणा थी। इसी प्रेरणा के आधार पर उन्होंने उन्नत्तीस नियमों की आचार संहिता का निर्माण किया।

गुरु जम्भेश्वर ने लोक समाज को त्याज्य नहीं माना बल्कि सामाजिक जीवन में दैनिक कार्य करते हुए अपनी भावनाओं और सद्वृत्तियों को अपनी साधना की प्रक्रिया में संलग्न करने की प्रेरणा दी, उनकी दैनिक जीवनचर्या में शुचिता, शील और संयम का समन्वित रूप जनमंगल की भावना पर आधारित था। उन्होंने जनमंगल की भावना को विकसित करते समय मानवतावाद को केन्द्र में रखा है। इसके अतिरिक्त लौकिक जीवन निषेधात्मक वृत्तियों पर जोरदार प्रहार किया। इन दुष्प्रवृत्तियों पर प्रहार करते समय उन्होंने हिन्दू, मुसलमान, जैन तथा बौद्ध धर्म, काजी और पण्डित, नाथ और दिगम्बर किसी को भी नहीं छोड़ा है:-

काजी मुल्ला पढ़िया पंडित। निंदा करै गिंवारा॥
दो जख छोड़ भिस्त जे चाहो। तो कहिया करो हमारा॥

गुरु जम्भेश्वर ने उन लोगों पर गहरा प्रहार किया जो धर्म के नाम पर लोगों को विभाजित करके साम्प्रदायिकता फैला रहे थे तथा पारस्परिक एक दूसरे की निंदा कर रहे थे। गुरु जम्भेश्वर कहते हैं यदि आप लोग नरक को छोड़कर स्वर्ग की प्राप्ति करना चाहते हो तो मेरे उपदेशों व शिक्षाओं का पालन करो जिससे तुम्हारा जीवन उज्ज्वल रहेगा।

लोक विभाजन के परिणामस्वरूप गुरु जम्भेश्वर ने मृत्यु लोक, पृथ्वीलोक तथा स्वर्गलोक का वर्णन अपनी वाणी में किया है। परलोक इस लोक से भिन्न या पृथक् कोई दूसरा स्थान नहीं है। इसी लोक में लौकिक बन्धनों से मुक्त होने की प्रक्रिया ही वास्तविक परलोक है। इन लौकिक बंधंनों से मुक्त होने पर मनुष्य सांसारिक मोह-माया, काम-क्रोध, लोभादि कलेशों से अलग होकर आध्यात्मिक आनन्द और आत्मिक शांति का अनुभव करता है। यही उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि का मुख्य लक्ष्य है।

❐ **डॉ. किशनाराम बिश्नोई**
विभागाध्यक्ष
गुरु जम्भेश्वर धार्मिक अध्ययन संस्थान,
गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार

गुरु पूर्णिमा के विशेष संदर्भ में

गुरु तत्त्व

तिथियों में आषाढ़ पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है। आज ही इस शुभ अवसर पर यह गुरु तत्व पर लेख लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सम्पूर्ण धार्मिक जगत में उत्साह की धूम मची है। इस शुभ अवसर पर गुरु तत्व की खोज करना समीचीन ही होगा। जन्माष्टमी के विशेषांक के लिये गुरु तत्व पठनीय होगा। भगवान श्री कृष्णचन्द्र एवं गुरुतत्व धारी जाम्भोजी का अवतरण का समय एक ही था। समय का प्रभाव बड़ा ही प्रबल होता है। इसलिए दोनों ही विभूतियों की लीला साम्य ही थी।

"कृष्ण वन्दे जगद गुरुम्" जगत गुरु के रूप में कृष्ण का स्मरण किया है सो ठीक ही किया है। गीता में प्रथम सबद भी धर्म आया है जिसको जाम्भोजी ने भी कहा –"गुरु मुख धर्म बखाणी" तथा प्रथम सबद का प्रथम शब्द भी गुरु आया है। आषाढ़ की पूर्णिमा गुरु की पूर्णिमा विशेष रूप से गुरु को ही समर्पित है। गुरु अवश्य ही इस दिन कुछ नया संदेश दे रहे है। वह क्या हो सकता है यह समझे–

सनातन धर्म ग्रन्थों में धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो शायद ही कहीं इस दिन का स्पष्ट उल्लेख मिलता हो। इस दिन की गुरु पूजा की मान्यता तो पिछले कुछ वर्षो से चली आ रही है। इस दिन की पूजा को व्यास पूजा भी कहते हैं। यह प्रचार व्यास गदी पर बैठ कर कथा कहने वाले कथाकारों ने अपने को व्यास सिद्ध करने के लिए और स्वयं को पुजवाने के लिए प्रचार- प्रसार किया है। इसमें कोई बुराई तो नहीं है किन्तु असली मार्ग तथ्य से तो भटका ही दिया है। जनता तथ्य से अवगत हो या न हो अपनी पूजा दक्षिणा तो पक्की कर ही लेते हैं। इससे लाभ भी है कि श्रद्धा का प्रादुर्भाव भी तो होता है एक सिक्के के दो पहलू तो सदा ही होते आये हैं।

विश्व का प्राचीनतम ज्ञान भण्डार वेद ही सर्व मान्य है। वेदों के छः अंगों में एक अंग ज्योतिष वेद के चक्षु कहे जाते हैं। बिना ज्योतिष के वेद भी अधूरा है। वेदों में निर्देशित कौन सा कार्य कब किया जाना चाहिए यह सभी कुछ ज्योतिष ही बतलाता है। व्यवहार में भी जीवन-यापन के लिए किए जाने वाले कर्म धर्म कब करने चाहिए यह भी ज्योतिष ही बतलाता है। पारदर्शी ऋषियों ने अपनी अन्तरदृष्टि से आकाश में भ्रमण करने वाले नौ ग्रह सताईस नक्षत्र बारह राशियों को अपनी अन्तरदृष्टि से देखा था और कौन-सा समय किस कार्य के लिए अच्छा रहेगा, यह निर्धारण किया था। इन नौ ग्रहों में सूर्य चन्द्र ये दोनों ग्रह तो प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

गुरु जाम्भोजी ने कहा है- **चन्दे सूरे शीश निवंतो, चन्द सूर दोय बैल रचीलो, गंग जमन दोय राशी, शशीयर सूर तपीलो** इत्यादि। तीसरा महत्त्वपूर्ण ग्रह बृहस्पति हैं जिसे गुरु कहा जाता है। यह तो देवता का गुरु होते हुए भी सभी का गुरु हैं। यह महान् गुरु वायु रूप में अवस्थित होकर सर्वत्र व्यापक हैं। यह दाता रूप से ज्ञान 'धन' एवं संतति देता है। ऐसा जन्मकुंडली से तथा जीवन में प्रत्यक्ष रूपेण भी मालूम पड़ता है। ये बातें लाखों वर्ष पूर्व में कही गई थी किन्तु आज भी सत्य हो सकती हैं।

यहां पर विचारणीय विषय है कि आषाढ़ मास की पूर्णिमा को ही गुरु पर्व क्यों मनाया जाता है? यह समय वर्षा का है। इससे पूर्व में भी वर्षा होती है कहीं कम, कहीं ज्यादा होती है। जिससे आगामी फसल के लिए निर्णायक सिद्ध नहीं हो सकती। इस पूर्णिमा से श्रावण का महीना प्रारम्भ हो जाता है। यह महीना ही अग्रिम वर्ष के लिए अन्न तृण कैसा होगा, जमाना या अकाल होगा निर्णायक होता है। अकबर ने बीरबल से पूछा था कि महीने कितने होते हैं? बीरबल ने कहा था कि महीने तो बारह होते हैं यदि उनमें से एक कम हो जाए तो कितने बचते है। बीरबल ने जवाब दिया कुछ भी नहीं बचता अर्थात् बारह महीने में से एक महीना श्रावण सूखा चला जाए तो कुछ भी नहीं बचता। अकाल पड़ जाएगा। इस पूर्णिमा को धुज पूर्णिमा भी कहते हैं। इस दिन प्राचीन काल से ही विद्वान लोग शगुन लेते आए हैं। इस दिन सायं समय मैदान में एक खंभा रोपकर उस पर ध्वजा टांग दी जाती थी। शाम के समय में हवा का रूख देखकर आगामी समय का परिज्ञान करते थे। सायंकाले गुरु ही वायु के रूप में यह बतलाते है कि आगामी क्या होने वाला है, तुम्हें क्या करना चाहिए? जैसे- सूर्यास्त समय यदि पूर्व दिशा की वायु चलती हो तो शुभ

होता है। आग्नेय कोण में वायु प्रवाह रोग शोक करने वाला होता है। दक्षिण की वायु देश में चिंता करने वाली, नैऋत्य कोण की वायु अल्प वर्षा करने वाली, पश्चिम की वायु वर्षा कारक, वायव्य कोण की वायु फल न्यून। उत्तर तथा इशान की वायु सुकाल सुवर्षा कारक होती है। यदि वायु न चले तो दुष्काल होगा। चारों तरफ की वायु चले तो उपद्रव होगा। ऐसा निर्देश दिया गया है। इस प्रकार से देखकर समय का निर्णय किया जा सकता है। यह गुरु तत्त्व वायु रूपेण सचेत करता है। सभी को ज्ञान देता है। इस प्रकार के संकेतों को समझना ही गुरु तत्त्व को समझना है।

ज्योतिष के अनुसार सूर्य और गुरु की मित्रता है। दोनों मित्र मिलकर संसार की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय करते है। जैसे - सूर्य समुद्र से अपनी किरणों द्वारा जल उठाता है। वह खारा जल छोड़कर केवल मीठा जल ही उठाता है। उस जल को बादल के रूप में परिवर्तित कर देता है। जिसको जाम्भोजी ने शब्द नं.-22 में कहा है, '**लो लो रे राजिन्दर रायो, बाजै बाव सुवायो, आभै अमि झुरायो**' अर्थात् सूर्य देव बादल बनाता है और बृहस्पति वायु रूपेण उन जल से भरे बादलों को उड़ाकर यहां आपके देश में लाकर बरसाते हैं। जिससे सम्पूर्ण जीवों की उत्पत्ति पालन-पोषण होता है। कहा भी है - **एक पलक में सर्व संतोषा, जीवां जूण समाई।** शब्द-84

जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। यह चाहे भूमिगत हो या नदी, नाले आदि से प्राप्त हो, सभी का मूल वर्षा ही है और वह वर्षा सूर्य गुरु की ही देन है। सभी प्राणियों की वंश परम्परा आगे बढ़ती रहे इसमें भी मुख्य कारण गुरु ही है। स्त्री पुरुष के संयोग से ही सभी प्राणियों की उत्पत्ति होती है। गर्भ में वीर्य- जीव स्थापना में हेतु भी सर्वत्र व्यापक गुरु ही है। इसलिए गुरु को जीव भी कहा गया है। वह गुरु वायु रूपेण श्वास-प्राण वायु प्रदान करके जीवन देता है। सभी का विकास करता है- इसलिए गुरु जाम्भोजी ने प्रथम शब्द में प्रथम ही गुरु शब्द का उच्चारण किया है। इसके द्वारा यह बतलाया है कि सभी का मूल तत्त्व गुरु ही है इससे बड़ा कोई नहीं है। सभी को देता है किन्तु किसी से कुछ भी लेता नहीं है। कहा भी है- **गुरु आप संतोषी अवरा पोषी, तंत महारस वाणी।**

इस समय गुरु वायु तत्त्व प्रदूषित हो चुका है। संसार के तथाकथित अनधिकारी गुरु बनकर समाज को दूषित कर रहे हैं। स्वयं गुरु बनने का ढोंग रच रहे हैं। किन्तु वह गुरु की औकात इन लोगों में अब कहां है। व्यास गद्दी पर बैठकर कथा कहने से अपने को ज्ञानी मान लेते हैं और ज्ञान देने का असफल प्रयास करते हैं। इस प्रकार से गुरु बृहस्पति को भी दूषित कर दिया है। यह प्रदूषण का शोर चारों तरफ सुनाई दे रहा है किंतु फल कुछ भी नहीं प्राप्त हो रहा है। इस समय वायु प्रदूषण के साथ ही मन बुद्धि का भी प्रदूषण फैल रहा है। किन्तु गुरु पूजा के रूप में व्यक्ति पूजा हो रही है। श्रद्धालु जनों का शोषण हो रहा है। असली गुरु तत्त्व से सर्वथा अनभिज्ञ हो रहे है। जब तक गुरु के साथ समरसता नहीं होगी तब तक मानसिक शारीरिक कष्टों का समाधान नहीं होगा। इस समय का मानव स्वपंथ से भटक गया है। अनेकों प्रकार की वर्जित वस्तुओं को सेवन करने में अपनी बुद्धिमता समझने लग गया है। यह अपने पैरों पर स्वयं ही कुल्हाड़ी मार रहा है। गुरु जाम्भोजी ने कहा है - **जीव दया पालनी, रूंख लीलो नही घावैं।**

उस गुरु तत्त्व बृहस्पति एवं गुरु रूपेण अवतारी गुरु जाम्भोजी ने कहा था कि 'नील न लावै अंग देखत दूर ही त्यागै' नीला वस्त्र नहीं पहनना चाहिए क्योंकि नीला और काला शनि का रूप है। शनि सूर्य का पुत्र होते हुए भी सूर्य का शत्रु है। पिता सूर्य अपने पुत्र की करामात से रूष्ट है। सूर्य जहां पर भी नीला काला शनि का रूप देखता है वही पर अपनी क्रूर किरणों से जलाने का कार्य करता है। आप देख सकते हैं कि काला नीला रंग वाला वस्त्र पत्थर आदि सूर्य की प्रचंड़ किरणों से अधिक ही तपता है और इसके विपरीत सफेद वस्त्र ठंड़ा रहता है। यह शुभ्रवर्ण गुरुदेव का रूप है। सूर्य अपने मित्र गुरु को अपनी किरणों से तपाता नहीं है। अपने मित्र को शीतलता ही प्रदान करता है। मित्र का व्यवहार तो संसार में ऐसा ही देखा जाता है। ज्योतिष शास्त्र कहीं भी नीला वस्त्र पहनने की आज्ञा नहीं देता। हम लोग इस प्रकार से भी अपने जीवन में सुख शान्ति से जुड़ने के लिए गुरु से सीधा संपर्क साध सकते हैं। वैसे भी हम गर्मदेशीय भारतीय जनों को नीला वस्त्र निषेध होना भी चाहिए। गुरु कृपा हेतु भी नीले वस्त्रों का त्याग होना आवश्यक है। अन्य शास्त्रों का भी यही अभीमत है।

'**अमावस्या को व्रत राखणो, भजन विष्णु बतायो जोय**', जाम्भोजी ने उन्नतीस नियम आचार संहिता में अमावस्या का व्रत रखने की बात बतलाई है। प्राय: सभी

लोग भजन भाव करने वाले एक समस्या से जूझते हैं कि भजन ध्यान में मन नहीं लगता, क्या करें। गुरु जाम्भोजी ने कहा- **मनराय सूं झूंझ रचायले**, ऐसा भी करते है किंतु विफलता ही हाथ लगती है। इस समस्या का समाधान देते हुए गुरुदेव ने कहा - **चंदे सूरे शीश निवंतो, शशीयर सूर पतिलो, चंद सूर दोय बैल रचिलो, गंग जमन दोय रासि**, अर्थात् -सूर्य हमारी आत्मा है। सूर्य आत्मा से बड़ा कोई नहीं है। सूर्य परम आत्मा का रूप है और चन्द्र हमारा मन का रूप है। मन चन्द्रमा से ही उत्पन्न हुआ है। चन्द्र के गुणों वाला मन तेजस्वी चंचल है। घटने बढ़ने वाला तेज गतिमान संकल्प विकल्प करने वाला मन चन्द्र की ही उत्पत्ति है।

अमावस्या के दिन चन्द्र सूर्य दोनों एक ही राशि नक्षत्र एवं अंश में आ जाते हैं। चन्द्र अपनी कला खो देता है। यानि मन भी अपनी कला चंचलता खो देगा। शांत हो जाएगा इसलिए साधना भजन ध्यान हो सकेगा। वह एक ऐसा पर्व आता है जिसमें केवल साधना ही करनी चाहिए अन्य सांसारिक कार्य नहीं करना चाहिए। यदि करते हैं तो चन्द्रकला विहीन समय में कार्य पूर्णतया सिद्ध होने में संदेह रहता है। इसलिए उस दिन भोजन भी न करें व्रत करना बतलाया है। व्रत करने से साधना भजन में प्रगति होती है। व्रत का अर्थ उपवास करना होता है अर्थात् परमात्मा के समीप निकटतम होना है। पूर्णमासी अमावस्या से विपरीत फल प्रदान करती है। अमावस्या को मन की एकाग्रता को करके देखो अवश्य ही परिणाम मिलेगा।

गुरुदेव जाम्भोजी ने आचार संहिता में तीस दिन सूतक रखने की आज्ञा प्रदान की है। वेदांग ज्योतिष यह बतलाता है कि कुल सताईस नक्षत्र होते हैं। बारह राशियां होती हैं। उन बारह राशियों में ही सताईस नक्षत्र होते हैं। नौ ग्रह इन्हीं बारह राशियों एवं सताईस नक्षत्रों में भ्रमण करते हैं। महत्त्वपूर्ण चन्द्र 28-29 दिनों में इन सभी राशियों नक्षत्रों में भ्रमण कर लेता है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र में हुआ था उसी नक्षत्र को चन्द्र उन्हीं 28-29 दिनों में पूरा कर लेता है। ठीक तीसरे दिन नया आगामी आने वाला नक्षत्र आ जाता है जिसमें नया जीवन प्रारम्भ किया जाता है। इसे ही जन्म या सूतक संस्कार कहा जाता है।

बिश्नोई पंथ में संस्कारित होने का अर्थ है कि जीवन में युक्तिपूर्वक यापन करना और जीवन का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को भी प्राप्त करना, यही मुख्य रूप से इस संस्कार का प्रयोजन है। यदि उस नवजात बच्चे को संसार सागर के चक्र से बाहर निकालना है तो तीसवें दिन ही संस्कार किया जावे, ऐसी गुरुदेव की आज्ञा भी है। तीस दिन से पूर्व संस्कार किया जायेगा तो यह दिव्यता होना असंभव है।

गुरु जाम्भोजी ने मृत्यु संस्कार तीसरे दिन का ही बतलाया है। कहा भी है - **'आज मूवा कल दूसरा दिन है जो कुछ सरै तो सारी, पीछै कलियर कागा रोलो रहसी कुक पुकारी'**, इसमें भी कारण है। ऐसी परम्परा मानव समाज में चली आई है। अन्तरदृष्टि से महापुरुषों ने देखा है फिर विधान किया है। तीन दिन तक जीव मृत्यु होने के बाद भी वहां रहता है। उसके बाद जीव की गति-जन्म हो जाता है। जीव के वहीं पर उपस्थित रहते हुए ही भाई बंधु एकत्रित होकर उसे अन्तिम विदाई देते हैं उसे ही मृत्यु संस्कार कहा जाता है।

ऐसी परम्परा रही है कि तीसरे दिन विदाई हेतु भाई बंधु सगा संबंधी एकत्रित हो जाते हैं। उस दिन उस जीव की विदाई के लिए मिष्ठान्न भोजन बनाया जाता है। प्रथम उस जीव को प्रदान करके कुटुम्बियों के युवा जनों को भोजन खिलाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि वह जीव उस मिष्ठान्न में प्रवेश करता है। उसको अपने ही जाति बिरादरी के लोग जिनके बच्चा जन्म देने की योग्यता होती है वह भोजन खाने वाले के रज-वीर्य के रूप में परिवर्तित हो जाता है वही स्त्री-पुरुष के संयोग से गर्भ में जाता है और नया जन्म बच्चे के रूप में लेकर आता है कहा भी है - 'अन्न वै ब्रह्म', अन्न ही ब्रह्म है।

इस प्रकार से कुल परम्परा चलती है। भोजन के उपरान्त जीव की अन्तिम विदाई हेतु स्वजनीय लोग मिल कर जलांजली देते हैं। यह संस्कार इस रूप से मनाया जाता है। इस प्रकार के संस्कार में देर नहीं होनी चाहिए। यह संस्कार तीसरे दिन ही होना चाहिए। तीन दिन के बाद किया हुआ संस्कार जीव की भलाई के लिए नहीं होगा। तब तक तो जीव वहां से जा चुका होगा। समय से किया हुआ कार्य ही फलीभूत होता है। इस अवसर पर हवन और पाहल भी करना अनिवार्य होता है। यज्ञ का पवित्र धूम और पाहल रूपी अमृत जल उसे जन्म मरण के चक्कर से निकाल कर उत्तम लोको में पहुंचा देता है। यह जीव को गति देने वाला अन्तिम एवं महत्त्वपूर्ण संस्कार है। विधि विधान से ही करना चाहिए।

भगवान श्री कृष्ण एवं गुरु जाम्भोजी का जन्म भादव कृष्ण पक्ष अष्टमी अर्ध रात्रि रोहिणी नक्षत्र में हुआ था। यह कोई आकस्मिक घटना है या इसमें कोई महत्त्वपूर्ण राज छिपा है। जो भी हो ऐसा संयोग अन्यत्र दुर्लभ है। एक ही समय में जन्म को देखकर उनके जीवन की शक्ति का विचार करते हैं तो बहुत कुछ साम्यता मालूम पड़ती है। ऐसा होना भी चाहिए अन्यथा ज्योतिष का सिद्धान्त भी मंद पड़ जायेगा। व्यवहार में भी एक ही समय में जन्म लेने वालों में साम्यता देखी जाती है।

अष्टमी को अर्धरात्रि में चन्द्रमा का उदय होता है। उदय होता हुआ अष्टमी का चंद्र बलवान होता है। जो जातक को बल सौन्दर्य से परिपूर्ण कर देता है। चन्द्र शीतलता, धैर्यता, सौन्दर्य और बल प्रदान करता है। ये सभी गुण इन गुणों के आगार भगवान में पहले से ही विद्यमान थे और लौकिक दृष्टि से इस बात को प्रगट कर दिया।

सूर्य जब आद्रा नक्षत्र में आ जाता है तभी से वर्षा प्रारम्भ हो जाती है और भादव कृष्ण पक्ष की अष्टमी आते ही यह प्रकृति हरियाली की नयी चादर ओढ़ लेती है। नया जमाना प्रारम्भ हो जाता है। नवीनता प्रकृति प्रदान कर देती है। चारो तरफ हर्षोल्लास का वातावरण हो जाता है। इस शुभ अवसर पर भगवान स्वयं अपनी लीला प्रगट रूपेण प्रदर्शित करने के लिए अवतार धारण करके आते हैं। इन दोनों विभूतियों को अवतार धारण करके आना उस खुशी के समय को द्विगुणित कर देता है। कृष्ण अपने शौर्य ज्ञान एवं दिव्यता को यहां आकर प्रगट करते हैं और गुरु जाम्भोजी अपने गुरुत्व की दिव्यता को प्रगट करते हैं। अपनी वाणी में गुरुदेव स्वयं को गुरु रूप में प्रगट करते हैं वह गुरु परमात्मा वायुरूपेण सर्वत्र विद्यमान हैं। कहा भी है– पवणा रूप फिरै परमेश्वर, सतगुरु शब्द अन्य लौकिक गुरुओं के लिए प्रयोग किया है। गुरु के साथ सत् शब्द का भी प्रयोग किया है। क्योंकि कहीं गुरु की खोज में कोई जिज्ञासु भटक नहीं जाएं। इसलिए कहा है कि सतगुरु होगा वही सच्चा ज्ञान दाता होगा सचेत रहे।

❐ **कृष्णानन्द आचार्य**
अध्यक्ष, जाम्भाणी साहित्य अकादमी,
बिश्नोई मंदिर, ऋषिकेश
मो.: 09897390866

जम्भ जन्माष्टमी

जन्म अष्टमी मनाओ गुरु जम्भेश्वर की
आशीर्वाद की वर्षा होगी गुरु जम्भेश्वर की।
वन्दना करो परम श्री गुरु जम्भेश्वर की
आरती उतारो परम श्री गुरु जम्भेश्वर की॥

श्री लोहट जी के घर पर आये गुरु जी
अराधना करो श्री गुरु बालेश्वर जी की।
माँ हंसा जी ने अपनी गोद में खिलाया
आरती करो श्री हंस गुरु योगेश्वर जी की॥

सात वर्ष तक अजब बाल लीलायें की
उपासना करो श्री लीला धरमेश्वर की।
सताईस वर्ष तक उन्होंने गाय चराई,
आरती उतारो गुरु श्री गोचर जी की॥

गुरु जी ने मानव बिश्नोई पंथ चलाया,
अर्चना करो परम गुरु श्री जम्भेश्वर की।
जीवों की सदा रक्षा करने की बात की,
आरती उतारो परम गुरु श्री जम्भेश्वर की॥

पर्यावरण का भी सदा ही पाठ पढ़ाया,
साधना करो परम गुरु श्री जम्भेश्वर की।
इक्यावन वर्ष तक मोक्ष की बात बताई,
आरती उतारो परम गुरु श्री जम्भेश्वर की॥

मुकाम धाम में परमपदा पाई 'सुधाकर',
पूजा करो सब परम गुरु श्री जम्भेश्वर की।
जम्भ जन्माष्टमी मनाओ श्री जम्भेश्वर की,
आरती उतारो परम गुरु श्री जम्भेश्वर की॥

❐ **ओ.पी. बिश्नोई 'सुधाकर'**
(प्रधान,अ.भा.जीव रक्षा बिश्नोई सभा, दिल्ली प्रदेश)
बिश्नोई सदन, 31, प्रियदर्शनी अपार्टमेंन्ट्स,।-4,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063

जन्माष्टमी महापर्व पर बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

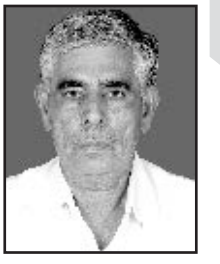

आदरणीय पाठको !

सादर नवण प्रणाम।

आप सबको बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से जन्माष्टमी महापर्व की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। जन्माष्टमी वह पावन दिवस है जिस दिन भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण और भगवान जम्भेश्वर जी ने अवतार धारण किया था। अपने इन दोनों ही अवतारों में भगवान विष्णु ने भटकी हुई मानवता का पथ-प्रदर्शन किया था। आज की विषम परिस्थितियों में भगवान श्रीकृष्ण और श्री जम्भेश्वर जी की शिक्षाओं का मूल्य और अधिक बढ़ गया है। हमें चाहिए कि हम पूर्ण समर्पण, निष्ठा और दृढ़ता के साथ उस पथ के राही बनें जो भगवान श्रीकृष्ण और गुरु जम्भेश्वर जी ने हमें दिखाया था। यही जन्माष्टमी महापर्व मनाने की सार्थकता होगी।

महानुभावो ! आज तक बिश्नोई सभा, हिसार ने समाज सेवा के क्षेत्र में जो भी महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं वे सब आपके सहयोग से ही संभव हो सके हैं। बिश्नोई सभा, हिसार पर 'बिश्नोई रत्न' चौ. भजनलाल जी का सदैव वरद हस्त रहा है। वर्तमान में चौ. कुलदीप बिश्नोई संरक्षक, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा का मार्गदर्शन व सहयोग हमें मिलता रहता है जिसके लिए हम इनके आभारी हैं। जन्माष्टमी के पावन पर्व पर आप द्वारा प्रदत्त अन्न-धन के सहयोग हेतु बिश्नोई सभा, हिसार आपकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करती है व सेवक दल द्वारा दिया गया सहयोग सराहनीय व प्रशंसनीय है। आपके इस सहयोग के लिए मेरे पास ऐसा कोई शब्द नहीं है जिससे आपके सहयोग के लिए धन्यवाद की अभिव्यक्ति की जा सके। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आपका यह स्नेहपूर्ण सहयोग भविष्य में भी उदार हृदय से मिलता रहेगा, प्रत्युत्तर में हम भी आपको पूरा विश्वास दिलाते हैं कि हम समाज सेवा के कार्यों में पूर्णतया खरे उतरेंगे।

बिश्नोई मन्दिर, हिसार के परिसर में श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के भव्य मन्दिर तैयार हो गया है जिसका आज इस पावन अवसर पर उद्घाटन किया जा रहा है। इसी परिसर में एक शॉपिंग कॉम्पलैक्स बनाना और मुकाम में हरियाणा भवन के साथ लगती भूमि पर भव्य भवन का निर्माण करना बिश्नोई सभा, हिसार की भावी योजनाएं हैं, जिनकी पूर्णता के लिए आपके सहयोग की महती आवश्यकता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके सहयोग व मार्गदर्शन से उपर्युक्त योजनाएं शीघ्र ही साकार होंगी। बिश्नोई सभा, हिसार द्वारा अग्रसैन मार्किट में संचालित गुरु जम्भेश्वर पुस्तकालय को भी सुव्यवस्थित किया गया है। वर्तमान में इस पुस्तकालय में दो हजार से अधिक स्तरीय पुस्तकें रखी गई हैं। शीघ्र ही इस पुस्तकालय का रिकार्ड कम्प्यूट्रीकृत किया जाएगा। पुस्तकालय की सदस्यता सुविधा भी प्रारम्भ की गई है। आसपास क्षेत्र के साहित्य प्रेमियों से मेरा निवेदन है कि वे इस पुस्तकालय की सदस्यता ग्रहण कर लाभ उठावें। एक बार पुन: आप सबको जन्माष्टमी महोत्सव के उपलक्ष्य पर हार्दिक बधाई और मंगल कामनाएं।

सद्भावनाओं सहित।

सुभाष देहडू
प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार
☎: 01662-225804, 225808
: 99960-01929

बिश्नोई सभा हिसार : एक नज़र

जिला हिसार के आसपास बिश्नोइयों की काफी आबादी थी परन्तु हिसार शहर में ठहरने की कोई उचित व्यवस्था नहीं थी जिससे काफी असुविधा होती थी। समाज की ओर से ठहरने की उचित व्यवस्था शहर में होनी चाहिए इसलिए चौ. सोहनलाल जौहर, श्रीराम ज्याणी, श्री रामरिख ज्याणी व श्री रामजस पूनिया व काफी अन्य लोगों ने प्रयास शुरू किये तथा बिश्नोई सभा, हिसार नाम की संस्था बनाने के बारे में योजना बनाई गई। इसी सन्दर्भ में जिला हिसार के बिश्नोइयों की सर्वप्रथम बैठक 19.3.1945 को जाट हाई स्कूल, हिसार में हुई जिसकी अध्यक्षता चौ. सोहनलाल जौहर लान्धड़ी निवासी ने की तथा इलाके के लगभग एक सौ से भी ज्यादा बिश्नोई बन्धुओं ने भाग लिया तथा सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि बिश्नोई सभा, हिसार का विधिवत रजिस्ट्रेशन करवाया जाए। इसका कार्यलय हिसार में खोला जाए, हिसार में बिश्नोई मंदिर व धर्मशाला का निर्माण किया जाए तथा भूमि खरीदने का प्रबन्ध किया जाए तथा चन्दा इकट्ठा करना शुरू किया जाये। इसी बैठक में श्रीराम जी ज्याणी बिश्नोई सभा, हिसार के प्रथम प्रधान चुने गये। श्री सोहनलाल जी जौहर को उप-प्रधान, श्री मुन्शी रामरिख ज्याणी को सभा सचिव व श्री आसाराम जौहर को खंजाची चुना गया। श्री सोहनलाल जौहर लान्धड़ी ने तलाकी गेट स्थित अपने मकान का एक कमरा कार्यालय के लिए देना मन्जूर किया। इस प्रकार इन महानुभावों के प्रयासों से बिश्नोई सभा, हिसार के विधिवत गठन की कार्यवाही आरम्भ हुई।

इस तरह बैठकों का दौर चलता रहा। अक्टूबर 1945 में हिसार में लगभग 8 बीघे व 5 बीसवा जमीन का सौदा कुल 9200 रुपये में हुआ, पांच सौ रुपये बतौर इकरारनामा भी दे दिया गया तथा बाकी रकम के लिए चन्दा इकट्ठा करना शुरू किया।

बिश्नोई सभा, हिसार की नौवीं बैठक 9.12.1945 को हिसार में बिश्नोई मंदिर, हिसार के वर्तमान स्थल पर हुई जिसमें लगभग 230 सदस्यों ने भाग लिया तथा मंदिर के प्रस्तावित स्थल पर भजनलाल गायणा की प्रथम पुजारी के रूप में नियुक्ति हुई।

दिनांक 15.3.1946 को प्रस्तावित भूमि के एक भाग की रजिस्ट्री हो गई। इस प्रकार 15.3.1946 को सभा इस भूमि, जिस पर अब मंदिर है विधिवत् मालिक बन गई।

दिनांक 2.1.1946 की बैठक में बिश्नोई सभा, हिसार का प्रारूप व संविधान को सर्वसम्मति से पास किया गया तथा 8.2.1947 को सतत प्रयासों के परिणाम स्वरूप बिश्नोई सभा, हिसार का पंजीकरण रजिस्ट्रेशन ऑफ सोसाइटीज एक्ट ऑफ 1860 के तहत क्रमांक न. 121 वर्ष 1946-47 लाहौर में करवाया गया।

दिनांक 25.9.48 को बाकी भूमि की रजिस्ट्री करवाई गई। इस प्रकार बिश्नोई सभा, हिसार कुल 8 बीघे व 5 बीसवा भूमि की मालिक बन गई। सभा को भूमि दिलाने में सर्व श्री ठाकुरदास भार्गव एडवोकेट, भाई प्रकाश चंद, आत्माराम एडवोकेट व बाबू जसवन्तराम एडवोकेट आदि का सराहनीय योगदान रहा।

अमर-ज्योति मासिक पत्रिका के प्रकाशन के लिए वर्ष 1949 में श्री राम जी ज्याणी की अध्यक्षता में हुई बैठक में निर्णय लिया गया। पत्रिका के प्रकाशन में श्री मनीराम गोदारा एडवोकेट (आदमपुर), श्री राम प्रताप जौहर सीसवाल, श्री सहीराम जौहर व मुन्शी रामरिख जाणी का उल्लेखनीय योगदान रहा। वर्ष 1948 में जन्माष्टमी समारोह पहली बार विधिपूर्वक मनाया गया था।

दिनांक 2.9.1951 की बैठक में सभा ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास कर कांग्रेस पार्टी से मांग की कि बिश्नोई समाज के चौ. मनीराम गोदारा व श्री रामरिख भादू धांगड़ को आने वाले विधानसभा चुनावों में टिकट दें।

सभा की दिनांक 30.1.1955 की मीटिंग में निर्णय हुआ कि हिसार सभा की ओर से मुकाम-मेला प्रबन्ध के लिए सेवक दल भेजकर मेलों के आयोजनों में महासभा की मदद की जाये, तभी से आज तक यह क्रिया लगातार जारी है। दिनांक 21.1.1956 की बैठक में इस हॉल वाली जगह खरीदने का निर्णय हुआ तथा 24.10.1956 को इस हॉल वाली जगह की रजिस्ट्री करवाई गई। दिनांक 4.6.1959 व 3.7.1959 को फतेहाबाद स्थित मंदिर की

कुल भूमि 21 बीघा व 9 बिसवा की रजिस्ट्री करवाई गई।

श्रीराम जी जाणी प्रथम प्रधान का 21.4.1961 को निधन हो गया। दिनांक 22.4.1961 की सभा की बैठक हुई व उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रीराम जी जाणी का कार्यकाल 19.3.1945 से 21.4.1961 तक रहा। इस दौरान बिश्नोई मंदिर, हिसार की भूमि खरीद मंदिर व धर्मशाला का निर्माण, फतेहाबाद मंदिर के लिये भूमि खरीदी, जन्माष्टमी समारोह मनाना शुरू, अमर-ज्योति पत्रिका का प्रकाशन, ऋषिकेश मंदिर की भूमि समाज को दिलवाना व डेरा रताखेड़ा में समाज का कब्जा कायम करना इत्यादि उल्लेखनीय उपलब्धि रही। सभा की बैठक दिनांक 26.11.1961 में श्री पतराम सींवर सीसवाल को सर्वसम्मति से द्वितीय प्रधान चुना गया। इन्हीं के कार्यकाल में मेन हॉल (निज मंदिर) में पुस्तकालय आदि का निर्माण हुआ तथा मुकाम में हरियाणा भवन के लिये भूमि खरीदी गई।

दिनांक 26.3.1966 को श्री पतराम जी सींवर का निधन हो गया। दिनांक 22.5.1966 की बैठक में श्री पतराम जी सींवर के निधन पर शोक प्रकट किया तथा इस बैठक में श्री रामरिख जी भादू धांगड़ को तृतीय प्रधान सर्वसम्मति से चुना गया। इन्होंने अपने कार्यकाल में छात्रावास बनवाया। फतेहाबाद मंदिर के लिए कुछ भूमि खरीदी। राजस्थान में अकाल पीड़ितों की सहायता की। दिनांक 6.3.74 को श्री रामरिख जी भादू का निधन हो गया।

सभा की 19.5.1974 की बैठक में श्री प्रेमनारायण पूनियां मंगाली को चतुर्थ प्रधान चुना गया। इन्हीं के कार्यकाल में डेरा बाबा बलकाई नाथ से भूमि दान में प्राप्त करके दिनांक 13.9.1975 में सिरसा में बिश्नोई मंदिर का शिलान्यास किया गया।

इन्हीं के कार्यकाल में बीकानेर में बिश्नोई समाज के लिये मंदिर एवं धर्मशाला निर्माण के लिये भूमि प्राप्त करना, बीकानेर व सिरसा के लिए चन्दा एकत्रित करना आदि कार्य सम्पन्न हुए। सन् 1975 में अमर-ज्योति रजत जयंती समारोह का आयोजन गया। मई 1975 में अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, मुकाम के नौवें महाअधिवेशन नगीना के सफल आयोजन में इन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्हीं के कार्यकाल में जवाहर नगर में 6 कनाल व 11 मरला भूमि श्री भागीराम लाम्बा, श्री चतर सिंह गोदारा, रामकरण सारण, भजनलाल ज्याणी आदि से दान में प्राप्त की। वर्तमान में यहां श्री गुरु जम्भेश्वर स्कूल चल रहा है तथा बिश्नोई मंदिर भी है। स्वास्थ्य कारणों से श्री प्रेमनारायण ने त्यागपत्र दे दिया।

सभा की बैठक दिनांक 17.7.1977 में श्री बृजलाल पंवार निवासी ठसका को बिश्नोई सभा, हिसार का सर्वसम्मति से पंचम प्रधान चुना गया।

सभा की बैठक दिनांक 22.7.1979 में चौ. भजन लाल जी द्वारा 17.6.1979 को मुख्यमंत्री बनने पर हार्दिक बधाई प्रेषित की गई तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई।

सभा की बैठक 13.7.1980 व 19.7.1981 को हुई बैठक में रतिया और आदमपुर में बिश्नोई मंदिर के लिए भूमि खरीदने के बारे में निर्णय लिए गए। इसी बीच बीस वर्ष उल्लेखनीय सेवा करने वाले श्री शंकर लाल पुजारी के निधन पर शोक व्यक्त किया गया। बिश्नोई सभा, हिसार के आर्थिक सहयोग व प्रयासों के परिणाम स्वरूप दिनांक 4.9.1981 से प्रथम खेजड़ली मेला सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ तभी से यह मेला बहुत ही अच्छी तरह आयोजित हो रहा है।

बिश्नोई सभा, हिसार के प्रयासों द्वारा 15.6.1989 को 19 कनाल 6 मरले भूमि हिसार में शमशान भूमि के लिए प्राप्त करने में सभा कामयाब हुई। टोहाना व जाम्भा में भी भूमि खरीदने के निर्णय लिये गए तथा सभा सफल हुई। मुकाम में हरियाणा आश्रम में लगभग 40 कमरों का निर्माण करवाया गया।

दिनांक 6.7.1985 में सभा द्वारा डबवाली में भूमि खरीदी गई तथा मुकाम में सन् 1985, पंचसती समारोह मनाने में सभा की विशेष भूमिका रही। दिल्ली में बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस 1.11.1988 को मनाने का निर्णय हुआ जो कि अब तक जारी है। मंदिर में नई दुकानों के निर्माण कार्य भी हुआ। चौ. बृजलाल पंवार का कार्यकाल स्वर्णिम काल रहा। इनके कार्यकाल में सभा के सभी कार्य हर क्षेत्र में उल्लेखनीय रहे। दिनांक 15.9.1996 को स्वास्थ्य कारणों से इनकी जगह श्री रामगोपाल भादू धांगड़ को छठा प्रधान चुना गया। इनका कार्यकाल थोड़ा ही रहा। परन्तु फतेहाबाद मंदिर में दुकानों का निर्माण इनकी उल्लेखनीय

उपलब्धि रही। दुकानों के निर्माण में भी चौ. नेकीराम ढुकीया अलालवास का योगदान हमेशा याद रखा जायेगा। श्री राम गोपाल भादू ने भी 31.7.1999 को स्वास्थ्य कारणों से त्याग पत्र दे दिया।

दिनांक 8.8.1999 की बैठक में श्री सहदेव कालीराना को सभा का सातवां प्रधान चुना गया। श्री सहदेव के कार्यकाल में नए मुख्य द्वार का निर्माण कार्य शुरू हुआ तथा दिल्ली संस्थान भवन का शिलान्यास इन्हीं के कार्यकाल में हुआ।

दिनांक 7.12.2003 को श्री सहदेव कालीराना ने प्रधान पद से त्याग पत्र दे दिया। दिनांक 7.12.2003 की बैठक में श्री सहीराम डूडी बुढ़ाखेड़ा को आठवां प्रधान चुना गया। पंचकुला बिश्नोई मंदिर निर्माण इनके कार्यकाल की विशेष उपलब्धि रही। श्री सहीराम डूडी ने स्वास्थ्य कारणों से 20.5.2010 को त्याग पत्र दे दिया तथा श्री बनवारी लाल लाम्बा को दिनांक 20.5.2010 की बैठक में सभा का नौवां प्रधान चुना गया। इनका कार्यकाल बहुत ही अल्प समय रहा 15.12.2010 को इनका आकस्मिक निधन हो गया। मंदिर के दक्षिण की ओर साथ लगती 3200 वर्ग गज भूमि की खरीद इन्हीं के कार्यकाल में हुई।

दिनांक 22.1.2011 को बिश्नोई सभा, हिसार की बैठक में श्री सुभाषचन्द्र देहडू को सभा का दसवां प्रधान चुना गया। जो कि निरन्तर कार्य कर रहे हैं। इन्हीं के प्रयासों से बिश्नोई सभा, हिसार द्वारा 10.8.2012 को चौ. कुलदीप जी बिश्नोई द्वारा श्री गुरु जम्भेश्वर मंदिर, हिसार का शिलान्यास करवाया गया तथा भव्य मंदिर बनकर तैयार हो गया।जिसका उद्घाटन दिनांक 18.8.2014 को जन्माष्टमी के अवसर पर चौ. कुलदीप जी बिश्नोई द्वारा किया जायेगा। बिश्नोई सभा, हिसार आभारी है बाबा बालकाई नाथ का जिन्होंने सिरसा मंदिर के लिए भूमि दान दी। धोंकलराम बैनीवाल, हेतराम बैनीवाल प्रधान (सिरसा), श्री रामस्वरूप जाणी प्रधान (रतिया), श्री बिशनाराम लोहमरोड़ व श्री ताराचन्द जी खीचड़, श्री रामस्वरूप जी बैनीवाल व श्री आसाराम जी लोहमरोड़ जिन्होंने समाज में बहुत ज्यादा योगदान दिया। हम आभारी हैं श्री मनीराम जी मांझू के जिन्होंने फतेहाबाद मंदिर व बीकानेर धर्मशाला के लिए विशेष योगदान दिया। हम आभारी हैं चौ. पोकरलाल जी बैनीवाल के जिन्होंने मण्डी आदमपुर मंदिर के निर्माण में सहयोग दिया। चौ.पोकरमल जी बैनीवाल ने अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, मुकाम के अध्यक्ष रह कर मुकाम मंदिर का निर्माण कार्य पूरा करवाया। हम आभारी हैं श्री रामसिंह जी कालीराना पूर्व पुलिस अधिकारी के जिन्होंने कुरुक्षेत्र भूमि पाने में सहयोग किया। हम आभारी हैं श्री अचिन्तराम गोदारा के जिन्होनें पंचकुला मंदिर वास्ते विशेष योगदान दिया। हम आभारी हैं हमारे पूर्वज सर्वश्री हरिराम गोदारा, राजाराम लाम्बा, भागीराम कड़वासरा, भागीराम डारा, अमीचन्द पूनिया, रामकरण खीचड़ (पटेल), लाधुराम पूनिया व अन्य कई महानुभावों के जिन्होंने इस सभा को सफल बनाने में सहयोग दिया।

स्व. चौ. मनीराम जी गोदारा पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार का मंदिर निर्माण को लेकर अपने पूरे जीवन काल तक उल्लेखनीय योगदान रहा। बिश्नोई रत्न चौ. भजनलाल जी पूर्व मुख्य मंत्री हरियाणा सरकार शुरू से ही समाज तथा सभा मे जो योगदान रहा है वो समाज कभी भुला नहीं पाएगा। बिश्नोई मंदिर मंडी डबवाली, मंडी आदमपुर, रतिया, टोहाना, पंचकूला व गुरू जंभेश्वर संस्थान भवन दिल्ली में इन्ही द्वारा समाज को भूमि दिलवाई व निर्माण करवाया गया तथा निज मंदिर मुक्ति धाम का जीर्णोद्धार करवाया।

इनके योगदान के लिये समाज हमेशा इनका ऋणी रहेगा व आने वाली पीढीयां याद रखेगी। आज चौ. कुलदीप जी बिश्नोई, संरक्षक अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, मुकाम, चौ. साहब के पद चिन्हों पर चलते हुए समाज तथा बिश्नोई सभा, हिसार की प्रगति में अहम भूमिका निभा रहे है।

बिश्नोई सभा, हिसार का बहुत ही गौरवशाली इतिहास रहा है। इस सभा का 1945 में गठन हुआ था तब से यह प्रगति की ओर अग्रसर है। पूरे भारत वर्ष में इस सभा ने समय-समय पर आर्थिक व अन्य सभी प्रकार का सहयोग किया है। हमें गर्व है कि आज हम इस सभा के हिस्से हैं। पूर्वजों के प्रयासों से यह सभा आज इस गौरवशाली मुकाम पर पहुंची है।

❐ **मनोहरलाल गोदारा**
सचिव, बिश्नोई सभा, हिसार

बिश्नोई धर्म में सर्वमान्य संस्कार विधि

हवन की विधि

प्रात:काल नित्य नैमित्तिक क्रियाओं से निवृत होकर हवनीय प्रक्रिया प्रारम्भ करें। शुद्ध पवित्र जगह पर यज्ञ की वेदी बनावें, यज्ञ का स्थान हवादार होना चाहिए और सब लोग आराम से बैठ सकें। यज्ञ कुण्ड गोल, चतुष्ककोण, अष्टकोण इनमें से अपनी सुविधानुसार बनावें। यज्ञ कुण्ड तांबे, पीतल, लोहा अथवा मिट्टी का हो। यज्ञ छोटा हो या बड़ा, यज्ञ के साथ में कलश होना जरूरी है। पाहल के लिए मिट्टी का कोरा घड़ा लेकर नये नातणे से छानकर पवित्र जल से भर कर लावें और यज्ञ कुण्ड के पास पूर्व और उत्तर दिशा के बीच के कोण में बाजरी या गेहूं के ऊपर रख दें।

उपर्युक्त कार्य करके सामग्री शुद्ध तैयार करके गोघृत का ही प्रयोग करें। यज्ञ मण्डप में बैठने वाले सभी नशें से रहित हों। यज्ञ में आहुति देने वाले को चाहिए कि स्वाहा शब्द के साथ ही आहुति दें। यज्ञकुण्ड की अग्नि गो गोबर के छाणों से धुपिया तैयार करके चालू करें। सस्वर शब्दों का शुद्ध उच्चारण करें और प्रेम से बोलें।

1. **संस्कार**- मानव शरीर के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सोलह संस्कार माने गए है। शरीर का आरम्भ गर्भाधान से और अन्त मृत्यु संस्कार के साथ होता है। वैसे तो मुख्य रूप से मनुस्मृति के अनुसार सोलह संस्कार माने हैं। लेकिन बिश्नोई समाज में मुख्य रूप से चार संस्कारों का उल्लेख निम्न प्रकार से किया जाता है। जब शिशु का जन्म होता है उस समय नाल छेदन करके स्नान कराया जाता है और सुशील स्त्री के द्वारा घी, गुड़, मिश्री अथवा शहद की जन्म घुट्टी दी जाती है। जिस दिन बच्चे का जन्म होता है उस दिन से ठीक तीस दिन पूरे होने पर 31वें दिन घर को अच्छी तरह से लिपवाकर, पक्का हो तो धुलवाकर शुद्ध-पवित्र करके अच्छे जानकार कारण क्रिया वाले सुगरे संस्कारित बिश्नोई को बुलाकर पीछे बतलायी गई प्रक्रियानुसार संस्कार करवाएं। इस संस्कार में भी गोत्राचार वैदिक मंत्रों सहित प्रेम से शब्दों से यज्ञ करें। कम से कम 20-25 शब्द बोलें। यदि सामर्थ्य हो तो 120 शब्दों का पाठ करवा कर कलश पर हो सके तो पिता का ही हाथ रखावें। यदि घर पर उपस्थित न हो तो परिवारस्थ दादा, काका, ताऊ आदि हो इस तरह कलश पूजा करें और पाहल मन्त्र पढ़कर फिर पाहल तैयार होने पर जिसने कलश पर हाथ रखा था उसको पाहल देकर उस प्रसुता स्त्री को बुलावें। यज्ञ के पास बैठकर पाहल का छिंटा देकर पहले बच्चे की मां को तीन बार पाहल दें फिर हाथ धुलवाकर बालक मंत्र बोलते हुए एक बार मंत्र बोलें तीन बार पाहल देकर बच्चे को पिलावें फिर एक बार मन्त्र पढ़कर तीन बार बच्चे को पाहल दें। नौ बार पाहल देने का मतलब आंतरिक जनेऊ संस्कार किया जा रहा है। इस तरह बच्चे का जन्म संस्कार होता है। अत: ध्यान रहे संस्कारहीन, आचरणच्युत, क्रूर कर्मी, मलीन, अवगुणी, नुगरे व्यक्ति से संस्कार कभी भी न करायें।

2. **सुगरा संस्कार**- नामकरण, करण वेध आदि संस्कारोपरान्त बालक-बालिका की अवस्था 12 वर्ष से 15 वर्षों के मध्य हो तब तक सुगरा संस्कार हो जाना चाहिए क्योंकि सुगरा संस्कार के बिना मानव जीवन निष्फल माना गया है। यह संस्कार विधि विधानपूर्वक हवन पाहल करके करें। ओ३म् शब्द गुरु.... मंत्र को गुरु आगे बोलें सुगरा होने वाला शिष्य पीछे बोले। इस क्रम से तीन बार बोलकर पाहल दें और गुरु मंत्र के महत्व पर प्रकाश डालें। गुरु द्वारा प्रदत्त मंत्र गुप्त ही रखना चाहिए। मंत्रदाता गुरु एक ही होता है। गुरु योग्य विद्वान चरित्रवान बिश्नोई सन्त ही होना चाहिए। सुगरा संस्कार केवल संत ही कर सकते हैं। गृहस्थ को इसका अधिकार नहीं है। यदि कोई कुचेष्टा करता है तो उसका प्रभाव धर्म से हटकर है।

3. **विवाह संस्कार**- सुगरा संस्कार के बाद नम्बर आता है विवाह संस्कार का। यह संस्कार जब लड़का व लड़की विद्या अध्ययन करके पूर्ण समझदार हो जाए, विवाह योग्य हो जाए तो शास्त्रीय विधि के अनुसार लड़की की आयु कम से कम 16 से 18 वर्ष व लड़के की आयु 20 व 25 वर्ष हो जाए तो उसे विवाह योग्य समझना चाहिए।

कन्या पक्ष व वर पक्ष दोनों आपस में मिल बैठकर तय करें उससे पहले लड़का-लड़की की अनुमति आवश्यक जान पड़ती है। ऐसा करने से माता-पिता एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी से बच सकते हैं। अनुमति व पसन्द का जब विवाह होता है तो पति व पत्नी दोनों का समान अधिकार हो जाता है। दाम्पत्य जीवन में आने वाले हर दौर

के दोनों बराबर के भागीदार बन जाते हैं। अत: बच्चों की सहमति लेना ना भूलें।

जब सगाई निश्चित हो जाती है तो दोनों पक्ष अपनी सुविधानुसार जब विवाह की तिथि निश्चित करने के लिए एक दूसरे से विचार करके तदोपरान्त कन्या पक्ष अपने घर पर भाई-बन्धुओं को बुलवाकर डोरा करते हैं। सर्वजनों की उपस्थिति में अपनी कन्या के विवाह का दिन वार तथा समय निर्धारित करता है। उस समय कच्चे सूत के धागों की लच्छियां बनाई जाती हैं। इन लच्छियों पर डोरा करने के दिन से जितने दिन पश्चात विवाह सम्पन्न होता है, उतनी गांठें बांधी जाती हैं। गांठें बांधने के बाद उन डोरों को हल्दी में रंगा जाता है। इसे ही डोरा करना कहते हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि दोनों डोरों की गांठें बराबर हों। दोनों में से एक डोरा किसी के साथ वर पक्ष के घर भेज दिया जाता है। दूसरा डोरा कन्या पक्ष के पास रहता है।

विवाह तिथि के तीन या चार दिन शेष रह जाएं तो सभी सम्बन्धी लोगों को बुलवाकर डोरा बधारणा करते हैं जिसमें गुड़ आदि बांटा जाता है। दोनों पक्षों में भी यही क्रिया की जाती है। वर कन्या के तेल पीठी करते हैं। उस समय दादा दही का टीका देते हैं। उसको दही देना भी कहते हैं। डोरे की गांठें पूरी होने पर जिस दिन बारात रवाना होती है उस दिन वर पक्ष के घर यज्ञ व पाहल होना चाहिए क्योंकि किसी भी मांगलिक कार्य के अवसर पर हवन पाहल आवश्यक है। ठीक यही प्रक्रिया विवाह के दिन कन्या पक्ष में भी होनी चाहिए।

विवाह के दिन सूर्यास्त होते ही कन्या के पिता के घर के दरवाजे पर तोरण बांधकर गोधूली के समय वर को बारातियों के साथ तोरण पर बुलावे, तोरण पर आकर वर के पिता या बड़े जो आदरणीय लोग हैं। वो सब मिलकर कन्या के उपहार रूप में लाये गए वस्त्राभूषणादि दें। उसी समय वर को लेकर बाराती ढुकाव पर आते हैं। वर के पीछे उसके अंगरक्षक के रूप में एक व्यक्ति लम्बी कांटेदार बोरटी की छड़ी लिए खड़ा रहता है। ज्योंही वर कन्या के बाहरी द्वार पर पहुंचकर एक बन्धनवार होता है जिसमें हरे पत्ते खेजड़ी के बांधे होते हैं, वर के इस द्वार पर पहुंचने के पश्चात कन्या का पिता या कोई सम्बन्धी, तोरण की डोर के ऊपर से वह कांटेदार छड़ी सम्मानपूर्वक ग्रहण करता है। जिसे छड़ी बनाना कहते हैं। फिर स्त्रियां वहां पर जल का कलश लेकर आती हैं, उसे वर के पड़कन द्वारा तोरण के ऊपर से देना चाहिए। यह एक मांगलिक प्रक्रिया है क्योंकि जल जीवन का प्रतीक है। इसके बाद पीठी उतारना व आरती की रस्म की जाती है। तदोपरान्त आंगन की ओर बढ़ते हैं। आंगन में यज्ञवेदी के पास दो पीढ़े (ऊंचे आसन) रखे जाते हैं। जिस पर वर व कन्या दोनों को बैठा दिया जाता है। इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए कि यज्ञवेदी पर जूते पहनकर न आएं, जूते उतार कर ही बैठना चाहिए। ज्योति के पास जूते पहनकर बैठना भारी दोष माना जाता है। वर और वधू दोनों को उत्तर दिश की ओर मुख करके बैठाएं। कन्या को दायीं तरफ बैठना चाहिए। मंत्रोच्चारण के साथ गठजोड़ा बांधें। गठजोड़े के बाद मंत्रोच्चारण के साथ हथलेवो जोड़ें जिसमें कन्या व वर दोनों के हाथ के मध्य आटा, हल्दी, मेहन्दी की एक पिण्डली रखी जाती है, मंत्र बोलते हुए। इस प्रक्रिया के बाद गोत्राचार व वैदिक मंत्र बोलें। मंत्रों के पश्चात् कम से कम 40-50 शब्द बोलें क्योंकि बिना शब्दों के बोले पाहल बनाने की परम्परा नहीं है। अत: शब्दों के बाद ही पाहल बनावें। तदोपरान्त विवाह पाटी पढ़ना प्रारम्भ करें जो निम्न प्रकार से है-

सर्वप्रथम जम्भाष्टक, आदवंशावली, दश अवतारों की कथा, साखोचर, विष्णु का साखोचार, चौजुगी बोल कर, वर-कन्या वचन बोलकर, पीढ़ी बदलना अर्थात् कन्या को वर के वाम भाग (बांयी तरफ) में लावें। उसके बाद रामचन्द्रजी का साखोचार, मंगलाष्टक, छोटी चौजुगी आदि बोलें और याद हो तो संस्कृत के पद्म विष्णु सहस्र नाम आदि बोलें।

अब वधू की माता वर वधू दोनों की आरती करे। आरती के पश्चात् हथलेवा खोलकर वर वधू को खड़ा कर दे तथा यज्ञ कलश के सात फेरा दिलावें, जिसमें चार फेरों में वर आगे व तीन फेरों में वधू आगे। फेरों के बाद दोनों को ज्योति के पास बैठाकर पाहल दें और हाथ धुलवाकर हवन में घृत की आहुति दिलावें और दोनों वर वधू को ध्रुवतारे को दिखावें। यदि दिन में विवाह हो तो सूर्य के दर्शन करावें, क्योंकि यह क्षण सत्य की शपथ ग्रहण करने का होता है। इसमें वर वधू दोनों को प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि जब तक जीवन रहेगा तब तक ध्रुव तारे के समान हमारा दाम्पत्य जीवन भी अटल रहेगा। इसके बाद दोनों को पुन: पीढ़े (ऊंचे आसन) पर बैठाकर गठजोड़ा खोलकर वधू

को घर में भेज दें तथा वर को अपने स्थान पर ले जाएं। इस तरह विवाह का यह संस्कार करना कहते हैं। अत: ध्यान रहे दहेज लेना व देना पाप है। इसलिए बाध्य करके दहेज न लें, जिससे सबका हित होगा।

मुकलावा- विवाह की रस्मोपरान्त अपनी सुविधानुसार विवाह के दूसरे दिन अथवा बाद में (दामाद को निमंत्रण भेजकर बुलवाएं)। एक दिन घर रखें, फिर श्रेष्ठ लोगों के बीच में ऊंचे आसन पर बैठाकर यथा योग्य सम्मान करके एक अच्छा सा वस्त्र (कम्बल या पट्टू) ओढ़ाकर मांगलिक गान के साथ वधू का वर के साथ गठजोड़ा बांध करके घर से विदा करें। बाहर आने पर गांठ खोलकर उचित सवारी से वर के घर के लिए विदाई दें।

इधर इस तरह जब वर पक्ष के घर वापिस मुकलावा आ जाए तो पारिवारिक स्त्रियों को चाहिए कि शुद्ध जल का कलश भरके वधू के सिर पर ईडूणी पर रखकर तदोपरान्त गठजोड़ा बांधकर मांगलिक गीतों के साथ घर में प्रवेश करवाएं। जैसे ही वर वधू आंगन में प्रवेश करें। उसी समय शक्ति परीक्षण के प्रतीक के रूप में नारियल ढकनी के नीचे रखकर वर के द्वारा पैर की एक ही चोट से तुड़ावें। फिर वधू को धान का थाल भरकर लाकर दें। वधू को चाहिए कि वह धान की वर्षा करे यह लक्ष्मी के आगमन की प्रतीक है कि भगवान करे लक्ष्मी दिन दुगनी रात चौगुनी बढ़े। बाद में वर की मां वर वधू दोनों की आरती उतारें तथा शुभाशीर्वाद दें। मांगलिक कामना करते हुए दोनों के मुख में गुड़ दें। इस तरह से वर वधू का विवाह संस्कार पूर्ण होने पर अपना दाम्पत्य जीवन प्रेमपूर्वक बितावें।

मृत्यु संस्कार- इस संस्कार से पूर्व जितने संस्कार किए जाते हैं वे सब इस शरीर के उत्पन्न वर्धनादि के लिए होते हैं। इस संस्कार के साथ ही यह नश्वर शरीर हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है। इसलिए तो इसे अन्त्येष्टि कर्म कहते हैं। शरीर का आरम्भ गर्भाधान से व इसका अन्त श्मशान यात्रा के साथ ही होता है। जब शरीर शान्त हो जाता है तब मृत शरीर को साफ जल से स्नान करवा करके नव वस्त्र पहनावें और शवयात्रा निकालें। श्मशान भूमि तक वहां पहुंचकर शरीर की लम्बाई से कुछ अधिक भूमि खोदकर उत्तर की ओर सिर करके शव को रखें। जहां तक बने शरीर के चारों को नमक डालें ताकि शरीर गलकर मिट्टी बन जाए। विशेष इस बात का ध्यान रखें कि जितने भी लोग शवयात्रा में सम्मिलित हुए हैं उन सबको स्नान करना जरूरी है। सब के सब वस्त्र बदलकर गौमूत्र का छिंटा लें। मृतक शरीर जहां से उठाया हो वहां कच्चा हो तो गोबर से लीप दें और यदि पक्का हो तो धो दें और गौमूत्र का छिंटा लगा दें। मृतक पर रोना नहीं चाहिए क्योंकि रोने से वापिस तो नहीं आ सकता। मृतक के घर मृत्यु संस्कार होने तक विशेषकर खाना पीना निषेध है क्योंकि घर में पातक होता है और पातक में भोजन करने से बुद्धि नष्ट हो जाती है। तीसरे दिन प्रात:काल स्नान ध्यान करके अच्छे क्रियाशील 29 नियमों को मानने वाले बिश्नोई को बुलवाएं जिसके घर सूतक पातक न हो ऐसे संस्कारवान व्यक्ति को संस्कार के लिए माना जाता है। उससे हवन पाहल आदि कार्य करवाएं। उपस्थित सभी व्यक्तियों को पाहल दें, जो शवयात्रा में सम्मिलित व घर से सम्बन्धित है।

मृत्यु संस्कार तीसरे दिन ही क्यूं?

सभी हिन्दुओं में सामान्य तौर पर तीसरे दिन ही संस्कार होता है। आगे 12वें दिन तो विशेष कार्यक्रम होते हैं। (पर गुरु महाराज ने तो आदेश दिया है जो कुछ करना है यथाशीघ्र तीसरे दिन ही संस्कार करें जीव को विदाई दें।) 'सबदवाणी' में कहा भी है 'आज मूवा कल दूसर दिन है जो कुछ करे तो सारी' मृत्यु के बाद जीवन तीन तक सूक्ष्म शरीर में मृत्यु लोक में रहता है। उसके बाद जीव सद्गति को प्राप्त हो जाता है। अत: निर्विवाद सत्य है कि मृत्यु संस्कार तीसरे दिन ही होना चाहिए क्योंकि आर्थिक दृष्टि से और पारमार्थिक दृष्टि से शास्त्रों का अवलोकन करने पर गुरु महाराज का सिद्धान्त सर्वमान्य है। शास्त्रों में अन्त्येष्टि संस्कार चार प्रकार से बतलाए गए हैं- 1. जल दाग, 2. अग्नि दाग, 3. भूमि दाग, 4. पवन दाग।

वर्तमान समय में मुख्य रूप से तीन प्रकार के दाग प्रचलित हैं। पवन दाग प्राय: लुप्त हो चुका है।

1. **जलदाग**- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जल दाग उचित नहीं जान पड़ता क्योंकि जब मृत देह जल में बहाते हैं तो देह की सड़न से सारा जल प्रदूषित हो जाता है, जिससे पूर क्षेत्र में बीमारी फैलने की आशंका रहती है। जिससे पर्यावरण दूषित हो जाता है। अत: इन दोनों को दृष्टिगत रखते हुए जलदाग उचित नहीं जान पड़ता है।

2. **अग्निदाग**- अग्निदाग में भी बड़ा भारी दोष है। गुरु महाराज ने 29 नियम देकर जिस समाज का निर्माण किया,

उसमें विशेषत: पर्यावरण की रक्षा करने का आदेश दिया। 29 नियमों को विचार दृष्टि से देखने पर स्पष्ट होता है कि प्रत्येक नियम पर्यावरण से सम्बन्ध रखते हैं और पर्यावरण प्रकृति का संतुलन बनाए रखते हैं अर्थात् पर्यावरण और प्रकृति को प्रदूषित करने वाले तीन दागों की आज्ञा जाम्भोजी कैसे देंगे? फिर अग्नि तो हमारा उपास्य देव है। हम लोग अग्नि की पूजा करते हैं। अशुद्ध मृत शरीर अग्नि में कैसे जला सकते हैं? शास्त्रों में आया है कि अग्नि में अशुद्ध वस्तु मल मूत्र आदि न डालें। फिर मृतक शरीर तो सबसे अपवित्र है। उसको अग्नि में दाग देकर पर्यावरण प्रदूषित करने से बड़ी हानि होती है। अत: हमारी समाज की स्थापना करने वाले देवादिदेव भगवान श्री जाम्भोजी ने पर्यावरण की रक्षा को ध्यान में रखते हुए मृतक शरीर का भूमिदाग ही सर्वोत्तम बताया।

3. भूमिदाग- सबसे श्रेष्ठ तो भूमिदाग ही है। जो पृथ्वी में शरीर गलकर मिट्टी बन जाता है। वेदों में भी चार दागों में भूमिदाग ही श्रेष्ठ माना है। कई सामाजिक लोग शंका करते हैं कि बिश्नोई हिन्दू होते हुए भी भूमि दाग क्यों देते हैं? इसका उत्तर यह है कि चारों वर्णों में बालक और संन्यासी (साधू) भी तो हिन्दू ही हैं। तो फिर उनको क्यों नहीं जलाते हैं अर्थात् उनको भूमिदाग देते हैं। उदाहरण के तौर पर आठ वर्ष की आयु तक के बालक को भूमि दाग देते हैं, क्या वह हिन्दू नहीं है? और जितने भी महापुरुष हुए हैं। सबने भूमि में समाधि ली है। जैसे बुद्ध, महावीर, शंकाराचार्य आदि। अत: शास्त्रों में उल्लेख है कि जितने भी स्थावर जंगम संसार है वह सबके सब पार्थिव भाग के साथ विशेष सम्बन्ध रखते हैं। शरीर की उत्पत्ति में पृथ्वी उपादान कारण है और अन्य चार तत्व तो निमित्त कारण ही है। न्याय दर्शन से भी सिद्ध होता है यथा- **मानुषं शरीरं पार्थिवं कस्मात् गुणान्तरोपब्धे: गन्धवती पृथ्वी गन्धबच्छरीरम्॥**

तैतरीयोपनिषद् में लिखा है-

'पृथिव्या औषध्य: औषधिभ्योऽन्नम्' अन्नादेत: रेतत: पुरुष:॥

उपरोक्त प्रमाण से सिद्ध होता है कि मृत शरीर को भूमि दाग देना सबसे श्रेष्ठ है।

❐ आचार्य स्वामी रामानन्द
मुकाम पीठाधीश्वर
पो. मुक्तिधाम मुकाम
तह. नोखा, जिला बीकानेर (राज.)

अति आवश्यक सूचना

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, मुक्तिधाम मुकाम द्वारा बिश्नोई समाज से सम्बन्धित धरोहर/पूजा स्थल/ भूखण्ड व अन्य किसी भी प्रकार की सम्पदा के संरक्षण हेतु एक समिति का गठन किया गया है। यह समिति बिश्नोई समाज से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की सम्पदा की जानकारी व आवश्यक दस्तावेज एकत्रित कर रही है। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि एतद् विषयक किसी भी प्रकार की कोई जानकारी या दस्तावेज आपके पास उपलब्ध हो तो समिति को उपलब्ध करवाने की कृपा करे। इस निमित होने वाला पूरा व्यय अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा दिया जाएगा। आपसे पुन: अनुरोध है कि समाज हित में इसे गंभीरता से लें और कोई जानकारी होने की स्थिति में समिति के निम्नलिखित सदस्यों से सम्पर्क करें-

1. श्री जसवन्त सिंह, पूर्व सांसद, बिश्नोई धर्मशाला के सामने, गणेश चौक, रातानाड़ा, जोधपुर (राज.), मो. 9414128551
2. श्री छोगाराम खोखर, तिलवासनी, जिला जोधपुर (राज.), मो. 9414145031
3. श्री अशोक गोदारा, एचसीएस, म.नं. 900, सैक्टर 17, फरीदाबाद, मो. 9416044822
4. श्री ओम प्रकाश गोदारा, सेनि. एडीएम, 1, नागणेची, बीकानेर (राज.), मो. 9460806459
5. श्री कृष्ण देव पंवार, 39, नवदीप कालोनी, हिसार, मो. 9354320423
6. श्री रामप्रताप डेलू, सिनेमेजिक रोड, गंगाशहर, बीकानेर (राज.), मो. 9414137199

राजेन्द्र डेलू (संयोजक)
सम्पति संरक्षण समिति, मुकाम
मो.: 9417513063

"नील न लावै अंग, देखत दूर ही त्यागै"

"नील" इस शब्द को लेकर बहुत से सज्जनों के मानस में भ्रान्तियां हैं जिसका निराकरण होना आवश्यक है क्योंकि एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। सिंधु देश की खाड़ी में पैदा होने वाले घोड़े को संस्कृत में सेन्धव कहते है और वहां की खानों में निकलने वाले नमक को भी सेंधव कहते हैं। यदि आप भोजन कर रहे हैं और कहें सेंधव लाइये ? तो निश्चित रूप से आप नमक ही लायेंगे न कि घोड़े को। यदि आप युद्ध भूमि में खड़े हैं आवाज दे सेंधव लाइये ? तो निश्चित रूप से आप वहां घोड़ा ही ले जायेंगे। शब्द एक ही है लेकिन अर्थ प्रसंगानुसार ग्रहण किया गया है।

"धर्मतत्व की इसी गुह्यता को मध्य नजर रखते हुए सद्गुरुदेव भगवान श्री जाम्भो जी ने "सर्वभूतहिते रत:" की कामना से 29 नियमों की एक आचार संहिता हम लोगों को प्रदान की जिसमें एक सुन्दर एवं सुखी मानव समाज की परिकल्पना की गई है। सुखी एवं सुन्दर समाज का निर्माण तभी संभव है जब उसका आधार शास्त्रीय पद्धति हो। शास्त्रों में जीवन जीने का ढंग बतलाया गया है। युक्ति के साथ मुक्ति का मार्ग दिखलाया गया है। कणाद के शब्दों में कहूं तो "यतोऽभ्युदय: नि:श्रेयस: सिद्धि स धर्म:" धर्म सिद्धान्तों का नाम है कि जिनको धारण करने से लोक परलोक दोनों में जीवन का उत्थान हो। यह बात जम्भेश्वर वाणी कहती है "जे गुरु का सबद मानिलो" यदि गुरु के वचनों को मान लोगे तो निश्चित रूप से आपका हित होना है। आपके द्वारा किये जाने वाले सत्कर्मों का चमत्कार प्रभाव आपको अपने जीवन में देखने को मिले, आपका प्रयास निष्फल न जाये, इसी बात को मध्य नजर रखते हुए आचार संहिता के मध्य एक नियम हमारे परिधान से संबंधित दिया "नील न लावै अंग, देखत दूर ही त्यागै" अर्थात् नीले रंग का वस्त्र धारण नहीं करना चाहिए। हमारे देश की सदा से एक विशिष्ट विशेषता रही है कि "कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बदले वाणी" यही कारण रहा समाज ने इस नीले रंग के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग किया है - जैसे नीला, सोना, गुली, आसमानी, बेंगनी, कुछ क्षेत्रों में हरे के अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है। गुरु महाराज ने "नील न लावे अंग" कह दिया वस्त्र शब्द का प्रयोग नहीं किया परिणाम स्वरूप लोगों ने इसे तोड़-मरोड़ कर अपने स्वार्थ के अनुसार प्रयोग करना प्रारम्भ किया। लेकिन अन्य सद्ग्रन्थों में "नीले वस्त्र" शब्द का प्रयोग मिलता है।

मैं इस लेख में उन समस्त शास्त्रीय प्रमाणों को दर्शाने की चेष्टा कर रहा हूँ जिन प्रमाणों के साथ सरकार को पाठशालाओं में चल रही छात्र-छात्राओं की नीले वस्त्र की युनिफोर्म बंद करवाने के लिए प्रस्तुत किये है। मुझे आशा है सरकार कार्यवाही करेगी, ऐसा आश्वासन दिया गया है।

नीले रंग का प्रभाव इतना सूक्ष्माति सूक्ष्म होता है जिसे आम साधारण जन समझ नहीं पाते। शुद्धता एवं पवित्रता का प्रभाव आमतौर पर देखने को आप बैठने से पूर्व उस स्थान की ओर ध्यान अवश्य देंगे जहां आप बैठते जा रहे हैं। वह साफ-सुथरा है या नहीं कहीं मेरे कपड़े मैले न हो जाए। यदि आपने मेले वस्त्र रखे हैं तो आपको महसूस तक नहीं होगा और आप बिना सोचे बैठ जाएंगे।

यदि आप वैज्ञानिक या धार्मिक दृष्टि से जानना चाहेंगे तो ऐसे अनेकों उदाहरण मिलेंगे जिसमें नीले रंग के वस्त्र धारण करने के योग्य नहीं कहे गए।

स्कन्द पुराणानुसार नील रंगा हुआ वस्त्र जो पहनता है, उसके द्वारा किए गए स्नान, दान, तप, स्वाध्याय, हवन पितृतर्पणादि पंचमहायज्ञ व्यर्थ हो जाते हैं।

स्नानं दानं तपो होउम् स्वाध्याय:पितृतपेणम्।
वृथा तस्य महायज्ञा नीलीवासो बिभर्ति य:॥

(स्कन्द पुराण काशी पृ. 40/144)

आंगिरस स्मृति में कहा गया है कि जो नीले रंग के वस्त्र पहनता है उसके द्वारा किये जाने वाले पंच यज्ञ व्यर्थ हो जाते हैं:-

स्नानं दानं तपो होम: स्वाध्याय: पितृतर्पणम्।
वृथा तस्य महायज्ञ नीलीवस्त्रस्य धारणात्॥

(आंगिरसस्मृति 14)

ठीक ऐसा ही उल्लेख आपस्तम्बस्मृति में किया गया **"स्नानं दानं.....नीलीवस्त्रस्य धारणात्"** (आ.सस्मृति-613) अर्थात् नीले वस्त्र धारण करने वालों के द्वारा किये जाने वाले पंचयज्ञरूप सत्कर्म निष्फल हो जाते हैं। अत: आचारवान व्यक्ति को अनुपयुक्त वस्त्र धारण नहीं करने चाहिए क्योंकि नील में

रंगा वस्त्र धारण तो दूर की बात उसे दूर से ही त्याग देना चाहिए:-

न चापी नीलीवासाः स्यात् (स्कन्द पुराण मा० फौ० 41/163)

"लघुहारित स्मृत्यानुसार-नीले रंग का वस्त्र धारण करने योग्य उत्तम नहीं कहा गया:- **"न रक्त रक्तमुल्वणं वासो न नील प्रशस्यते"** (4/34) ठीक ऐसा ही उल्लेख 'नरसिंह पुराण' में करते हुए कहा गया है कि

"न रक्तमुल्वणं वासो न नीलं तत्प्रशस्यते" (न.पृ. 58/72)

एक आचारवान पुरुष को किस प्रकार के वस्त्र धारण करने चाहिए इस ओर मार्कण्डेय पुराण ब्रह्म पुराण आदि पुराणों में स्पष्टतया उल्लेख किया गया कि अधिक रंग-बिरंगे व नीले वस्त्र धारण करने के योग्य नहीं है। यथा -

"न चापि रक्तवासाः स्याच्चित्रासित धरोऽपि वा"

(मार्कण्डेय पुराण-34/54)

"न रक्तं मलिनं तथा"

(विष्णु धर्मोत्तर पृ.-2/83/4)

एवं बाल पुराण 22/53

वराहपुराणानुसार नीला वस्त्र पहन कर भगवान विष्णु की उपासना करने वाला दोषी माना जाता है और उसका पतन होता है:-

रक्त-वस्त्रेण संयुक्तो यो हि मामुपसर्पति।
तस्यापि श्रृणु सुश्रोणी कर्म संसार मोक्षणम्॥
यः पुनः कृष्णवस्त्रेण मम कर्म परायणः।
देवी कर्मणि कुर्वीत तस्य वै पातनं श्रृणु॥
वाससा चाप्यधौतेन यो मे कर्माणि कारयेत्।
शुचिर्भागवतो भूत्वा मम मार्गनुसारकः॥
तस्य दोषं प्रवक्ष्यामि अपराधं वसुन्धरे।
पतन्ति येन संसारं बाससोच्छिष्टकारिणः॥

(वराह पुराण-135/1,15,16,23-24)

विष्णु उपासक के लिए वराह पुराण में सुस्पष्टतया किया गया नील विषयक उल्लेख गुरु महाराज की आचार संहिता का नियम "नील न लावै अंग" के लिए पर्याप्त समझ लेना चाहिए क्योंकि बिश्नोई विष्णु उपासक हैं। इस सिद्धान्त की परिपुष्टि में नीले रंग के वस्त्रों की स्कन्द पुराण में अति कठोर शब्दों में भर्त्सना करते हुए कहा गया है कि नीले रंग के वस्त्र पहन कर जो रसोई बनायी जाती है उस अन्न को जो खाता है, वह मानो विष्ठा खाता है और वह अन्न देने वाला यजमान नरक में जाता है:-

नीलीरक्तेन वस्त्रेण यदन्नमुपकल्पयेत्।
भोक्ता विष्ठा समं भुङ्क्ते दाता च नरक व्रजेत॥

(स्कन्द पुराण काशी. पृ. 40/147)

"आंगिरसस्मृति" एवं "आपस्तम्बरमृत्यानुसार" जिस भूमि पर एक बार नील की खेती कर दी जाये वह भूमि बारह वर्षों तक अशुद्ध रहती है उसके बाद शुद्ध होती है:-

वापिता यत्र नीली स्यात्तावद् भूम्यशुचिर्भवेत्।
यावद् द्वादश वर्षाणि अत उर्ध्व शुचिर्भवेत्॥

(आंगिरसस्मृति-24)

वापिता यत्र नीली.....शुचिर्भवेत्॥

(आपस्तम्बस्मृति-6/10)

"नेहरु जी" द्वारा लिखित "Discovery of India" नामक पुस्तक के अनुसार अंग्रेजों के शासनकाल में अंग्रेज लोग भारतीय किसानों से जबरदस्ती नील की खेती करवाते थे। भारतीय किसान उसका विरोध करते थे, प्रतिरोध स्वरूप जो आंदोलन हुआ उसका नेतृत्व स्वयं महात्मा गांधी ने किया था क्योंकि जिस खेत में एक बार नील की खेती कर दी जाती थी उस खेत में दुबारा घास का तिनका भी नहीं उगता था क्योंकि नील के जो कीटाणु होते हैं वे पृथ्वी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने वाले कीटाणुओं को नष्ट कर देते हैं परिणाम स्वरूप भूमि बंजर हो जाती है। यहां पर यह उल्लेखनीय है कि नीले रंग के बारे में चाहे धार्मिक दृष्टि से विचार करें, चाहे वैज्ञानिक दृष्टि दोनों दृष्टियों से नीला रंग अग्राह्य कहा गया है।

"दैनिक भास्कर जोधपुर गुरुवार दिनांक 1.3.07 के अनुसार जसोल में प्रति वर्ष होली के पर्व पर धुलहड़ी के बाद (राव) की सवारी निकाली जाती है। कस्बेवासियों का मानना है कि होली के पर्व पर धुलण्डी के बाद राव की यात्रा निकालने से वर्षभर आने वाले कष्टों से मुक्ति मिलती है। राव को परेशानी का रूप मानकर कस्बेवासी उसको कस्बे से बाहर निकाल कर उस पर सात छोटे कंकर मारते हैं। 'राव' की सवारी के लिए राव बने युवक का मुंह काला किया जाता है, पैर

'नीले' कर जूतों की माला पहना, अर्धनंगा कर उसे गधे पर सवार कर बाजार में भ्रमण के बाद कस्बे से बाहर कर दिया जाता है। सदियों से जारी है यह परम्परा, जिसमें नीले पैर करना राव के कष्टों को प्रतीक कहा गया है।

नील रक्तेन वस्त्रेण यदन्नमुपदीयते।
अभोज्यं तद् विजातीनां भुक्त्वा चन्द्रायणं चरेत्॥

स्वाध्यायी शिवस्तोत्र माला में नीले वस्त्रों का निषेध करते हुए उल्लेख किया गया कि नीले वस्त्र के धारण करने से जो दोष लगता है वह चान्द्रायण व्रत करने से ही मिट सकता है। अत: धर्म-नाशक होने के कारण नीले वस्त्र धारण नहीं करना चाहिए।

"क्लृप्रकेशनखश्मुश्रुर्दान्त शुक्लाम्बरः शुचिः स्वाधाये चैव युक्तः स्या नित्यामात्म हितेषुच"

भृगुसंहिता अ 4 श्लोक 35

यानी गृहस्थ लोगों को शिखा (चोटी) को छोड़कर सिर के बाल, दाढ़ी, मूंछ एवं नख (नाखून) आदि को समय-समय पर मुंडन करवाते रहे तथा श्वेत वस्त्र पहरा करें तथा इस प्रकार बाहर भीतर से पवित्र होकर नित्य ब्रह्म विद्या का अभ्यास करते हुए इन्द्रियों को दुष्ट मार्ग से हटाने का प्रयत्न करें। यही परम कल्याणकारी है।

उपर्युक्त शास्त्रीय प्रमाण यह दर्शाते हैं कि भगवान श्री जाम्भो जी ने जो आचार संहिता प्रदान की है उसमें समस्त सद् ग्रन्थों का दोहन कर समभूततत्व को स्थान दिया गया है। अत: गुण ग्राही साधक को चाहिए उन आप्त वचनों में निष्ठा रखते हुए उन्हीं को आधार बनाकर जीवन यात्रा करते हुए युक्ति के साथ मुक्ति को पाएं।

❒ **आचार्य संत डॉ. गोवर्धन राम**
शिक्षा-शास्त्री, आचार्य पीठ,
मुक्तिधाम मुकाम, बीकानेर (राज.)

भजन

सद्गुरु आया

जम्भगुरु आया जाग्या भाग
मन मेरा हो गया बागो बाग ॥टेर॥
आया सूरज गया अन्धेरा
आंगन में आया नया सवेरा
आया ज्यूं होली का फाग ॥1॥ मन मेरा.....
कर कमलों की हो गयी छाया
रोम-रोम सबका हर्षाया
धोय दिया लाग्योड़ा दाग ॥2॥ मन मेरा.....
सगुण रूप में आप है आया
निर्गुण घर का भेद बताया
सांसो की सरगम बण गई राग ॥3॥ मन मेरा.....
जो कोई आवे गुरु शरण में
संकट कट जावै एक ही क्षण में
सोया जगावे सबका भाग ॥4॥ मन मेरा.....
गुरु माहिर ने माहिर बनाया
काम क्रोध को मार भगाया
बोले 'रंगलाल' भजन में लाग ॥5॥ मन मेरा.....
मन मेरा हो आया बागो बाग, मन मेरा हो आया बागो बाग,
जम्भगुरु आया जाग्या भाग, मन मेरा हो आया बागो बाग।

जम्भेश्वर अवतार लिया

गुरु जम्भेश्वर अवतार लिया
गुरु बारां कोटि तार दिया ॥टेर॥
पीपासर आनन्द कन्द आया
हंसा लोहट परमानन्द पाया
भक्तों का उद्धार किया ॥1॥ गुरु जम्भेश्वर.....
समराथल पर चमकी बिजली
काली रातें हो गई उजली
वहां देवों ने दीदार किया ॥2॥ गुरु जम्भेश्वर.....
महक उठी मेरे मन की बगिया
बन्द हो गई इस तन की ठगियां
तन-मन ठण्डा ठार किया ॥3॥ गुरु जम्भेश्वर.....
खिल गये फूल अन्तर्मन के
भाग जगाये भक्त जनन के
प्रह्लाद पन्थ प्रचार किया ॥4॥ गुरु जम्भेश्वर.....
गुरु माहिर 'रंगलाल' है चेला
शब्द-सुरत का हो गया मेला
सेवक संकट टार दिया ॥5॥ गुरु जम्भेश्वर.....

❒ **रंगलाल बिश्नोई**
वार्ड 23, रावतसर, जिला हनुमानगढ़
मो.: 998241080

महाउद्धारक गुरु जाम्भोजी

बिश्नोई पंथ को प्रह्लाद पंथ भी कहा जाता है। इस पंथ के मूल स्रोत भक्त शिरोमणि प्रह्लाद हैं। जब नृसिंहावतार हुआ था, तब भगवान विष्णु ने प्रह्लाद को यह वचन दिया था कि मैं युग-युग में अपने भक्तों का उद्धार करूंगा। 'श्रीमद्भगवद्गीता' में तो भगवान ने स्पष्ट रूप से अर्जुन को अपने अवतार का उद्देश्य इन श्लोकों में किया है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

भक्त प्रह्लाद के गुरु देवर्षि नारद थे। उन्होंने नवधा भक्ति का उद्देश्य भक्त प्रह्लाद की माता कयाधू को सुनाया था। जब वह इन्द्र द्वारा छुड़ाई गई थी और उनके आश्रम में रहती थी, उस समय भक्त प्रह्लाद गर्भस्थ शिशु थे। भगवान विष्णु की भक्ति के संस्कार उनके मन में प्रवेश कर गए थे। अपने पिता दैत्यराज हिरण्यकश्यपु द्वारा कठोर यातना देने पर भी वे अपने भक्ति मार्ग पर अटल रहे। जब नरसिंहावतार के रूप में खम्भ फाड़ कर निकले और भक्त प्रह्लाद को अपनी गोद में लिया। उस समय उद्धार करने के लिए भक्त प्रह्लाद को वचन दिया था। ऐसा उल्लेख गुरु जाम्भो जी की सबदवाणी में है।

सर्वप्रथम सतयुग में भक्त प्रह्लाद ने भवसागर में डूबते हुए करोड़ों का उद्धार किया। उसी परम्परा में त्रेता युग में महाराजा सत्यवादी हरिश्चन्द्र ने असंख्य भक्तों का उद्धार किया। द्वापर युग में धर्मराज युधिष्ठिर ने भवसागर भटकते हुए लोगों का उद्धार किया। कलियुग में बागड़ प्रदेश में अवतार लेकर श्री जाम्भो जी महाराज ने अपने भक्तों का उद्धार किया।

गुरु जाम्भो जी का उद्धार का कार्यक्रम बहुआयामी था। सबसे पहले उन्होंने वृक्षारोपण को जनकल्याण के उद्धार का मार्ग बनाया। 29 धर्म नियमों का उपदेश देकर अनेक प्रकार से समाज का कल्याण किया। बिश्नोई पंथ की स्थापना उनके उद्धार का मुख्य उद्देश्य था। उन्होंने अज्ञान-अंधकार में भटकती हुई जनता को ज्ञान की ज्योति जलाकर उनका कल्याण किया। समाज में फैले हुए अंधविश्वासों और कुरीतियों से समाज को छुटकारा दिलाया। गौ पालन करके यह सनातन संदेश दिया कि गऊ माता की सेवा के द्वारा ही जनता का लोक-परलोक सुधर सकता है। उस समय के अनेक अहंकारी राजा व नवाबों का दर्पदलन भी उन्होंने किया। हिंसा के मार्ग से छुड़ाकर अहिंसा के पथ पर आरुढ़ किया। गुरु जी ने यज्ञ-अनुष्ठान का मार्ग दिखाकर जनता को विष्णु भक्ति की ओर प्रेरित किया। कहा भी गया है- यज्ञो वै विष्णु अर्थात् यज्ञ ही भगवान का स्वरूप है। समाज को पर्यावरण प्रदूषण से दूर रखने के लिए उन्होंने यज्ञ की महिमा का गान किया क्योंकि यज्ञ द्वारा आन्तरिक व बाह्य दोनों प्रकार की शुद्धियां होती हैं। उस समय अनेक साधु संत विशेषकर नाथ पंथी चमत्कारों का प्रदर्शन करके जनता को मुग्ध करते थे। गुरु जाम्भो जी ने उनका अहंकार भी दूर किया। लोहा पांगल का लोहकच्छ दूर करके उसके कष्ट को मिटाकर उसे बिश्नोई पंथ में सम्मिलित किया। उस युग की भूली- भटकी जनता को गुरु जाम्भोजी ने भूत-प्रेतों की पूजा से दूर किया और अंधविश्वासों के मक्कड़जाल में फंसी हुई जनता का उद्धार किया।

गुरु जाम्भो जी की मान्यता थी कि यदि पृथ्वी के जीवन की रक्षा करनी है तो प्रकृति का संरक्षण करो। जीव दया पालन का संदेश देकर उन्होंने जनता को जागृत किया। गुरु जी ने नशाखोरों को समाज के विनाश का मूल कारण माना और मांसाहार का निषेध करके शाकाहार के महत्त्व को बतलाकर जनता का उद्धार किया। उन्होंने नारी जाति में फैली हुई कुरीतियों को दूर करने का भी संदेश दिया। जो राजा युद्धोन्मत्त थे, उनको शांति के मार्ग की ओर अग्रसर किया।

गुरु जाम्भोजी का अधिकतर समय साधना स्थल समराथल में ही व्यतीत हुआ परन्तु उनके उपदेशों की महिमा चारों ओर फेलती रहीं। अनेक रोगियों के रोग दूर करके उनका उद्धार किया। उन्होंने जनता को अकाल निवारण का मार्ग भी बताया। गुरुजी ने भूखे व पीड़ितों की भूख दूर की और भूले भटकों को सन्मार्ग दिखाया। उन्होंने जनता को निष्काम कर्म का उपदेश देकर व यात्राएं करके जनता जनार्दन का उद्धार किया।

आज का युग बड़ा कृत्रिम है और भौतिकवाद की चकाचौंध से दिग्भ्रमित हो रहा है। गुरु जाम्भोजी का जीवन-दर्शन और धर्म-नियम आज के विश्व में सर्वाधिक प्रासंगिक हैं। गुरु जी का सनातन संदेश और व्यक्तित्व आज मानव जाति के लिए महाउद्धारक के रूप में प्रकाश-स्तम्भ है।

❐ **डॉ. बाबूराम** (डी.लिट्.) प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिन्दी-विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र
मो. 093158-44906
Email:drbabuji1958@gmail.com

चमत्कारी अवतार गुरु जाम्भो जी

यह ब्रह्माण्ड भगवान का एक विचित्र चमत्कार है। इसमें अनेक ऐसे रहस्य हैं, जो अल्पज्ञ मानव जाति के लिए पूर्णत: अपरिचित हैं। आज के विज्ञान के अविष्कार भी मानव बुद्धि के चिंतन के चमत्कार हैं। युग-युगान्तर से सुना जाता है और ग्रन्थों में पढ़ा भी जाता है कि साधक महात्मा लोगों में अन्य मनुष्यों की तरह अनेक विलक्षण शक्तियां होती हैं जिन्हें लोग साधाराणतया चमत्कार कहते हैं। योग शास्त्र में लिखा है कि योग साधना से योगियों को अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जिन्हें लोग ऋद्धि और सिद्धि कहते हैं।

संसार में अनेक चमत्कारी-अवतारी महात्मा, ऋषि-मुनि और साधु-संत हुए हैं, जिनके चमत्कारों की कहानियां जन साधारण में प्रचलित हैं। उसी परम्परा में श्री जाम्भो जी का अवतार हुआ था। उनका समस्त जीवन चमत्कार पूर्ण घटनाओं से ओतप्रोत रहा है। वे लगभग 7 वर्ष तक मौन रहे और खेमनराय के पाण्डित्य प्रदर्शन को देखकर अकस्मात बोल उठे, जिसे अचम्भा या चमत्कार ही कहा जा सकता है। जब वे गौचारण लीला में व्यस्त थे, तब हिंसक वन्य जन्तु भी उनकी आवाज सुनकर दूर चले जाते थे और गाएं उनके संकेत पर क्रमश: पंक्तिबद्ध होकर जल पीती थी। जनसाधारण के लिए उनका यह चमत्कार एक आश्चर्य का विषय था। उनके दैदीप्यमान मुखमंडल पर आभामंडल प्रकाशित रहता था। उनके नेत्रों से करुणा की वर्षा होती थी, जिससे अनेक पीड़ित नर-नारियों की पीड़ाएं दूर हो जाती थी। उनके दर्शन का यह प्रभाव था कि उनको देखकर अनेक निराश व्यक्तियों में आशा का संचार होता था। रोग पीड़ितों के रोग दूर हो जाते थे और सारा वायुमण्डल सुख-शांति से भर जाता था।

गुरु जाम्भोजी का अधिक समय समराथल पर व्यतीत हुआ, जो उनकी तपोस्थली रही। वे ककहेड़ी वृक्ष के नीचे विराजमान रहते थे। चाहे मूसलाधार वर्षा हो, भयंकर शीत की लहर हो, कष्टदायक भीषण गर्मी की लू की लपटें हो। वे शांत और निश्चल भाव से अपनी साधना में अटल रहते थे, जो एक चमत्कार था। इसे साधारण मानव के लिए सहन करना असम्भव था। उनकी प्रेरणा के फलस्वरूप अनेक व्यक्तियों का जीवन नारकीय कष्ट से निकल स्वर्गोपम सुख में बदल गया। उनके आशीर्वाद से दूदा जी को मेड़ता का राज्य प्राप्त हुआ था और जोधपुर का भांजा अजमेर की जेल से छुड़वाया था, जिसके कारण जोधपुर के नरेश और अजमेर के नवाब के नरसंहार से दोनों को बचाया था। मोती मेघवाल गुरु जी का बड़ा भक्त था, जो वीदो राठौर की जेल में बंद था। वे अपने भक्त के करुण क्रन्दन को सुनकर आए और वीदो राठौर के अहंकार को चकनाचूर कर दिया तथा अपने भक्त की रक्षा की। उन्होंने दिल्ली के सिकंदर लोधी के अहंकार के स्तूप को ध्वस्त करके उन्हें अपना शिष्य बनाया था। जो भी जिज्ञासु ज्ञान प्राप्त करने के लिए उनके पास आता था, उसको वे अपने ज्ञान द्वारा शांति प्रदान करते थे।

गुरु जाम्भोजी का समस्त जीवन परोपकार में ही बीता था। उन्होंने समाज में फैले हुए अज्ञान-अंधकार को दूर किया। उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों और अंधविश्वासों को समाप्त किया। उन्होंने सैंसा भक्त के पाखण्ड को दूर किया था। उमा नौरंगी के भात को भरना भी उनका एक चमत्कार था। उन्होंने अनेक नाथ पंथियों के पाखण्ड पूर्ण कार्यों को दूर किया था। वे सच्चे अर्थों में निष्काम कर्मयोग की साकार प्रतिमूर्ति थे। जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिव्य चक्षु प्रदान करके अपना विराट रूप दिखाया था, उसी प्रकार चमत्कारी जाम्भो जी ने अपने भक्तों को ज्ञान रूपी चक्षु प्रदान करके अनेक दिव्य दृश्य दिखाए थे। अपने चाचा पुल्होजी को स्वर्ग के दर्शन भी कराए थे। उनके अवतारी जीवन की अनेक चमत्कारपूर्ण घटनाएं हैं, जिनका वर्णन करना इस छोटे से आलेख में सम्भव नहीं है। बिश्नोई पंथ की स्थापना भी उनकी एक चमत्कारपूर्ण घटना थी। बिश्नोई पंथ पर्यावरण के संरक्षण के लिए आज के इस भयंकर युग में जूझ रहा है और अनेक बलिदान देकर मानव जाति के हित में कार्यरत है।

❒ **डॉ. ब्रह्मानन्द**
योगेश्वर श्रीकृष्ण भवन,
शांति नगर, कुरुक्षेत्र

अनूठा है बिश्नोई समाज : मारिया शोवो

गुरु जंभेश्वर जी महाराज द्वारा प्रवर्तित बिश्नोई समाज जो अपने कल्याणकारी कार्यों जिनमें मुख्य रूप से वृक्ष एवं वन्य जीवों के प्रति मानवीय संवेदनाएं रखना शामिल है, के कारण आज देश में ही नहीं बल्कि विश्व में एक अनूठी पहचान रखता है। यही कारण है कि फ्रांस के पेरिस विश्वविद्यालय से एक शोधार्थी मारिया शोवो हिंदुस्तान में बिश्नोई समाज व उनके वन्य जीवों के साथ संबंधों पर शोध करने के लिए आई। उसने यहां पर न केवल बिश्नोई समाज को नजदीकी से देखा बल्कि उनके साथ रहकर समाज की संस्कृति, सोच, विचारधारा व दर्शन के बारे में गहराई से अध्ययन किया। अध्ययन के दौरान ही मारिया जब हिसार आई तो बिश्नोई मंदिर में ठहरी। उनके इस ठहराव के दौरान गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शोधार्थी मनबीर गोदारा ने समाज के प्रति उनके दृष्टिकोण तथा शोध के उद्देश्यों के बारे में एक साक्षात्कार किया जो यहां प्रस्तुत है- संपादक।

◆ **आपको गुरु जंभेश्वर जी महाराज व बिश्नोई समाज के बारे में जानकारी कहां से मिली?**

मुझे आरंभ में गुरु जंभेश्वर जी के बारे में नहीं कोई जानकारी नहीं थी। महज बिश्नोई समाज के बारे में टेलिविजन से जानकारी मिली थी। टेलिविजन पर बिश्नोई समाज तथा वन्य जीव संबंधों पर एक डाक्यूमेंट्री देखी थी जिसको देखने के बाद मैंने इस विषय पर काम करने की योजना बनाई। यह डाक्यूमेंट्री वर्ष 2010 में फ्रांस में एक फ्रेंच भाषा के चैनल पर देखी थी जिसका शीर्षक था- हिरण के बच्चे को दूध पिलाती एक बिश्नोई महिला। इस डाक्यूंट्री ने मुझे अंदर तक छू लिया तथा उसी समय मैंने ऐसे लोगों से मिलने तथा उन पर काम करने का निश्चय किया।

◆ **'बिश्नोई समाज के वन्य जीवों के साथ संबंध' विषय को ही आपने शोध के लिए क्यों चुना?**

बिश्नोई समाज व वन्य जीवों के संबंध विषय पर जहां तक शोध करने की बात है तो मैं इंसानों व वन्य जीवों के संबंधों पर काम करने की इच्छुक थी। बिश्नोई समाज को शोध के लिए मैंने क्यों चुना इसके बारे में कहना चाहूंगी कि एक तो मैं भारत से ही प्यार करती हूं। दूसरा मैं यहां पर अपने अभिभावकों के साथ पहले भी आ चुकी हूं तथा इस

दौरान यहां के लोगों, रीति रिवाजों, संस्कारों, संस्कृति व जीवन शैली आदि ने काफी प्रभावित किया था। इसलिए जब मैंने फ्रेंच टीवी पर बिश्नोई समाज व वन्य जीवों के संबंधों पर आधारित डाक्यूमेंट्री देखी तो फैसला कर लिया कि मैं इसी विषय पर अपना शोध करूंगी। हालांकि अमेजन, दक्षिणी अफ्रीका आदि देशों में इंसानों व वन्य जीवों के बीच घनिष्ठता देखने को मिलती है लेकिन जैसा संबंध बिश्नोई समाज व वन्य जीवों के बीच है वैसा दुनिया भर में कहीं नजर नहीं आता। इसलिए मुझे इस विषय पर काम करने पर ज्यादा विचार नहीं करना पड़ा।

◆ **शोध के लिए किस तरह की परेशानियां पेश आ रही हैं?**

शोध के लिए कई तरह की मुश्किलें सामने आ रही हैं। सबसे बड़ी समस्या भाषा की है। एक ओर तो लोगों की भाषा समझने में वक्त लग रहा है वहीं दूसरी ओर साहित्य भी अंग्रेजी में उपलब्ध नहीं है। अब तक मुझे अंग्रेजी की कुछ गिनी-चुनी पुस्तकों के अलावा कुछ लेख ही मिल पाए हैं जिन्हें पढ़कर मैं कुछ समझ सकी हूं। अधिकांश साहित्य हिंदी व राजस्थानी भाषा में लिखा हुआ है जिसे समझने में समय लगेगा। मैं पिछले काफी समय से सबदवाणी की अंग्रेजी में अनुवादित पुस्तक या साहित्य ढूंढने का प्रयास कर रही हूं लेकिन मुझे अंग्रेजी में अनुवाद वाले सबद नहीं मिले। सबद व उनका अनुवाद केवल हिंदी भाषा में ही है।

संबंधित आंकड़े व साहित्य एकत्रीकरण में मुझे सबसे ज्यादा समस्या भाषा के कारण ही आ रही है क्योंकि न तो मैं हिंदी बोल सकती हूं और न ही लिख सकती हूं। इसलिए मेरी यह सबसे बड़ी परेशानी है। हालांकि इसके सीखने व जानने में अभी वक्त लगेगा लेकिन धीरे-धीरे मैं इसको सीखने की कोशिश कर रही हूं।

◆ **गुरु जी की शिक्षाओं व दर्शन के बारे में आपका क्या कहना है?**

मैं महसूस करती हूं कि गुरु जी की शिक्षाएं, दर्शन एवं विचारधारा अति उत्तम तथा बहुत ही अद्भुत हैं। इसके बारे में और कुछ ज्यादा बोलने से पहले मैं आंकड़े तथा जानकारी इकट्ठी करना चाहती हूं। जहां तक मेरी एम.ए. डिजरटेशन यानि शोध प्रबंध की बात है उसमें महज बिश्नोई समाज एवं वन्य जीव पर एक प्रस्तुतिकरण ही है। उसमें समाज के बारे में गहराई से नहीं लिखा गया है। इसमें सिर्फ समाज के विभिन्न धार्मिक स्थानों, रीति रिवाजों, व्यवसाय, भोजन, मेलों व अन्य सामाजिक गतिविधियों के बारे में ही विवरण दिया गया है। मैंने अपनी पी.एच.डी. के लिए हाल ही में पंजीकरण करवाया है इसलिए इसके परिणामों तथा आंकड़ों के बारे में कुछ भी कहना जल्दबाजी होगा। हालांकि यह बात सही है कि आधुनिकता एवं भौतिकवाद ने न केवल बिश्नोई समाज को ही प्रभावित किया है बल्कि समाज का हर तबका इससे प्रभावित हुआ है।

वन्य जीवों की रक्षा के अलावा गुरु जी की शिक्षाओं में सबसे ज्यादा मुझे जो प्रभावकारी लगी उनमें सच बोलना, सफेद वस्त्र धारण करना, जिंदगी में अच्छे कर्म करना आदि अनेक शिक्षाएं शामिल हैं। सभी नियमों व सबदों को अभी न समझ पाने के कारण मैं उनकी शिक्षाओं के बारे में इतना ही बता सकती हूं।

◆ **गुरु जी के पर्यावरण संरक्षण के संदेशों पर आपका क्या कहना है?**

जहां तक गुरु जी के पर्यावरण संरक्षण के संदेशों की बात है इसमें कोई संदेह नहीं कि उनकी शिक्षाओं पर चलते हुए ही बिश्नोई वन्य जीवों से बेहद आत्मीयता रखते हैं तथा वृक्षों की रक्षा में तत्पर रहते हैं। वे न केवल ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाने में विश्वास ही करते हैं बल्कि अपने बच्चों की तरह उनकी रक्षा भी करते हैं। यह सत्य है कि पर्यावरण को बचाने एवं उसे सुधारने में अनेक तरह की कठिनाइयां हैं लेकिन बिश्नोई समाज इसके लिए प्रेरणा बन सकता है। बिश्नोई समाज को चाहिए वह लोगों में पर्यावरण के प्रति संवेदना पैदा कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में और काम करे।

◆ **आपकी दृष्टि में गुरु जंभेश्वर जी महाराज का व्यक्तित्त्व क्या है?**

गुरु जी के व्यक्तित्त्व के बारे में मेरे द्वारा अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगा। लेकिन जैसा कि कई लोग मानते हैं कि गुरु जी बहुत बड़े दूरदर्शी व समाज सुधारक थे तो मैं भी इस बात से सहमत हूं कि वे दूरदर्शी थे। उन्होंने अपनी दूरदर्शिता के बल पर ही अनेक सामाजिक समस्याओं को सुलझाया तथा लोगों को जीवन जीने का सरल रास्ता दिखाया।

मेरा मानना है कि बिश्नोई समाज को न केवल वन्य जीवों के प्रति दया व वृक्षों की रक्षा में समर्पित रहना चाहिए बल्कि अन्य नियमों को भी उतनी श्रद्धा व भावना के साथ अपने जीवन में अपनाना चाहिए। सभी नियम तार्किक, वैज्ञानिक एवं सामाजिक दृष्टि से सही है तथा हमें सभी का पालन करना चाहिए।

◆ **गुरु जी की शिक्षाओं के प्रचार प्रसार के लिए सबसे सशक्त माध्यम कौन सा है?**

गुरुजी की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिए जहां तक संचार माध्यमों के प्रयोग की बात है मेरा व्यक्तिगत मानना है कि टेलिविजन तथा इंटरनेट के द्वारा संचार या प्रचार ठीक नहीं है क्योंकि मैं इन दोनों को ज्यादा विश्वसनीय नहीं मानती। मेरे अनुसार पुस्तक व लेखों के माध्यम से ही उनकी शिक्षाओं का प्रचार एक सही कदम साबित होगा। टेलिविजन तथा इंटरनेट पर बिश्नोई समाज व गुरुजी की शिक्षाओं पर जो डाक्यूमेंट्री दिखाई या प्रदर्शित की जाती है उनमें समाज के बारे में सरसरी जानकारी ही होती है। डाक्यमेंट्री में पुस्तकों की तरह गहन एवं विस्तृत जानकारी का अभाव होता है। इसलिए बिश्नोई समाज व गुरुजी के दर्शन व विचारधारा को समझने के लिए अच्छी पुस्तक व अच्छे शोध लेख टेलिविजन व इंटरनेट की बजाय बेहतर एवं सशक्त माध्यम साबित हो सकते हैं।

◆ **अब तक आपने शोध के दौरान बिश्नोई समाज व वन्य जीवों के बीच संबंधों को कैसा पाया है?**

मैंने अपनी रिसर्च के दौरान कई स्थानों पर बिश्नोइयों व वन्य जीवों के रिश्ते को काफी संजीदा पाया है। मैंने बिश्नोइयों को पशु-पक्षियों को अपने बच्चों की तरह खिलाते-पिलाते देखा है जो यह जाहिर करता है कि वे वन्य जीवों से कितना स्नेह रखते हैं। यही नहीं बिश्नोई समाज को भी मैंने काफी नजदीकी से अवलोकन किया है तथा पाया कि समाज को अभी आगे बढ़ने के लिए काफी कुछ करने की जरूरत है। लेकिन जहां तक मैंने देखा है कि उनको वन्य जीवों से बेहद प्यार है। हालांकि ऐसी काफी कुछ बातें हैं जो हिंदू समाज में भी प्रचलित है जैसे गाय को

भोजन खिलाना, आवारा जानवरों को खाना देना तथा उनकी सेवा करना आदि शामिल है। यह अपने आप में काफी अच्छा है कि बिश्नोई पशु-पक्षियों को अपने परिवार के सदस्य के रूप में स्थान देते हैं तथा एक सदस्य की तरह उन्हें प्यार व उनकी देखभाल करते हैं। जिन-जिन गांवों में बिश्नोई समाज के लोग रहते हैं वहां पालतू एवं वन्य जीव बहुतायत में देखे जा सकते हैं। इसके अलावा इनमें रहने वाले वन्य जीवों व इंसानों के संबंध निश्चित रूप से आकर्षित करने वाले हैं और ऐसा संबंध शायद ही कहीं और देखने को मिले।

◆ **गुरु जी के साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने के लिए क्या किए जाने की जरूरत है?**

गुरु जी के साहित्य को देश विदेश तक ले जाने के लिए इसको विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किए जाने की जरूरत है। विशेषकर अंग्रेजी भाषा में, क्योंकि अंग्रेजी आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर की भाषा बन चुकी है। इसलिए जाहिर है इसमें साहित्य के अनुवाद होने के बाद प्रचार प्रसार में काफी सहायता मिल सकेगी तथा दुनिया के लोग गुरु जी की वाणी, विचारधारा व दर्शन से परिचित हो सकेंगे।

◆ **इंटरनेट के अलावा फ्रांस में आपको गुरु जी से जुड़ा कितना साहित्य व शोधपरक सामग्री मिली?**

जहां तक इंटरनेट पर गुरुजी से जुड़ी सामग्री व साहित्य का सवाल है मुझे कोई खास इंटरनेट पर नहीं मिला। इंटरनेट पर जो थोड़ी बहुत सामग्री है वह उनके बारे में विस्तार से बताने में असमर्थ है। कुछ चुनिंदा वेबसाइट पर बिश्नोई साहित्य, सबद व गुरु जी के जीवन चरित्र के बारे में है लेकिन उनमें शोधपरक व गहन जानकारी का अभाव है। इसलिए विस्तरित रूप में प्रचार प्रसार के लिए आवश्यक है कि इंटरनेट पर ज्यादा से ज्यादा साहित्य को अपलोड किया जाए ताकि विदेशी भी उनकी शिक्षाओं के बारे में जान सकें।

मुझे फ्रांस में गुरु जी व बिश्नोई समाज के बारे में कोई खास साहित्य नहीं मिला। महज दो डाक्यूमेंट्री जो मैंने फ्रेंच टीवी पर देखी थी और कुछेक लेख जो अखबारों में मिले थे इसके अलावा गुरुजी के उपर एक फीचर पुस्तक मिली थी। लेकिन इन सब चीजों से केवल गुरु जी व बिश्नोई समाज के बारे में एक सरसरी जानकारी ही मुझे मिल पाई। इनमें ज्यादा गहनता व विस्तार से नहीं बताया गया था।

◆ **बिश्नोई समाज आपकी दृष्टि में.....?**

अनूठा है बिश्नोई समाज।

शब्दवाणी के प्रचार-प्रसार हेतु.....

साहित्य का समाज की प्रगति में मुख्य योगदान होता है। साहित्य का प्रचार-प्रसार भली-भांति से किया जाए तो सम्पूर्ण विश्व के लिए कल्याणकारी हो सकता है। जम्भवाणी के एक-एक सबद का अध्ययन प्रचार-प्रसार, टेलीवीजन मंदिर व लाऊड स्पीकरों में और नई टेकनोलॉजी के साथ प्रचार करना चाहिए तथा आचरण में ढालने का प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि आचरण में ढाले बिना ज्ञान को थोथा ही समझा जाएगा। इसलिए 29 नियमों के पालन को सर्वोपरी रखते हुए इसे अमावस्या के दिन उतार-चढ़ाव को ध्यान में रखते हुए अपने गाँव, शहर, नगरों के मंदिरों में जम्भवाणी का पाठ पहले प्रसंग (जैसे गुरु जाम्भोजी से किसी ने प्रश्न किया) उसके बाद में सबद (जो श्री गुरु सद्गुरु जम्भेश्वर देव जी भगवान के मुख से बोले गए शब्द) तथा बाद में इनका हिन्दी अनुवाद में गाया व बोला जाए। जैसे दादू पंथियों द्वारा वाणी का पाठ किया जाता है तथा साथ ही उसका अर्थ किया जाता है उसी प्रकार हमें भी करना चाहिए। इसी प्रकार लगभग 24 घण्टे पाठ में सबदवाणी का अर्थ सहित पठन पाठन हो सकता है। जागरण में सुधार की प्रक्रिया को लाया जाए। जैसे जागरण को सूर्य अस्त के साथ ही शाम के हवन के साथ शुरू किया जाए और सुबह हवन पर ही सम्पूर्ण किया जाए ताकि जागरण में पूरा समय मिल सके। टाईम पास की प्रथा को बदला जाए। समाज में बच्चों, बुढ़ों और युवाओं की अलग-अलग समितियां बनाई जाएं जो हर गाँव और शहरों में अपनी-अपनी जिम्मेदारियां निभा सके। सबदवाणी पाठ की प्रक्रिया युवा कमेटी के माध्यम से की जाए।

❐ **रमेश गोदारा**
रामपुरा बिश्नाईयां, डबवाली (सिरसा)
मो. : 94161-55793

गुरु जाम्भोजी का अवतारः एक वैशिष्ट्य

इस संसार में जब-जब अत्याचार एवं दुराचार बढ़ते हैं तथा धर्म का नाश होता है, तब-तब भगवान अवतार लेते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है-

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यह्म ॥
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे ॥

बिश्नोई पंथ के प्रवर्त्तक गुरु जाम्भोजी ने भी अपनी सबदवाणी में इस प्रकार की बात कही है-

जां जां सैतांन करै उफारौ
तां तां महत ज फलियौ। 87-37, 38

अर्थात् जब-जब दुष्ट एवं अत्याचारी लोग अहंकार के वश में होकर अन्याय करते हैं, तब-तब भगवान की महिमा इस संसार में प्रकट होती है।

गुरु जाम्भोजी ने अपने स्वयं के अवतार लेने का एक विशिष्ट कारण बताया है, जो अपने आप में मौलिक एवं विशिष्ट हैं। उनके अनुसार भक्त प्रहलाद के तेतीस करोड़ अनुयायी थे, इन तेतीस करोड़ अनुयायियों के उद्धार का वचन भक्त प्रहलाद ने भगवान नृसिंह से प्राप्त किया था। भगवान नृसिंह ने चारों युगों में इन तेतीस करोड़ अनुयायियों के उद्धार का वचन भक्त प्रहलाद को दिया था। इनमें पांच करोड़ अनुयायियों की हत्या हिरण्यकश्यपु ने कर दी थी, जिसके परिणाम स्वरूप पांच करोड़ जीव प्रहलाद के साथ, सात करोड़ जीव राजा हरिश्चन्द्र के साथ तथा नौ करोड़ जीव राजा युधिष्ठिर के साथ तर गये थे। शेष बारह कोटि जीवों के उद्धार हेतु गुरु जाम्भोजी को अवतरित होना पड़ा। जैसे-

पांच करोड़ी ले पहराजा तरियौ, खरतर करी कमाई
सात करोड़ी ले राजा हरिचंद तरियौ,
तारादे रोहतास हरिचंद वाट विकाई।
नव करोड़ी ले राव दहूटल तरियौ, धन्य कुंता दे माई।
बा' रां कोडि समांहण आयौ, पहराजा सूं कौल ज थाई।
99-8 से 12

गुरु जाम्भोजी ने अपने अवतार लेने के इस कारण को सबदवाणी में अनेक प्रकार से अनेक स्थानों पर प्रकट करके उसके वैशिष्ट्य को प्रमाणित किया है। भक्त प्रहलाद को दिये गये वचन के अनुसार भगवान विष्णु को अलग-अलग युगों में अवतार लेना पड़ा था और शेष बारह करोड़ जीवों के उद्धार हेतु स्वयं विष्णु को गुरु जाम्भोजी के रूप में अवतरित होना पड़ा था इसके साथ ही जाम्भोजी ने ये स्पष्ट किया है कि मैं बारह करोड़ जीवों के उद्धार के बाद यहां अधिक नहीं ठहरूंगा।

तेतीसां की वरग वहां म्हे,
बा' रा काजै आयो।
बा' रा काजि घंणा न ठाहर। 27-28 से 30

एक अन्य स्थान पर भी गुरु जाम्भोजी ने यह स्पष्ट किया है कि भक्त प्रहलाद ने मुझसे जिन तेतीस कोटि जीवों के उद्धार का वचन लिया था, मुझे उसे हर स्थिति में पूरा करना है। मैं बचे हुए बारह कोटि जीवों को भली-भांति जानता हूँ।

म्हे वाच कीवी पहराजा सूंई सो वाचा प्रवांणौ।
कोडि तेतीसूं वाड़ै दीहीं।
जांहकी जाति पिछांणौ ॥ 112-5 से 6

गुरु जाम्भोजी जिन बारह कोटि जीवों का उद्धार करना चाहते थे, वे उनके अच्छे कर्मों एवं विष्णु स्मरण के आधार पर करना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने आचरण की पवित्रता पर सर्वाधिक बल दिया है। गुरु जाम्भोजी के समय लोग धर्म के रास्ते से भटक गये थे और लोगों का आचरण भी पवित्र नहीं था। लोग मांस खाते थे और नशीली वस्तुओं का सेवन करते थे और ढोंगियों के जाल में फंसे हुए थे। इन बातों को देखकर गुरु जाम्भोजी को बहुत दुःख होता था। ऐसे अपवित्र आचरण करने वाले और धर्म के रास्ते से भटके हुए लोगों का उद्धार नहीं हो सकता था। इसलिए उनके उद्धार से पूर्व इनके जीवन में सुधार करना आवश्यक था। वे हर समय इन्हीं की चिन्ता करते रहते थे और इनके दुःख को देखकर स्वयं भी दुःखी होते थे।

बा' रां काजै पड़यौ बिछोहो
सभलि संभलि झूरूं। 61 - 15 से 16

गुरु जाम्भोजी हर स्थिति में इन बारह कोटि जीवों को

मोक्ष दिलाकर अपने भक्त प्रहलाद को दिये गये वचन को पूरा करना चाहते थे। वे यह भी कहते थे कि यदि मैंने ऐसा नहीं किया तो गुरु को शिष्य के सामने लज्जित होना पड़ेगा।

पहराजा सूं कौल़ ज कियौ आयौ बा' रां काजै।
बा' रां मांहियौ एक ज घटै सूं गुर चेलै लाजै॥ 104-3 से 4

गुरु जाम्भोजी ने विष्णु के रूप में संसार में आने का जिस विशिष्ट कारण का वर्णन किया है, उसी कारण का वर्णन जाम्भाणी कवियों ने भी बार-बार अपनी साखियों में करके, इस कारण के महत्त्व को स्थापित करने का प्रयास किया है, जिसके कारण इस पंथ के सभी लोग इस कारण से भली-भांति परिचित हो गये हैं। जैसे-

- ❖ बाहरा क्रोड़े काज, जम्भकलु मां आवियो- केसव
- ❖ कलियुग बारहां कारणै, आयो आप अलेख- सुरजनजी
- ❖ तेतीसां प्रतिपाल, धरणीधर आयो धरां- गोकुलजी
- ❖ करोड़ बा' रां तारणै, प्रहलाद कहयो देव परगट- परमानंद बणियाल
- ❖ पांच सात नव करोड़ बा' रां, बहुरि मिलेंगे आण- साहबराम जी

जिस तरह भक्तिकाल में गुरु जाम्भोजी की विचारधारा विशिष्ट है, उसी तरह उनके अवतार लेने का कारण भी विशिष्ट है।

❒ **डॉ. बनवारी लाल सहू**
1/73, प्रोफेसर कालोनी, हनुमानगढ़ टाऊन (राज.)
मो.: 9414875029

भजन

गुरुवाना हो तो ऐसा हो

खुद विष्णु घर लोहट के आए, घराना हो तो ऐसा हो।
बन कर गुरु विष्णुजी आए, गुरुवाना हो तो ऐसा हो॥टेक॥
गोद हँसा माता खिलाये, खेल खिलाना हो तो ऐसा हो।
गुरु जी लोहट को दर्शाये, दर्श दिखाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी अवतार पीपासर पाये, चरित्र सकल समाज को दिखलाये।
सुरनर मुनि दर्शन को चले आये, गुरु जो सुहाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी पाखण्ड को ललकारा, गुरु जी झूठ कपट को फटकारा।
पण्डित श्मशानसेवी को पंथ समझाया, समझाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी चले सम्भराथल आये, सदा ही शब्द ज्ञान के गाये।
पंथ मुक्ति का दिखलाया, भवसागर पार लंघाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी हवन यज्ञ सबसे करवाये, वन्य सम्पदा में प्राण बताये।
जीव वृक्ष गऊ रक्षा करवाई, धर्म-डंका बजाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी ध्यान वनस्पति में लगाये, तुसली अमरलोक सूँ लाये।
खेत खेत खेजड़ी लगवाई, गर पर्यावरण बचाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी पाहळ सम्भराथल पै बनाया, पिला अमृत बिश्नोई बनाया।
उत्तम कर्म हमको समझाया, सुगन्ध चहूँ दिश फैलाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी वचन प्रह्लाद को दीन्हें, प्रभुजी भक्त भव पार ही कीन्हें।
प्रभु वचन हर युग में निभाये, वचनों को निभाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी गऊओं को चराना, प्रभुजी प्यार मूक प्राणियो से जताना।
राव बीदा, राणा सांगा को पर्चाना, जगत को पर्चाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी भक्त बाजै को समझाना, उन्हें मलेरकोटला को पठाना।
सूखा बाग हरा करवाना, कष्ट गऊओं का मिटाना हो तो ऐसा हो॥
गुरुजी ले भात रोटू में आया, जहाँ ऊमां बाई का मान बढ़ाया।
प्रभु नवरंगी चीर औढ़ाया, देना बाई नै भात हो तो ऐसा हो॥
पर्चा रावण गोबिन्द को दीन्हा, बरसा पानी प्राण गुरु बचा लीन्हा।
प्रभु बानै मार्ग उत्तम दीन्हा, मोक्ष मार्ग पर लाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी बनाया कथीर कंचन का, बना दिया नारियल खल का।
बनाया भूप दूदै को दे कैर की लकड़ी, बनाना राव हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी नियम 29 फरमाया, विष्णु विष्णु महामन्त्र बतलाया।
प्रभु लोग अनवी बहुत निवाया, अनवी निवाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी छुड़ाई कैद हासम-कासम की, घटाई आब लोहा पांगळ की।
प्रभुजी बन्धाई धीर राहड़ रतने की, धीरज बन्धाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी तीर्थ आदि था प्रगटाया, सरोवर जाम्भा का खुदवाया।
वहाँ फल 68 तीर्थों का बतलाया, कल्याण बताना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी जा बैठे सम्भराथल पै, बनाकर प्यारा भेख जोगी का।
समझाये राव और रंक को, मर्म धर्म का समझाना हो तो ऐसा हो॥
गुरु जी आदि गुरु थे जगत के, है रक्षक विष्णु जी हर भक्त के।
पिता सारे ब्रह्माण्ड के कहलाये, जगत पिता ना हो तो ऐसा हो॥
शरण गुरु जी जो आपकी आया, प्रभु मायाजाल उसका हटाया।
"पृथ्वी सिंह" गुरु धाम को आये, मोह बन्धन छुड़ाना हो तो ऐसा हो॥

❒ **पृथ्वी सिंह बैनीवाल बिश्नोई**
189-एफ, सैक्टर-14, पंचकूला (हरि.)
मो.: 94676-94029

"जीवत मरो रे जीवत मरो, जिन जीवन की विध जाणी"

"हे पुरुष पुरुषार्थ कर, यह धर्म है तेरा अमर"-यही मानव जन्म का उद्देश्य है।

मानव जन्म उत्तम लक्ष्यों की सिद्धि के लिए प्राप्त हुआ है। हम सब जन्म लेने के कारण जन हैं, प्राणवान है, प्राणी हैं। लेकिन मनुष्य तो बनना पड़ता है। क्या है यह मनुष्य बनना। गुरु जाम्भो जी ने ठेठ मरू भाषा में अपने युग के मानव के सामने उस चरम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सांसारिक और पारमार्थिक उन्नति के सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल रूप में रखकर मनुष्य को स्व-कर्त्तव्य का बोध कराया। उन्होंने अपने उपदेशों को जनभाषा में दिया उन संदेशों को शब्द कहा और उन 120 मंत्रणाओं को सबदवाणी नाम दिया। बाह्य दृष्टि से तो शब्दों का सामान्य ज्ञान ही होता है, परन्तु उनका भाव बहुत गहरा है जो गहन विवेचन की अपेक्षा रखता है। प्रस्तुत पंक्ति- '**जीवत मरो रे जीवत मरो, जिन जीवन की विध जाणीं**'। पर मैंने भी मनन करने का प्रयास किया है। विभिन्न मनीषियों, चिंतकों, वेदों, धर्म ग्रंथों, दर्शनों, स्मृतियों ने मनुष्य जीवन का उद्देश्य भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति करना बताया है।

"यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्मः"

अर्थात् जिससे इस जगत में पुरुषार्थ के द्वारा उत्तम भोग और मोक्ष (अपवर्ग) प्राप्त हो जाये वही धर्म है। गुरु जाम्भो जी इसे अपने शब्द में कहते हैं-

"जिया जुगती मुआ मुक्ति" यही भोग और उपवर्ग है। एक अन्य शब्द में वे कहते हैं- **"हृदय नाम विष्णु का जम्पो हाथां करो टवाई"** अर्थात् जीवन के कर्त्तव्य कर्म करते हुए भी परमात्मा को भजते रहो-यही ईश्वर प्राणिधान है, यही क्रिया योग है। महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन में क्रिया योग में- तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान तीन भेद बताये हैं।

जीवत मरो रे जीवत मरो- इस क्रियायोग के प्रथम भाग तन का अर्थ भी यही है- जीवत मरो - अर्थात्

(1) द्वंद्वों को सहन करना- सुख-दुःख, हानि-लाभ, हार-जीत, मान-अपमान में सम रहना। एषणाओं से मुक्त जीवन, हर हाल में शांत, निर्विकार रहना। सुख में अति प्रसन्न और दुःख में अति दुःखी न होना।

(2) मनुष्य जीवन के कुछ शत्रु अन्य भी हैं- ये हैं काम, क्रोध, लोभ-मोह, मत्सर, अहंकार, अभिमान आदि इस पर विजय प्राप्त करें। अपनी समीक्षा, अपना आत्मा-निरीक्षण करते रहें, कहीं कोई चूक हो गई तो उसे सुधारने का प्रयत्न करें। दूसरों की गलतियाँ नहीं, अपनी गलतियों को ढूंढ़े, कोई बताये तो बुरा न माने और उन्हें दृढ़ता से दूर करें। घबराएं नहीं, आत्मोन्नति की सतत साधना करते रहें। किसी शायर ने कहा है-

ऐश से क्यों खुश हुए, क्यों गम से घबराया किए।
जिन्दगी न जाने क्या थी और क्या समझा किए॥

(3) जीवत मरो का एक और अर्थ है पुरुषार्थ- अर्थात् कर्म करते हुए जीना। मनुष्य बिना कर्म किए कभी रह ही नहीं सकता प्रतिपल कुछ न कुछ कर्म करता रहता है। कभी शारीरिक, कभी मानसिक और बौद्धिक अथवा आत्मिक चिन्तन। वेद तो आलसी व्यक्ति को अकर्मा दस्युः कहता है। आलसी वृत्ति तो आसुरी प्रवृत्ति है मानवी नहीं।

यजुर्वेद में कहा है - (40.2)

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

अर्थात् इच्छा कर सौ वर्ष आयु की, करता हुआ कर्म सविवेक।

यों कर्मों में लिप्त न होगा, यही मर्ण है उत्तम एक॥

सर्वमान्य कर्म का सिद्धान्त है कि जब हम न तो कर्म से बच सकते हैं न उसके फल से तो पुरुषार्थ से अपना वर्तमान और भविष्य क्यों न सुधारे। भाग्यवादी न बने कर्मवादी बने। जीवन में पुरुषार्थ से ही इस लोक और उस लोक का कथानक लिखना शुरू करें क्योंकि यही पूंजी तो अपनी पास-बुक में जमा होगी।

कुछ अकर्मण्य, झूठे प्रवंचकों तथाकथित ईश्वर भक्त कहलाने वाले तो कर्म सिद्धान्त को ही नकार देते हैं उनकी दलील है-

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गये, सबके दाता राम॥

गुरु जी ने ऐसे लोगों की भर्त्सना की है। उनके उपदेश हैं कि मनुष्य भाग्यवादी न हो, पुरुषार्थवादी हो, कर्मशील हो जो अंधविश्वासों में न पड़कर कर्म, श्रम, उद्यम, साहस, शौर्य व स्वाभिमान से जीता हो, वह पराक्रमी बने। वह प्रत्येक पवित्र कार्य को संघर्ष, बाधाओं व निन्दाओं से विचलित न होते हुए करने में विश्वास रखे। जो कभी थके नहीं, रूके नहीं, निरन्तर ईश्वर, प्रणिधान करता हुआ जप करता हुआ भी जीवन के कर्त्तव्य कर्म करता रहे। जो योगस्थ हो कर अपने कर्म से भगवान की पूजा करे, वही सच्चा साधक है।

हमने भोग और कर्म की संक्षिप्त समीक्षा अब तक ही। अब 'जीवत मरो' की आध्यात्मिक व्याख्या संक्षिप्त रूप में देखते है।

(4) जीवन मरो का आध्यात्मिक दृष्टिकोण- गुरु जाम्भो जी एक योग पुरुष हैं जो योगस्थ रहकर मनुष्य को अपने पर नियंत्रण रखने की शिक्षा देते हैं। मनुष्य अपनी इन्द्रियों, मन, बुद्धि पर विजय प्राप्त करे। महर्षि पतंजलि के योग दर्शन के आठों अंग-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, धारणा, ध्यान और समाधि गुरु जी के इस शब्द में समाहित है। यम और नियम के पालन अर्थात् अंहिसा, सत्य, असत्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के पालन से यम और शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान से नियमों का पालन करें। जीवन के ये तप ही उसे योग की अन्तिम और उच्च अवस्था समाधि तक ले जाएंगे। सर्वप्रथम अपनी पाँचों कर्मेन्द्रियों और पाँचों ज्ञानेन्द्रियों को मन के नियंत्रण में रखे। मन और इन्द्रियों को ऐसा भोजन दे जो शरीर को स्वस्थ (आत्माभिमुख) रखे। यही 'खविये खवणी' है। काम क्रोधादि विकास को जीर्ण कर रखे यही 'जरिये जरणी' है। विष्णु भजन से मनोविकारों पर नियंत्रण रखे। आत्मानुशासित व्यक्ति ही योग की उच्चावस्था को प्राप्त कर सकता है यही परम पुरुषार्थ अर्थात् 'करिये करणी' है। योगविद्या आध्यात्म विद्या कोई चमत्कार नहीं पूर्ण पुरुषार्थ है, जीवन खपा देना है।

नर निराश मत हो- जीवन में उत्थान की यह शक्ति केवल अपने भीतर ही बढ़ानी है। जीवन में चलते हुए कभी किसी क्षेत्र में व्यक्ति असफल हो जाता है या जैसा फल जितना परिणाम वह चाहता है उतना नहीं मिल पाता। इन प्रतिकूल परिस्थितियों की प्रतिक्रिया उस पर यह होती है कि वह हताश निराश हो जाता है, हार मान लेता है, कभी-कभी दोबारा उस कार्य को करने की हिम्मत भी मन में नहीं जुटा पाता, हीन भावना आ जाती है कि मेरे लिये यह कार्य असंभव है जैसे कि गीता में अर्जुन की बनी थी। कृष्ण ने इसी निराशा जनक स्थिति से उभरने का प्रयास गीता में किया है।

जीवत मरो अर्थात् जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये आराम, नींद छोड़ना पड़ता है, भागना दौडना पड़ता है, अपमान भी सहना पड़ता है तब जाकर लक्ष्य तक पहुँचते है। जो महान् व्यक्ति सफल हुए है उनके भी ऐसे ही शरीर थे ऐसे ही दो हाथ, पाँव, आँखे, इतना ही आकार-प्रकार था। उन्होंने इन्हीं साधनों-इन्द्रियों, मन, बुद्धि की साधना करके, अपितु कम सुविधाओं, कम साधनों में बड़े-बड़े काम किए है। असफलता ही सफलता की जननी है। "गिरते है शह सवार ही मैदाने जंग में"। जो गिरने से डरेगा वह तो साइकिल चलाना भी नहीं सीख सकेगा।

जिन ढूंढ़ा तिन पाईया, गहरे पानी पैठ।
हों बौरी बूडन डरी, रही किनारे बैठ।।

भारत के मनीषियों, चिन्तकों, धर्म गुरुओं को मुख्य बिंदु जीवन और मृत्यु ही है। गुरु जी महाराज का कहना है कि मृत्यु से भयभीत न होओ। उनका विरोध भौतिकवाद, विज्ञान या विकासवाद से नहीं है वरन् वे तो बहुत बड़े वैज्ञानिक और पर्यावरण विद् है। लेकिन यह भी सत्य है कि जीवन का अन्तिम लक्ष्य आत्मबोध से परमात्मबोध करना है। अत: भौतिकता एवं आध्यात्मिकता के लिए शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म और शुद्ध उपासना करो। कार्य करने में सफलता के लिए ईश्वर से बल, साहस, उत्साह, पराक्रम की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करो। "अपने मरे बगैर स्वर्ग नहीं मिलता"। कर्म की साधना की नाव में बैठकर संसार सागर को तरना है उसके पार ही सुख का मोक्ष का द्वार है। उन परम् कैवल्य ज्ञानी गुरु को नमन।

"गुरु के शब्द असंख्या प्रबोधी खार समंद परीलो"

(शब्द-29)

❐ श्रीमती आदर्श बिश्नोई
एन-179, सैक्टर 25, नोएड़ा (उ०प्र०)
मो. 09268074753, 09457762194

बधाई सन्देश

डॉ. बनवारी लाल सहू, 1/73, प्रोफेसर कालोनी, हनुमानगढ़ टाऊन को संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वरिष्ठ शोध अध्येता वृत्ति (Sr. Fellowship) प्रदान की गई। लगभग एक दर्जन पुस्तकों के लेखक डॉ. सहू को यह फेलोशिप बिश्नोई लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन विषय पर प्रदान की गई।

श्रीमती सुनेश बिश्नोई सुपुत्री स्व. श्री हेतराम बैनीवाल धर्मपत्नी श्री ज्ञान प्रकाश गोदारा निवासी हरिपुरा पंजाब हाल अग्रवाल कालोनी, सिरसा की पदोन्नति रा.सी.सै. स्कूल बाजेकां (सिरसा) में प्राचार्या पद से खण्ड मौलिक शिक्षा अधिकारी, रानियां के पद पर हुई है।

सुरेश सुपुत्र श्री गोपीराम बैनीवाल निवासी असरावां, हिसार ने 39th All India Inter-State Electricity Board Tournament द्वारा आयोजित 1600 मीटर की दौड़ प्रतियोगिता में स्वर्ण व 400 मी. में रजत पदक प्राप्त किया है।

अनिल कुमार भाम्भू निवासी मंगाली, हिसार को अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा करने के लिए पुलिस महानिदेशक हरियाणा द्वारा प्रशस्ति पत्र व नगद राशि देकर सम्मानित किया गया।

दीपिका व मोनिका सुपुत्रियां श्री बनवारी लाल पूनिया निवासी गांव देसलसर, नोखा, जि. बीकानेर ने राजस्थान विद्युत प्रसारण निगम में कनिष्ठ अभियन्ता (सिविल) की भर्ती परीक्षा में महिला वर्ग में क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया है।

पूनम व पुष्पा खिचड़ सुपुत्री श्री हंसराज खिचड़ निवासी गांव सदलपुर ने भीलवाड़ा में भारत विकास परिषद द्वारा आयोजित 13वीं राष्ट्रीय स्तर सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में हरियाणा का नेतृत्व करते हुए पूरे भारत में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

आफरीन बिश्नोई सुपुत्री श्री विनय बिश्नोई एडवोकेट, जिला प्रधान बुद्धिजीवि प्रकोष्ठ निवासी अर्बन एस्टेट, हिसार ने जिला स्तरीय बैडमिंटन प्रतियोगिता में अंडर 10 आयुवर्ग में रनरअप रहते हुए हरियाणा के लिए क्वालिफाई किया है।

तुषार बिश्नोई सुपुत्र श्री शिव बिश्नोई डीवीएम, निवासी 158 Spring Valley Road, Park Ridge, NJ, 07656, USA को State Board of Education द्वारा वर्ष 2014 का सर्वश्रेष्ठ टेनिस खिलाड़ी घोषित किया है। इसके अतिरिक्त उनको टेनिस में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए अमेरिका में एक दर्जन से अधिक अवार्डों से सम्मानित किया जा चुका है।

प्रदीप ज्याणी सुपुत्र श्री राजेन्द्र सिंह ज्याणी निवासी गांव सारंगपुर, तह. मण्डी आदमपुर, हिसार ने बिडला पब्लिक स्कूल, पिलानी से बारहवीं कक्षा (वाणिज्य विषय) में 95.20% अंक प्राप्त कर टॉप किया है।

अमनदीप पुत्र श्री राधेश्याम ढाका, निवासी गांव खजूरी जाटी, फतेहाबाद ने कक्षा 10 में 98% अंक प्राप्त कर जिले में दूसरा स्थान प्राप्त किया है।

मंजु बिश्नोई सुपुत्री श्री सुभाष बिश्नोई निवासी 1216, सैक्टर 8, फरीदाबाद ने सीबीएससी बोर्ड से 10+2 की परीक्षा वाणिज्य संकाय में 96.2% अंक प्राप्त किये हैं।

ममता ज्याणी सुपुत्री श्री रामनिवास ज्याणी, निवासी बालवाड़ी शिक्षणा संस्था, उ.मा. विद्यालय, नोखा, बीकानेर ने बारहवीं की परीक्षा में पूरी तहसील में प्रथम स्थान व जिला मैरिट में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है।

विकास सुपुत्र श्री बंसीलाल ज्याणी निवासी पिरथला, जिला फतेहाबाद ने कक्षा 10 की परीक्षा में 92% अंक प्राप्त किये हैं।

सुचिता सुपुत्री श्री सज्जन ज्यानी निवासी गांव चिकनवास, हिसार ने कक्षा 10 94.5% अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

दीपक सांवक सुपुत्र श्री कृष्ण चन्द्र निवासी गांव सीसवाल, जिला हिसार ने कक्षा 10 में 90.6% अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

पर्यावरण संरक्षण एवं बिश्नोई पंथ

गतांक से आगे.....

वृक्षों में प्राण हैं, इस बात को आधुनिक युग के वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित करने से पूर्व ही गुरु जाम्भोजी इस तथ्य को सिद्ध कर चुके हैं। वृक्षों को प्राणयुक्त मानने का कारण ही गुरु जाम्भोजी ने जीव रक्षा में पशु-पक्षियों की रक्षा के साथ-साथ वृक्षों की रक्षा पर भी जोर दिया है। गुरु जम्भेश्वर भगवान ने वृक्षों की रक्षा का केवल उपदेश ही नहीं दिया था, अपितु भ्रमण करते समय उन्होंने अनेक स्थानों पर वृक्षारोपण करके लोगों में वृक्ष-प्रेम जाग्रत किया था। भ्रमण करते समय जाम्भोजी ने लोदीपुर उत्तर प्रदेश में खेजड़ी का एक वृक्ष लगाकर लोगों को वृक्ष प्रेम की ओर प्रेरित किया था। इसी तरह उन्होंने रोटू गांव में वृक्षों के अभाव को देखकर खेजड़ियों का एक बाग लगाया था जो आज भी देखा जा सकता है। उनके लगाए हुए वृक्ष आज भी स्थान-स्थान पर मौजूद हैं।

वृक्ष जीवन का आधार होता है, यह बात त्रिकाल ज्ञाता जाम्भोजी से भी छिपी नहीं रही। मरूप्रदेश में रहते हुए जाम्भोजी ने मानव जीवन में वृक्षों के महत्त्व को भली भांति अनुभव कर लिया था। तपते रेगिस्तान में जिसमें आदमी तपन से झुलसता रहता है, वहां वृक्ष ही मनुष्य को इस भयंकर तपन से मुक्त करके उसे तरोताजा करके पुन: परिश्रम करने में सक्षम बनाते हैं। तपते रेगिस्तान में पानी की एक बूंद भी अमृत तुल्य है। पानी के अभाव में किसी भी प्राणी का जीवित रहना असंभव है। रेगिस्तान में पानी का महत्त्व और भी अधिक है।

बिश्नोई पंथ के अनुयायियों का आर्थिक आधार भी वृक्ष ही रहे हैं। वृक्षों से ही पशुओं को चारा प्राप्त होता है। इन्हीं के माध्यम से ईंधन की प्राप्ति होती है। वृक्षों के इसी महत्त्व के कारण ही जाम्भोजी अपने जीवनकाल में वृक्षों की रक्षा का उपदेश देते रहे हैं। वृक्षों की रक्षा के लिए अपना जीवन बलिदान करने की घटनाओं से बिश्नोई इतिहास भरा पड़ा है। ऐसे अनुपम बलिदानों की एक घटना भी विश्व इतिहास में देखने को नहीं मिलती। बिश्नोई स्त्रियां भी वृक्ष रक्षा हेतु कभी पीछे नहीं रही हैं। आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियों ने भी अपने प्राण न्यौछावर करके वृक्षों की रक्षा की है। संसार में मातृभूमि, धन-दौलत, मनुष्य एवं पशु-पक्षियों के लिए अपने जीवन का बलिदान करने की घटनाओं से मानव इतिहास भरा पड़ा है। वृक्षों की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान करने की घटनाएं केवल बिश्नोई पंथ के इतिहास में ही उपलब्ध हैं।

अपने धर्म का पालन करते हुए वृक्षों की रक्षा करते हुए प्राण न्यौछावर करने की सर्वप्रथम घटना वि.स.1661 जेठ वदि दूज, शनिवार को जोधपुर राज्य के गाँव रामासड़ी में घटित हुई। रामासड़ी की श्रीमती करमां एवं श्रीमती गौरा बिश्नोई ने अपने प्राण न्यौछावर करके वृक्षों की रक्षा की इसका वर्णन वील्होजी रचित 'रामासड़ी की साखी' में मिलता है। जिसमें गौरा एवं करमा ने आत्मबलिदान कर वृक्षों की रक्षा की यह घटना 'रूंखा ऊपर मरण धारयों' परम्परा के पालन का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है। जोधपुर राज्य के तिलासणी गाँव में खीवणी खोखर, श्री मोटा जी खोखर एवं श्रीमती नेतू नैण ने अपने प्राण न्यौछावर करके वृक्षों की रक्षा की है। उस समय तिलासणी गाँव गोपालदास भाटी के अधिकार में था। एक बार किरपो भाटी ने अपने साथियों को साथ लेकर तिलासणी के चारों ओर सुरक्षित वृक्षों को काटना प्रारंभ कर दिया इसकी सूचना ज्योंहि तिलासणी के बिश्नोइयों को हुई, तो वहां के सभी बिश्नोइयों ने अपने धर्म की परम्परा के अनुसार वृक्ष काटे जाने का विरोध करने का निश्चय किया और विरोध करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

इस बलिदान का वर्णन वील्होजी ने अपनी साखी में इस प्रकार किया है:-

"पहली मूंही खिवणी खड़ी, सत सूं घणो करार
विष्णु भगत मोटो खड़यों, गुरु सूं हेत पियार
इंहि ऊपर नेतू खड़ी चाली जनम सुधार"।

वृक्षों के लिए शरीर त्यागने के कारण कवि ने इनकी प्रशंसा करते हुए लिखा:-

"खीवणी धनि-धनि तोहि नूँ नेतू नेण सधीर।
राह कारण खंखा उपरै वो सोपिया सरीर॥

वील्होजी जो जाम्भोजी के बाद दूसरे सबसे प्रभावशाली संत बिश्नोई पंथ में हुए थे, जाम्भोजी के बताये हुए धर्म नियमों पर चलने का जो प्रचार-प्रसार किया, उसका बिश्नोई समाज पर बहुत ही व्यापक प्रभाव पड़ा। वील्होजी ने वृक्षों की रक्षा पर सबसे अधिक जोर दिया और समाज में इस भावना का प्रचार- प्रसार किया कि लोग अपने प्राण

न्यौछावर करके भी वृक्षों की रक्षा करो। वृक्ष-रक्षा हेतु आत्म-बलिदान की महत्त्वपूर्ण घटना इसी पंथ में मेड़ता परगने के पोलावास गाँव में वि.स. 1700 की चैत्र वदि तीज को घटित हुई थी। राव दुदा के वंशजों ने होली के लिए खेजड़ियों का वन काट दिया। बूचो जी के नेतृत्व में बिश्नोइयों ने राणा रत्न सिंह का अहिसंक विरोध भी किया परन्तु अंत में बूचो जी पर रत्न सिंह ने तलवार चला दी:-

"कंध करारो नाडिया रतना तेग सवार
तहन हुकम बूचै किया तन बूही तरवार"

मानव जाति के रक्षक बूचौजी ऐचरा वृक्षों की रक्षा करते हुए होली के तीसरे दिन मंगलवार को शहीद हो गए और बिश्नोई पंथ में एक स्वर्णिम पृष्ठ और जोड़ गए। इस बलिदान के कारण बूचोजी की प्रशंसा करते हुए कवि ने लिखा है:-

"झीणा कण्ठ सबकनी, पदमल करे पियार
हस्त नखत तीज दिन होली मंगलवार"

इस प्रकार समय-समय बिश्नोई वीरो ने 'सिर सांटै रूंख रहे तो भी सस्तो जाण' को चरितार्थ किया है। ये घटनाएं मात्र संकेत भर है ऐसी ही अनेक घटनाओं से बिश्नोइयों का स्वर्णिम इतिहास भरा पड़ा है।

अब आगे विश्व प्रसिद्ध खेजड़ली बलिदान का वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है।

वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण देने की जितनी घटनाएं बिश्नोई इतिहास में मिलती हैं उनमें सबसे प्रसिद्ध एवं दिल दहलाने वाली घटना तत्कालीन जोधपुर राज्य के खेजड़ी ग्राम की है, जो कि 'खेजड़ी के खण्डाणे' के नाम से प्रसिद्ध है। इस बलिदान को आज भी जब हम याद करते हैं तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं और खून खौलने लग जाता है। पर्यावरण की शुद्धता के लिए बिश्नोई समाज का यह बलिदान विश्व में अत्यन्त अभूतपूर्व है। जोधपुर के राजा नया किला बनाने चाहते थे और राज्य में धन का भी अभाव था। किले के निर्माण हेतु चूने की आवश्यकता थी और चूना बिना ईंधन के तैयार नहीं हो सकता था। इसी उद्देश्य के लिए बिश्नोइयों के गाँव खेजड़ली के खेजड़ी वृक्षों को काटने का निश्चय हुआ। राजा के हाकिम गिरधर दास भण्डारी और बिश्नोइयों में ठन गई। बात बनते न देख गिरधर दास भण्डारी ने बिश्नोइयों से वृक्षों के बदले धन की मांग की वहां उपस्थित बिश्नोइयों ने भण्डारी की इस व्यवस्था को अस्वीकार करते हुए कहा- सिर सौंपा रूंखा सटै, म्हें टुकड़ों न द्या दाम दाग लगै जो दाम दै, पंथ मां पौण होय। यदि हम रिश्वत के रूप में धन देते हैं, तो हम पर कलंक लगता है और हमारे धर्म की प्रतिष्ठा कम होती है। अत: हम वृक्षों के लिए अपने सिर कटवा देंगे पर रिश्वत देकर अपने धर्म को कलंकित नहीं होने देंगे। बिश्नोइयों की इस वृक्ष प्रेम की भावना को देखकर भण्डारी का वृक्ष काटने व धन इक्टठा करने का उत्साह ठण्डा पड़ गया। अपने थोड़े से कारिन्दों के साथ जबरदस्ती वृक्ष काटने की स्थिति में नहीं था। इसलिए उसने अपने महल जोधपुर लौटना ही उचित समझा और वह बिना वृक्ष काटे ही जोधपुर पहुंच गया।

महाराजा को जब सारी बात का पता चला तो इस समस्या के समाधान हेतु महाराजा ने समाज के सभी प्रबुद्ध व्यक्तियों की सलाह ली तो सभी ने वृक्षों को न काटने की सलाह दी। इस सलाह को राजा ने तो स्वीकार कर लिया पर निर्दयी गिरधर दास भण्डारी ने राजाज्ञा की कोई परवाह नहीं की। वह अपनी जिद्द पर अड़ा रहा। "हाकिम रे मन जोर, दिल माँ दाय न आयों दायो न आयो, दूज राखी, पाप कुल रो प्राणियों राजकुल की रीति मेटै, भूड़ी बाणियों।

शक्ति के नशे में चूर भण्डारी बिश्नोइयों को सबक सिखलाने के उद्देश्य से बड़ी मात्रा में सैनिक एवं कारिन्दों को लेकर वृक्ष काटने के लिए खेजड़ली गाँव पहुंच गया। बिश्नोई अपने धर्म पर अडिग थे, भण्डारी अपने दुराग्रह पर बात ने तूल पकड़ लिया और खेजड़ली निवासी बिश्नोइयों ने वृक्षों की रक्षा हेतु सिर सौंपने का निर्णय लिया तथा अपने आसपास के बिश्नोई गाँवों में सूचना भेज दी। सूचना पाते ही बिश्नोई स्त्री-पुरुषों के झुण्ड के झुण्ड वहां पहुंच गये और वृक्षों की रक्षा हेतु एक-एक कर वृक्षों से चिपक गए। पर क्रूर एवं मदांध भण्डारी बिश्नोइयों की इस शक्ति को नहीं समझ पाया और उसने बिना सोचे-समझे अपने कारिन्दों को वृक्ष काटने का आदेश दे दिया। कारिन्दों का दिल भी लोहे की कुल्हाड़ी की तरह कठोर हो गया बौर वृक्षों के स्थान पर निहत्थे स्त्री-पुरुषों पर प्रहार करने लगे। वृक्ष रक्षा के इस अहिंसात्मक विरोध का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। बड़ा विचित्र दृश्य था एक और मदान्ध क्रूर शक्ति तो दूसरी ओर जीवों एवं वृक्षों की रक्षा व्रतधारी धर्मवीर बिश्नोई बड़ा रोमांचकारी व वीभत्स दृश्य! स्त्री-पुरुष भाग-भाग कर वृक्षों से चिपक रहे हैं और कुल्हाड़ियों के निरन्तर प्रहार से कटकर गिर रहे हैं। इस मारकाट से न तो भण्डारी और न ही कारिन्दों के मन में दया उत्पन्न हुई और बिश्नोइयों के बलिदान में कमी आई। इस महाबलिदान में सर्वप्रथम अमृता देवी बैनिवाल और पुरुषों में

अणदोजी शहीद हुए।

"खरतर खण्डाधार, अणदे तेग समाई
तेग समाई हुई तागों, नर-नारी निश्चय-खड़यो।"

अणदोजी के बाद बिरतोजी, चावोजी, उदोजी, कान्होजी, किसनोजी, इमरती, देउ, चीमा इत्यादि। इस प्रकार 363 बिश्नोई वीर वृक्षों से चिपक-चिपक कर शहीद हो गए।

वृक्ष कटते रहे पर उससे पूर्व बिश्नोई स्त्री-पुरुषों के सिर कट-कटकर धरती पर गिरते रहे। वृक्षों की रक्षा हेतु बिश्नोइयों का चाव बढ़ता ही गया, उनके उत्साह में निरन्तर वृद्धि होती गई। इस उत्साह के बारे में कवि गोकुल जी ने अपनी साखी में लिखा है:-

"सीस सौंपा अर नहीं कंपा, मरणहू मत को डरो
होय होतब कौल गुरु कै, सिर सूंपा साको करो।"

धरती खून से लाल हो गई लाशों से पट गई तभी किसी ने सूचना राजा के पास पहुंचाई। तब उन्होंने घटना स्थल पर पहुँच कर क्षमा मांगते हुए वृक्षों की कटाई रुकवाई और पश्चाताप स्वरूप उन्होंने ताम्रपत्र पर राजाज्ञा प्रदान की कि भविष्य में कोई भी वृक्षों को काटेगा नहीं। परन्तु राजा के पहुंचने से पूर्व 363 स्त्री-पुरुष शहीद हो चुके थे। इतने बड़े बलिदान से धरती का सीना भी घायल हो चुका था। इसी कारण उस जगह जहाँ शहीदों का खून गिरा था वहाँ आज तक घास का तिनका भी पैदा नहीं हुआ है। वृक्षों के लिए बलिदान की इतनी बड़ी घटना विश्व में कहीं भी देखने को नहीं मिलती। बिश्नोई पंथ में सबसे बड़ा साका है गुरु गोबिन्द सिंह की यह पंक्तियां इन वीरों पर ही सही चरितार्थ होती है :-

"धर्म हेत साका जिन किया,
सीस दिया पर शिरह न दिया।"

यह भारतवर्ष एवं बिश्नोई सम्प्रदाय के लिए बहुत ही गौरव की बात है।

आज के पर्यावरण संरक्षण आंदोलन और बिश्नोई पंथ वृक्षों की रक्षा के लिए स्त्री-पुरुषों द्वारा प्राण न्यौछावर करने के कारण खेजड़ली के खडाणे की चर्चा चारों ओर फैल गई थी। वृक्षों की रक्षा के लिए फिर कभी ऐसी घटना न हो, इस उद्देश्य से अनेक राजाओं ने बिश्नांई गाँवों से वृक्ष न काटने व शिकार न करने के परवाने जारी कर दिए।

आज भी हिमालय घाटी में वृक्षों को बचाने के लिए चल रहे चिपको आन्दोलनों की शुरूआत संभवत: उसी घटना से प्रेरित है। कुछ वर्ष पूर्व जब हिमालय से वृक्षों को काटकर पहाड़ियों को नंगा किया जा रहा था। तब ग्रामीण स्त्री-पुरुषों ने वृक्षों की कटाई से रोकने के लिए तीन सौ वर्ष पुराने बिश्नोई समाज द्वारा अपनाए गए मार्ग का अनुसरण किया। सुन्दर लाल बहुगुणा द्वारा शुरू किए गए इस चिपको आंदोलन से बिश्नोई समाज द्वारा वृक्षों के लिए किए गए बलिदान का व्यापक प्रचार- प्रसार हुआ है। वे जहाँ भी वृक्षों के महत्त्व पर प्रकाश डालते वहीं 'खेजड़ली बलिदान' की चर्चा अवश्य करते है। उत्तरी भारत के 'चिपको आंदोलन' की प्रेरणा से दक्षिण भारत में 'आप्पिको आंदोलन' प्रारम्भ हुआ है। कन्नड़ भाषा में आप्पिको का अर्थ होता है-आलिंगन करो।

8 अगस्त 1982 को कर्नाटक के शिरसि तालुके के साल्कणे गाँव के 150 युवक एवं युवतियाँ साल्कणे से आठ किलोमीटर दूर कलरो वन में वृक्षों से चिपक कर खड़े हो गए थे, जिससे जगंल के ठेकदारों को वृक्षों की कटाई रोकनी पड़ी। सरकार को मजबूर होकर वन नीति में संशोधन करना पड़ा। आप्पिको आन्दोलन का नारा है-**"वृक्षों को बचाओ बढ़ाओ ताकि वृक्ष मानव को बचा सके, बढ़ा सकें।"**

इस प्रकार आधुनिक युग के 'चिप्पको' व 'आप्पिको' आन्दोलन 'खेजड़ली बलिदान' का ही विकास है यद्यपि वर्तमानकालिक इन आन्दोलनों में किसी को अपने प्राण न्यौछावर नहीं करने पड़े हैं। खेजड़ली में बिश्नोई स्त्री-पुरुषों ने वृक्षों की रक्षा हेतु अपने प्राण न्यौछावर करके न केवल बिश्नोई धर्म की रक्षा की है, अपितु सम्पूर्ण मानव जाति का हित किया और मानव समाज के समक्ष पर्यावरण संरक्षण का एक आदर्श प्रस्तुत किया।

वृक्षों के महत्त्व को मानव प्रारंभ से स्वीकार करता आया है। पर वृक्षों की रक्षा हेतु जो योगदान एवं बलिदान बिश्नोई पंथ कर रहा है वैसा उदाहरण विश्व में और कहीं नहीं मिलता। बिश्नोई धर्म के नियमों में पर्यावरण सरंक्षण के नियम व नियमों में पालन करने की प्रवृत्ति के कारण ही बिश्नोई न तो स्वयं हरा वृक्ष काटते हैं और न ही दूसरों को काटने देते हैं।

अत: बिश्नोइयों का यह जीवन मूल्य 'सिर सांठे रूंख रहै तो भी सस्तो जाण' पर्यावरण हेतु सबको वरेण्य है।

❐ **डॉ. राजाराम अग्रवाल**
शेखूपुर दड़ौली, फतेहाबाद (हरि)

संत ब्रह्मानन्द सरस्वती के साहित्य में लोक-कल्याण की भावना

भारत में प्राचीन काल से ही सन्तों-महात्माओं, ऋषि-मुनियों ने जन्म लिया और लोक-कल्याणार्थ अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। संत ब्रह्मानन्द सरस्वती भी ऐसे संत हुए हैं जिन्होंने समाज को नई दिशा दी। 24 दिसम्बर, 1908 को कुरुक्षेत्र, हरियाणा (अब कैथल जिला) के गाँव चूहड़माजरा में जन्मे संत ब्रह्मानन्द सरस्वती ने लोक कल्याण हेतु समाज में फैले मिथ्याचारों, बाह्याडम्बरों, अंधविश्वासों आदि को दूर करने का प्रयत्न किया। उन्होंने अपनी लोकमंगल की भावना को पाँच ग्रंथों के माध्यम से वाणी दी। ये पाँच रचनाएँ हैं - 'श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द पचासा', 'गौ-रक्षा', 'श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द ब्रह्मविचार', 'श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द नीति-विचार', 'श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द शारीरकारकोपनिषद'। रचना के संदर्भ में श्री रघुबीर सिंह मथाना लिखते हैं - 'इस पुस्तक के एक-एक छन्द पर विस्तार से लिखा जावे तो एक छन्द पर ही एक पुस्तक की रचना की जा सकती है।'[1]

संत ब्रह्मानन्द सरस्वती के आचरण और उपदेशों में समानता थी। सरल स्वभाव, स्पष्टता और निश्छल स्वभाव के कारण वे जनमानस में लोकप्रिय हो गए। इनके इसी आकर्षण के कारण जनता इनकी वाणी को सुनने के लिए तत्पर रहती थी। संत ब्रह्मानन्द के सदाचारी जीवन के विषय में संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान पंडित विद्यानिधि शास्त्री जी ने लिखा है- "जिसका मन शान्त है, सब लोगों में अभिनन्दनीय है, दिव्य है और सुन्दर है, पवित्र चरित्र वाले पूज्यपाद हैं। स्वभाव से मधुर श्रेष्ठ योगी, प्रशंसनीय ब्रह्मानन्द जी की मैं वन्दना करता हूँ।"[2] संत ब्रह्मानन्द ने जनता के सामने उपदेश देकर, अनेक स्थानों पर यज्ञों, भण्डारों का आयोजन कर, समाज-सुधार के कार्यक्रमों के द्वारा समाज में फैले अंधविश्वासों और बुराइयों को दूर करने के प्रयत्न किए।

संत ब्रह्मानन्द सरस्वती ने लोक कल्याण के लिए समाज सुधर के कार्यक्रमों में शिक्षा के प्रचार को सर्वोपरि स्थान दिया। साधरण जनता को शिक्षित करने के लिए उन्होंने गुरुकुलों, पाठशालाओं और आश्रमों की स्थापना कर शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया। जींद, सफीदों, पिंडारा, जौली आदि स्थानों पर पाठशालाएँ खोली गई जिनमें वर्ण ज्ञान की शिक्षा के साथ-साथ संस्कार और आत्मज्ञान संबंधी शिक्षा और स्वाध्याय पर विशेष बल दिया गया।[3] लोक-कल्याण की भावना के कारण ही उन्होंने करनाल जिले के फफड़ाना, जबाला, दुपेड़ी, जयसिंहपुरा आदि गाँवों के मध्य असंध के पास जंगल में ओ३म्पुरा गुरुकुल की स्थापना की। फतेहपुर-पुण्डरी में आश्रम और पुस्तकालय खोले। इसके बाद बनी, मुंदड़ी, लालड़, देहरादून और हरिद्वार में भी आश्रम बनाए और प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए अनेक व्याख्यान दिए। समाज में शिक्षा को अत्यन्त आवश्यक मानते हुए संत ब्रह्मानन्द सरस्वती गुरु और माता-पिता को सबसे श्रेष्ठ स्थान प्रदान करते हुए लिखते हैं-

"माता-पिता गुरु, इन तीनों से विद्या शुरू।
इन तीनों को जो पटकारे, वे फिरते हैं मारे-मारे॥"[4]

उन्होंने नारी-शिक्षा का भी समर्थन किया। नारी शिक्षा के लिए कुछ कन्याओं को प्रशिक्षित कर समाज में शिक्षा के प्रचार के लिए अनेक स्थानों पर भेजा। उनके शिष्यों के मुख से अक्सर सुना जाता है कि वे सह-शिक्षा के समर्थक थे तथा कहते थे कि बालक-बालिकाओं को कम से कम पाँचवीं कक्षा तक इक्ट्ठे अवश्य पढ़ाना चाहिए। अपने ग्रन्थों के माध्यम से भी लोक कल्याण की भावना को सर्वोपरि स्थान दिया।

संत ब्रह्मानन्द जी ने पर्यावरण संरक्षण पर विशेष बल दिया। वे प्रकृति प्रेमी थे और गुरुकुलों, पाठशालाओं तथा आश्रमों में पौधारोपण और वृक्षों का संरक्षण कर पर्यावरण की शुद्धता पर विशेष जोर देते थे तथा वनों के संरक्षण के लिए समाज को प्रवचनों द्वारा जागरूक करते थे। शुद्धि को परमात्मा का दूसरा रूप मानते हुए वे बाहरी और आन्तरिक शुद्धि पर विशेष बल देते हुए लिखते हैं -

"शरीर शुद्ध वस्त्र शुद्ध बर्तन शुद्ध स्थान।
विचार शुद्ध मन शुद्ध बुद्धि शुद्ध मकान।
जल शुद्ध अन्न शुद्ध दूध घी शुद्ध।
अग्नि शुद्ध पृथ्वी शुद्ध आकाश शुद्ध।
प्राण शुद्ध हवन शुद्ध सामग्री शुद्ध।
लोक शुद्ध परलोक शुद्ध।"[5]

संत ब्रह्मानन्द जी ने अपने सभी ग्रंथों में बाहरी आडम्बरों का खंडन किया और आचरण की शुद्धता पर बल दिया। वे समाज में फैले अंधविश्वासों, बुराइयों का पुरजोर खण्डन करते थे। वे सत्यवादी और स्पष्ट वक्ता थे तथा वेदों को सत्य मानते थे। पर्दा-प्रथा, दहेज-प्रथा, बाल-विवाह, अनमेल-विवाह, मृत्युभोज, कन्यावध, गोवध, भूत-पिशाच, छूआछूत आदि समाज में फैली बुराइयों का विरोध कर उन्हें दूर करने पर बल देते थे। संत जी कोरे उपदेशक नहीं थे अपितु पहले उस पर स्वयं

आचरण करते थे। उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों, ढोंगों, फिजूलखर्ची को रोकने के लिए जगह-जगह उपदेश दिए। वे मानते थे कि -

"बदल दे सारी दुनिया को बदलना ही तेरा काम है।
सबसे पहले आप बदल जा इसी में तेरा नाम है।"[6]

इन पंक्तियों के माध्यम से संत जी संसार में सामाजिक बुराइयों को समाप्त कर परिवर्तन का आह्वान करते दिखाई देते हैं।

नर और नारी समाज के दो स्तम्भ हैं। वेदों में नारी को भी पुरुषों के समान स्वतन्त्रता का वर्णन मिलता है। मनुस्मृति में भी कहा गया है- 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता।'[7] संत ब्रह्मानन्द सरस्वती ने भी नारी उत्थान में विशेष योगदान दिया। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारी शिक्षा का प्रचार किया। इसी परम्परा को संत ब्रह्मानन्द जी ने आगे बढ़ाते हुए नारी जागरण के लिए आश्रमों की स्थापना की। यज्ञों, भण्डारों के द्वारा नारी शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया। आर्य समाज के नियमों का अनुसरण करते हुए महिलाओं को यज्ञ करने का अधिकार दिलवाया। वे पर्दा-प्रथा के घोर विरोधी थे तथा इसे महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक और हीनभावना उत्पन्न करने वाला बताते थे।

संत ब्रह्मानन्द सरस्वती देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत थे। वे देश की पराधीनता का कारण आपसी फूट, नशाखोरी और अन्य दुर्गुणों को मानते थे। संत जी भारतीय संस्कृति के घोर समर्थक थे। वे सक्रिय राजनीति में कभी नहीं आए परन्तु राजनीति विशारद थे। संत जी लिखते हैं-

"नीति के प्रयोग चार साम-दाम-दण्ड-भेद।
युक्ति से प्रयोग करो दुनियां के मिटेंगे खेद।"[8]

संत जी आपसी वैर-भाव और युद्ध को विनाश का कारण मानते हैं - कच्चे घड़े कच्चे घड़े से टकराकर टूट जाते हैं।
इसी प्रकार दो निर्बल राजे परस्पर लड़कर बर्बाद हो जाते हैं।[9]

संत जी ने सदाचार की महत्ता पर विशेष बल दिया। अच्छे आचरण के विषय में उन्होंने लिखा है-

"दुःख नहीं देना, झूठ मत बोलो, करो चोरी का त्याग,
बुरे कर्म से डरते रहना, नहीं किसी से लाग।"[10]

वृद्धों की सेवा करना भी सदाचार माना जाता है। संत जी ने भी कहा है-

"यह विनय सदाचार तथा नम्रता।
वृद्धजनों की सेवा से प्राप्त नर करता।"[11]

संत जी के अनुसार सांसारिक व्यवहार शास्त्रानुकूल होना चाहिए। यदि शास्त्रों का ज्ञान न हो तो श्रेष्ठ पुरुषों के आचरण का अनुसरण करना चाहिए- "सांसारिक व्यवहार शास्त्रानुकूल होना चाहिए। यदि शास्त्र ज्ञान न हो तो श्रेष्ठ पुरुषों के आचरण का अनुसरण करें। मर्यादा का कभी अतिक्रमण न करें।"[12]

संत ब्रह्मानन्द सरस्वती मानवतावादी थे। वे भारतीय होते हुए भी सम्पूर्ण मानवता से प्रेम करते थे। वे सम्पूर्ण सांसारिक कल्याण में भारत का कल्याण मानते थे। धार्मिक संकीर्णता से ऊपर उठकर वे लिखते हैं-

"बाईबिल, इंजिल साथ में कुरान।
धर्मग्रंथ सब दुनिया के इनको जी जान॥"[13]

उन्होंने मानव समुदाय को निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर मिलजुल कर रहने का आह्वान किया-

"साथ में आओ, साथ में जाओ, साथ में खाओ बांट।
ऐसा काम नहीं दुनिया में, जो लगे तुम्हारे आंट॥"[14]

संत जी ने सत्य को सबसे बड़ा तप माना है। सत्य की ही सदैव जीत होती है-

"सत्य की हमेशा जीत है, झूठ चले नहीं पैर।
झूठ मंडासा बांध्कर, किस को मिली है खैर॥"[15]

'नीति-विचार' में सत्य की महत्ता का गुणगान करते हुए कहा है कि सत्यमार्ग पर चलने वाले के लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं रहता।

संतों का जन्म ही परोपकार के लिए होता है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी लिखा है- **"परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।"**

परोपकार की भावना के विषय में संत ब्रह्मानन्द जी लिखते हैं-

"जो तुम चाहो मदद अपनी, खुद मददगार बनना होगा।
आसपास के अगड़ पड़ौसी, संग लेकर चलना होगा॥
सुखी जो कोई बनना चाहे, औरों को सुखी बनाना होगा।
अपने दुःख दूर करने से पहले, दूसरों के दुःख को हटाना होगा।"[16]

संत जी का तो सम्पूर्ण जीवन ही परोपकार के लिए समर्पित था।

जीवन में संयम एवं त्याग का अत्यन्त महत्त्व है। सांसारिक विषय वासनाओं के वश में होकर यह जीव (मानव) अपनी रस लोलुपता के कारण इनका परित्याग नहीं कर पाता है, अपितु भ्रमर के समान इस शरीर रूपी फूल के प्रति निरन्तर आसक्त रहता है। विषय वासनाओं को भोगते हुए लोग रोगग्रस्त होते रहते हैं। इसी सम्बन्ध में संत जी लिखते हैं-

"विषय ध्यान से काम जगेगा, काम रुकावट क्रोध।
क्रोध से बुद्धि विस्मित हो, विस्मित से मिटे बोध॥
बोध गया सब कुछ गया, पल्ले रहा न कुछ।
गंध गई मुस्कान गई, और फूल गया बुच॥
शटरस का जो त्याग करे, वही बनेगा योगी।

शटरस को भो-भोग कर, दुनिया हो रही रोगी॥"[17]

संत ब्रह्मानन्द जी के अनुसार सच्ची मित्रता मनुष्य के लिए वरदान के समान है। अच्छे मित्र और बुरे मित्र के विषय में संत जी ने लिखा है-

"सम्मुख दोष वर्णन, पीछे गुणों का गान।
गुण को पहले, दोष को पीछे, कहने में रहे ध्यान।
जिसने इस गुर को याद किया, वही मनुष्य प्रमाण॥
सम्मुख स्तुति पीछे निन्दा।
यह तो आदमी बिल्कुल गन्दा॥"[18]

लोक कल्याण के लिए नैतिकता अत्यन्त आवश्यक है। नैतिक मूल्यों से युक्त समाज विकास के मार्ग पर अग्रसर होकर उत्थान को प्राप्त करता है। संत ब्रह्मानन्द जी अपने प्रवचनों में नैतिकता पर खास जोर देते थे। उनकी नीतिपरायण वाणी उच्च आदर्शों को आत्मसात् करने में मानव को सक्षम बनाती है-

"झूठ कपट छल चोरी जारी।
इन पाँचों से बचो नर-नारी।"[19]

संत ब्रह्मानन्द सरस्वती के साहित्य में आहार-विहार की सात्विकता, ब्रह्मचर्य पालन पर विशेष महत्त्व दिया है। वे बाल ब्रह्मचारी थे। योगाभ्यास और प्राणायाम सिखाकर अपने शिष्यों को ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए सात्विक जीवन जीने के लिए प्रेरित करते थे-

"सवेरे तीन बजे उठकर करो जलपान।
मलमूत्र को त्यागकर दन्त धवन स्नान॥
आसन लगाकर, कर प्राणायाम।
भूल कभी न कर सुबह शाम॥"[20]

संत ब्रह्मानन्द जी ने सदैव माँस भक्षण और नशाखोरी का विरोध किया। वे जहाँ भी यज्ञ और भंडारे का आयोजन करते थे वहाँ माँसाहार निषेध का उपदेश देते थे। उन्होंने अपना सारा जीवन लोककल्याण हेतु समर्पित कर दिया परन्तु कभी भी धन-संग्रह नहीं किया। जनता द्वारा भेंट किए गए धन को वे पाठशालाओं, पुस्तकालयों, यज्ञों, भण्डारों में लगा देते थे।

अंत में कहा जा सकता है कि संत ब्रह्मानन्द सरस्वती जीवन भर लोककल्याण के कार्यों में लगे रहे और समस्त मानवता के कल्याण, उद्धार के लिए प्रयासरत रहे। शिक्षा का प्रचार, बाह्याडम्बरों का उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण, नारी-शिक्षा, देश-प्रेम, सत्य, संयम, त्याग, परोपकार, नैतिकता, सच्ची मित्रता एवम् ब्रह्मचर्य पालन आदि सद्गुणों, सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार कर श्रेष्ठ समाज की स्थापना करना ही उनके जीवन का मूल उद्देश्य था। उनके जीवन में लोककल्याण की भावना को स्पष्ट करती संत ब्रह्मानन्द सरस्वती जी की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

"सुखी जो कोई बनना चाहे, औरों को सुखी बनाना होगा।
अपने दुःख दूर करने से पहले, दूसरों के दुःख को हटाना होगा॥"[21]

"संत ब्रह्मानन्द सरस्वती ने तपस्या करके आध्यात्मिक शक्ति का अर्जन किया और उस अर्जित शक्ति को लोकोत्थान के लिए लगाया। उन्होंने नारी उत्थान, गौरक्षा, सामाजिक पिछड़ापन दूर करने, ग्रामीण जनता की पीड़ा को मिटाने के लिए शिक्षा के प्रचार को ही मार्ग चुना और इसके लिए गुरुकुल ओ३म्पुरा तथा आश्रमों की स्थापना की। उन्होंने पंचरंगे झण्डे को लेकर संसार को कल्याण का मार्ग दिखाया और भूली भटकी जनता को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया तथा अपना 'ब्रह्मानन्द' नाम सार्थक किया।"[22]

संदर्भ

(1) रघुबीर सिंह 'मथाना', संत ब्रह्मानन्द सरस्वती : व्यक्तित्व एवं दर्शन, पृ. 70

(2) शान्तस्वान्तं सरलहृदयं ब्रह्मनिष्ठं वरिष्ठं,
वन्दे वन्द्यं प्रथितयशसं सर्वलोकाभिनन्द्यम्।
दिव्यं भव्यं विमलचरितं पूज्यपादं महान्तं,
ब्रह्मानन्दं प्र तिमधुरं योगिवर्य प्रशस्यम्॥

-पं. विद्यानिधि शास्त्री, श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द स्तोत्रम्, पृ. 5

(3) पं. विद्यानिधि शास्त्री, श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द स्तोत्रम्, पृ. 25; **(4)** ब्रह्मानन्द सरस्वती, श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द पचासा, चौहान प्रिंटिंग प्रैस, पूंडरी, पद-65, पृ.3; **(5)** वही, पद-451, 468, पृ. 52-53; **(6)** वही, पद-229, पृ. 26; **(7)** मनुस्मृति, 3/56; **(8)** श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द पचासा, पद-142, पृ. 20; **(9)** श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द नीति-विचार, पृ. 8; **(10)** श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द पचासा, पद-115; **(11)** श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द नीति-विचार, पृ. 6; **(12)** वही, प्रकरण 9; **(13)** श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द पचासा, पद-55, पृ. 12; **(14)** वही, पद-396, पृ. 38; **(15)** वही, पद-391, पृ. 42; **(16)** वही, पद-237, 238, पृ. 31; **(17)** वही, पद-218, 219, 265; **(18)** वही, पद-155, 156, पृ. 22; **(19)** वही, पद-67; **(20)** वही, पद-6.4, 605, पृ. 63; **(21)** वही, पद-238, पृ. 31; **(22)** डॉ. बाबूराम, संत शिरोमणि ब्रह्मानन्द सरस्वती, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद, पृ. 54

❒ **डॉ. सुनीता देवी**
सहायक प्रोफेसर (हिन्दी)
के.वी.ए.डी.ए.वी. कॉलेज फॉर वूमैन,
करनाल (हरियाणा)

गुरु जम्भेश्वर : जुग चौथे दसवौं विसन

महापुरुषों से जुड़े प्रसंग, घटनाएं, दिवस आदि महत्वपूर्ण होते हैं, जिनको लोग चिरकाल तक स्मरण करते हुए महापुरुषों की स्तुति करते हैं ताकि उनके जीवन चरित से प्रेरणा पाकर और उनके पद्चिह्नों पर चलते हुए अपना जीवन संवार सकें। इनमें सबसे महत्वपूर्ण होता है वह दिन जब कोई महान आत्मा अवतार लेती है। कृष्णावतार दिवस अर्थात् जन्माष्टमी महापर्व का महत्त्व द्वापर काल से लेकर आज तक बना हुआ। अवतार शब्द का शब्दिक अर्थ है- उतर आने की प्रक्रिया। प्रभु के अवतरण को ही अवतार कहा जाता है और सभी अवतार दिवसों में जन्माष्टमी को सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

श्री कृष्ण को पूर्णावतार माना जाता है जिनके होठों पर बांसुरी है तो हाथ में सुदर्शन चक्र, ऐसा लोकरंजक लोक मंगलकारी अवतार अन्यत्र न देखा न सुना गया था। कृष्ण लीला का ही प्रभाव है कि पूरा का पूरा ब्रज मंडल आज तक कृष्णमय बना हुआ है। कृष्ण का गीता संदेश आज संपूर्ण विश्व के कर्मठ लोगों का प्रेरणास्त्रोत है तथा कृष्ण की लीलाओं को आज भी ब्रज में महसूस किया जा सकता है। कृष्णावतार अर्थात् भगवान विष्णु का इसी दिवस (जन्माष्टमी) को पुनः अवतरित होना (जम्भावतार) महज संयोग है या सोच विचार कर किया गया कार्य। ईश्वर की इस विचित्र लीला को कौन समझे ?

परित्राणाय साधुनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभावामि युगे-युगे॥

गीता के इस श्लोक में इतना अवश्य इंगित है कि प्रभु अवतार विशिष्ट कार्य के लिए ही होता है। जहां द्वापर में श्री कृष्ण ने कंस दमन से लोगों को मुक्त किया। वहीं कलियुग अवतारी भगवान जाम्भोजी ने लोगों को मुक्तिमार्ग दिखलाया। इन अवतारों से पूर्व भगवान विष्णु के सतयुग में मच्छ, कच्छ, वराह और नृसिंह अवतार हुए। त्रेता युग में वामन और परशुराम के रूप में विष्णु प्रकट हुए तथा द्वापर में कृष्ण तथा बुद्ध रूप में। इस प्रकार कलियुग में भगवान जम्भेश्वर के रूप में प्रकट हुए तथा अवतार के कार्यकारण के संबंध में वे सबदवाणी के शब्द संख्या 99 में बताते हैं।

पंच करोड़ी पहलादौ तरियौ, खरतर करी कमाई।
सात करोड़ी ले राजा हरिश्चन्द्र तरियौ, तारादे रोहितास हरिश्चन्द हाटो हाट विकाईं
नव करोड़ी ले राव दहुठल ले तरीयौ धन कूंतां दे माई।
बारा कोड़ि समाहण आयौ पहराजा सौ वाचा कवल विथाई॥ सबद-99

इस शब्द में उन्होंने बताया है कि सतयुग में विष्णु भक्त प्रह्लाद सहित 33 कोटि विष्णु के अनुयायी थे तथा भगवान ने इस तैंतीस कोटि जीवों के उद्धार का वचन दिया था। इनमें से पांच कोटि जीवों की हत्या हिरण्यकश्यपु ने कर दी थी। तब नृसिंह अवतार भगवान विष्णु ने प्रह्लाद को वचन दिया था कि वो अपने वचन का पालन त्रेता, द्वापर तथा कलियुग में भी पूरा करेंगे। इस प्रकार पांच करोड़ जीव प्रह्लाद के साथ, सात कोटि हरिश्चन्द्र के साथ, नव कोटि जीव युधिष्ठर के साथ तरे तथा शेष 12 करोड़ जीवों के उद्धार के लिए भगवान जाम्भो जी अवतरित हुए। अपने पूर्वावतारों के बारे में वे सबदबाणी में कहते हैं।

"नव अवतार नमो नारायण तेपण रूप हमारा थीयौं" अर्थात् ये नौ अवतार मेरे ही थे। गुरु जाम्भो जी ने प्रह्लाद को दिए वचन को पूरा करने के लिए इस कलियुग में ही सबसे सरल मार्ग बताया कि जीवन में उनतीस नियमों को अपनाने पर न केवल आपका जीवन सुखमय होगा अपितु आपका मुक्ति मार्ग भी प्रशस्त होगा। (जीवां न जुगति, मूवां न मुक्ति)

इस जीवन मार्ग पर चलना अर्थात् उनतीस नियमों का पालन करना भी सरल कार्य है। इन नियमों को मानने के लिए गृह त्याग या कठोर तपस्या जैसा कोई विधान नहीं अपितु यह कर्म प्रधान मार्ग है। इन नियमों में सत्य बोलना, चोरी निंदा न करना, शराब, भांग, अफीम आदि नशों का सेवन न करना, पानी को छान कर पीना, प्राणी मात्र पर दया करना, हरा वृक्ष नहीं काटना, संध्या, विष्णु गुणगान करना आदि सरल नियम हैं। इन नियमों का जीवन पर्यन्त पालन करने से मोक्ष की प्राप्ति संभव है। मोक्ष के लिए आडम्बरों को नकारते हुए वे कहते हैं कि **"अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर, बाहर लोकाचारूं"**।

इस प्रकार का सरल मार्ग सुझाने वाले गुरुवर जाम्भो जी का अवतार भी जन्माष्टमी के दिन हुआ था। तथा

अनेक कार्यों में कृष्णावतार व जम्भावतार में समानता रही है। यथा जन्म, गौ-चारण, लीलाएं आदि। इस अवतार का वर्णन कवि सुरजन जी इस प्रकार करते हैं :-

संवत् पन्द्रह सौ अठोतरे कृतका नक्षत्र प्रमाण।
भादो वदि अरू अष्टमी, चन्द्रवार पुनि जाण॥

जन्माष्टमी की समानता के अतिरिक्त कवि वर साहब ने जम्भावतार की तुलना कृष्णावतार से कुछ इस प्रकार की है:-

'जम्भ गुरु के चरित अपारा, सुर नर मुनिजन लहतन पारा
लोहट है नन्दराय जसोदा हांसा भाई,
मरूस्थल है बिरज भौम, पीपासर बिरज है सही।
पीपासर बिरज है सही नै, वचन के प्रतिपाल।
किसन कवल के कारणै, गुरु जम्भ लियो अवतार।
सतलोक को छोड़ के, गुरु किया भगवां भेस।
जेठ बदि नौमी दिना, गुरु कियो नंद उपदेश।
साहब सतगुरु है सही।

कवि साहब राम का उपर्युक्त वर्णन बताता है कि जम्भावतार कृष्ण का ही पुनः आगमन है, जिसमें नन्द-यशोदा तथा ब्रज की समानता लोहट-हंसा तथा पीपासर से करते हैं। यह समानता मात्र कवि की कल्पना नहीं हो सकती, बल्कि पूर्वावतारों की अधूरे वचन पालन की शृंखला से ऐसा संभव हुआ है। अवतारों के संबंध में कवि साहब राम जी अवतार मीमांसा में बताते हैं :-

च्यार भांत प्रभु के अवतारा। निरणयै करत श्रुति निरधारा।
स्वयं अंस सुर कारज कीन्हां। सत्य कला प्रभु दरसन दीन्हां।
प्रिथम भए हंसा अवतारा। ब्रिह्मा प्रति प्रभु वचन उचारा।
निमत अवतार भए जग च्यारी। वराहा भए अरू धरा उधारी।
तीसर सत्य भए प्रभु आई। दुःख हरिचन्द के दूर नशाई।
चवथै भऐ जंभ अवतारा। जन प्रहलाद का कारज सारा।
जंभ ही कला सकल अवतारा। सुयं सरूप राम वपुधारा।
जंभ कला ही कृष्ण है, प्रद्युमनादि अनिंरूध।
राम लक्ष्मण भरथ सत्रुहन, बुद्ध अवतार विसुद्ध॥

कवि द्वारा वर्णित इस मीमांसा से स्पष्ट है कि गुरु जाम्भोजी ही विष्णु के अवतार थे। कुछ विद्वान कलियुग से पूर्व नौ अवतारों को स्वीकार करते हैं तथा कलियुग के लिए कलि अवतार की कल्पना करते हैं। जबकि यह अवतार गुरु जाम्भो जी के रूप में हो चुके हैं। पूर्वावतारों में अधिकतर ने किसी न किसी दुष्ट का नाश किया था। किन्तु भगवान जाम्भो जी ने समाज में फैली दुष्टता या बुराई को नष्ट करने के लिए समाज के लिए उनतीस नियमों को सुझाया था। जिससे कि एक उत्तम समाज का निर्माण हो सके। इस प्रकार के समाज में कोई बुराई न हो तथा इसकी श्रेष्ठता अनन्तकाल तक बनी रहे। समाज के संभावित खतरों के प्रति गुरु जाम्भो जी ने सैकड़ों वर्षों पूर्व ही इंगित कर दिया था यथा जिन पर्यावरणीय खतरों की बात हम आज करते हैं, इसके संरक्षण का मार्ग गुरु जी ने बहुत पहले ही बता दिया था। इस प्रकार युगद्रष्टा गुरु जाम्भो जी विष्णु के ही अवतार थे जिनकी महिमा कवि श्री वील्हो जी इस प्रकार गाते हैं :-

"जुग चौथे दसवैं विसन, संतां करण संभाल।
वील्ह कहै एक विनती, कथा चौपाई-ढाल॥"

❐ **मोहन बिश्नोई**
गांव व डा. रत्ताखेड़ा, तह. रतिया,
जिला फतेहाबाद मो. 9466729957

अ.भा. गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति की नई कार्यकारिणी गठित

अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति की नई कार्यकारिणी (2014-2016) के चुनाव हेतु समिति की आम सभा की बैठक 20 जुलाई 2014 को मुख्य संरक्षक श्री प्यारेलाल कड़वासरा की अध्यक्षता में हुई। जिसमें सर्वसम्मति से श्री जगदीश कड़वासरा को प्रधान, श्री सुभाष गोदारा को उपप्रधान, श्री विजयपाल गोदारा को महासचिव, श्री रामेश्वर बैनीवाल को कोषाध्यक्ष तथा श्री जयदेव खिलेरी को आडिटर मनोनीत किया गया।

समिति के पूर्व महासचिव डॉ. मदन खीचड़ ने वर्ष (2012-14) में किए कार्यों तथा आय-व्यय विवरण आम सभा में प्रस्तुत किया तथा आम सभा ने पिछली कार्यकारिणी द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की। पूर्व प्रधान श्री ओमप्रकाश जाजूदा ने गत कार्यकारिणी को दिए सहयोग के लिए धन्यवाद किया तथा नई कार्यकारिणी के चुनाव का प्रस्ताव रखा।

नवनियुक्त प्रधान श्री जगदीश कड़वासरा ने आमसभा को विश्वास दिलाया कि नई कार्यकारिणी समाज हित व कर्मचारियों साथियों के लिए और अधिक कार्य करने का प्रयास करेगी।

विजयपाल गोदारा, महासचिव

सुकरत अहल्यौ न जाई

मानव स्वभाव से ही कर्मशील प्राणी है। वह कर्म किए बगैर रह ही नहीं सकता है भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता में कहा है कि–

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिण्ठतत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः॥ 3(5)॥

मनुष्य से कर्मों का त्याग हो भी नहीं सकता है क्योंकि वह पल भर भी कर्म किए बिना नहीं रह सकता है। निस्सन्देह सभी पुरुष प्रकृति से उत्पन्न हुए गुणों द्वारा परवश हुए कर्म करते हैं। विश्राम की अवस्था में बैठा व्यक्ति शारीरिक रूप से भले ही निष्क्रिय दिखाई देता हो परन्तु मानसिक रूप से वह कर्मशील रहता है तभी तो महात्मा बुद्ध ने 'चित्त की चेतना' को ही कर्म कहा है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार "कर्म शब्द कृ धातु से निःसृत है जिसका अर्थ है कुछ करना (to do)।" अतः जो कुछ भी किया जाता है वह कर्म है। हमारा बोलना, सुनना, साँस लेना, चलना, शारीरिक व मानसिक क्रियाएं सब कुछ कर्म है और प्रत्येक कर्म हमारे मन पर एक प्रभाव (चिह्न या छाप) छोड़ जाता है, इसे हम संस्कार कहते हैं। इन्हीं संस्कारों के समुच्चय (सामूहिक प्रभाव) से हमारे चरित्र का निर्माण होता है तथा यही चारित्रिक विशेषताएं हमारे अगले कर्मों का आधार होती हैं।

कर्मवादी भारतीय संस्कृति की आधारभूत विशेषता है। श्रीमद्भागवद् गीता तो ज्ञानयोग, कर्मयोग व भक्ति की त्रिवेणी है। अर्जुन को मोह त्यागकर कर्मक्षेत्र में कूद पड़ने की प्रेरणा इसका मुख्य सन्देश है। "कर्मण्येवधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" अर्थात् हे मनुष्य! तुझे केवल कर्म करने का अधिकार है फल का नहीं। अर्थात् तू निष्काम (बिना किसी फल की कामना के) कर्म किए जा।

हिन्दू धर्म शास्त्रों में कर्म को तीन भागों में विभक्त किया गया है– प्रारब्ध, संचित और क्रियमाण। प्रारब्ध वे कर्म है जिनका फल हमें मिल रहा है और हमारा जीवन व परिस्थितियां इन्हीं प्रारब्ध कर्मों के अनुसार निर्मित होती है। संचित कर्म वे कर्म है जो हम अतीत में कर चुके हैं परन्तु उनका फल मिलना अभी शुरू नहीं हुआ है। क्रियमाण कर्म वे कर्म है जो हम अपने विवेकानुसार अब कर रहे हैं। कालान्तर में यही कर्म संचित होकर हमारा प्रारब्ध बनेंगे तथा हमारे भविष्य को निर्मित करेंगे। अतः कर्म व फल का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित व अटल है तभी तो महात्मा बुद्ध ने कर्मों से मुक्ति को जीवन मुक्ति या निर्वाण कहा है वे कहते हैं "जिस प्रकार बीज के जल जाने पर उससे वृक्ष पैदा नहीं होता है उसी प्रकार कर्म रूपी बीज के नष्ट हो जाने पर पुनर्जन्म रूपी वृक्ष उत्पन्न नहीं होता है।"

यद्यपि गीता ने निष्काम कर्मयोग का सन्देश दिया है तथापि कोई भी प्राणी किसी भी निरुद्देश्य कार्य को नहीं करता है। फिर मनुष्य तो सबसे विकसित व विवेकशील प्राणी है। अतः बिना किसी कामना के कार्य करने की बात तार्किक व व्यावहारिक प्रतीत नहीं होती है। मनुष्य अपने कर्मों में स्वतन्त्र है वह विवेकपूर्ण ढ़ग से परमार्थ हेतु सत्कर्म भी करता है व क्षुद्र स्वार्थों व वासनाओं के वशीभूत होकर दुष्कृत्य भी क्योंकि अरस्तु के शब्दों में वह एक 'सामाजिक प्राणी (Social Animal) है। अतः उसके कर्म व समाज परस्पर प्रभावित होते रहते हैं।

यद्यपि वह रूसो के शब्दों में "स्वतन्त्र पैदा होता है परन्तु वह हर जगह खुद को बंधनों में पाता है।" समाज नैतिक, सामाजिक, वैधानिक, धार्मिक आदि अनेक बन्धनों द्वारा उसकी स्वतन्त्रता व कर्मों को नियंत्रित व निर्देशित करता है।

आप विचार कुछ और करते हैं परन्तु समय पर काम कुछ और कर जाते हैं। इसका कारण विचार और भाव में भिन्न होता है, आप तय करते हैं कि मैं क्रोध नहीं करूंगा। आप विचार करते हैं कि क्रोध बुरा है, लेकिन जब क्रोध आपको पकड़ता है तो आपका विचार एक तरफ पड़ा रह जाता है और क्रोध हो जाता है जब तक भाव के जगत में परिवर्तन न हो केवल विचार के जगत में सोच विचार से कोई क्रान्ति जीवन में नहीं होती है। शुभ कर्मों की महत्ता के कारण सभी धर्मों तथा महापुरुषों ने व्यक्ति को सत्कर्म की प्रेरणा दी है। इसी कड़ी में श्री जाम्भोजी ने अपनी वाणी में सुकृत (शुभ कर्मों) का महत्व प्रतिपादित करके मानवता का पथ आलोकित किया है। वे कहते हैं कि अति उच्च कुल में जन्म लेने से कोई ऊँचा नहीं हो जाता है व्यक्ति अपने शुभ कार्यों से महान बनता है।

उत्तम कुली का उत्तम न कहिबा, कारण किरिया सारूं।

उन्होंने नम्रता, दया, क्षमा आदि दिव्य गुणों को धारण करने व कर्तव्य (करणीय कार्य) करने पर बल दिया है।

नवियै नवणी, खंवियै खवणी, जरियै जरणी
करियै करणी, सीख हुए घर जाइयै ॥

क्योंकि यह संसार तो अस्थाई ठिकाना (गोवलवास) है परन्तु हम यहाँ जो कमाई (सुकृत) करेंगे वह अवश्य साथ जाएगी, व्यक्ति को शुभ उद्देश्य के लिए वर्षा की भांति परोपकारी जीवन व्यतीत करना चाहिए।

"पर उपगार ऐसा ज्यूँ घन बरसता नींरू"

'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' लोगों को शिक्षा देते हुए गुरु महाराज कहते हैं कि- **पहलै किरिया आप कुमाईयै, ताँ अवरां न फुरमाइयै ॥**

यह नश्वर शरीर एक दिन सुपुर्द-ए-खाक हो जाएगा इसलिए इसे शुभ कर्मों द्वारा सार्थकता प्रदान करने की शिक्षा कवि सुरजन जी इन शब्दों में देते हैं-

सागर खार मिटै मेरा जीयो, सुकरत करि संसारी।
ओ तन खाक मिलै मेरा जियो, पर उपगार चितारी ॥

हमें परोपकारी जीवन जीते हुए हक-हलाल की कमाई द्वारा सम्यक् आजीविका चलानी चाहिए तथा न्याय व सच्चाई के रास्ते पर चलना चाहिए क्योंकि सुकृत्य कभी व्यर्थ नहीं जाता है उसका फल अवश्य मिलता है।

"हक-हलाल हक साँच किसंनू, सुकरत अहल्यौ न जाई"

यदि हम ऐसा करने में असमर्थ रहते हैं तो हम अपने कर्मों के लिए स्वयं जिम्मेवार है तथा ईश्वर को दोष देते हैं यद्यपि यह हमारे बुरे कर्मों का फल ही है जो हमें कष्टों के रूप में प्राप्त हो रहा है।

विसन नै दोष किसो रे प्राणी, तेरी करणी का उपगाँरू।

हमें सुकरत करते हुए मार्ग में आने वाली बाधाओं से घबराना नहीं चाहिए तथा अपने शुभ कर्म जारी रखने चाहिए तथा विष्णु नाम का जाप करते हुए कर्ममय जीवन व्यतीत करना चहिए-

"विष्णु जपंतां जीभ जू थाकै, तो जीभड़ियां बिन सरियो।
सुकरत करता हरकत आवै, तो न पछतावै करियो।

कर्ममय जीवन का उपदेश देते हुए गुरु जी कहते हैं कि जिस प्रकार दाने के बिना भूसी व रस के बिना गन्ना असार हो उसी प्रकार सुकरत विहिन परिवार भी असार है-

"कण बिन कूकस, इस विणि वाकस बिन किरिया परिवार किसों"

उन्होंने दुविधा वृति त्यागकर एकाग्रचित होकर सच्चे मन से कर्त्तव्य पालन का उपदेश किया-

"दोय दिल दोय मन सीवीं न कंथा"
दोय मन दोय दिल, कहिये न कथा ॥"

मनुष्य को अशुभ कार्यों से बचने की शिक्षा देते हुए गुरु जम्भेश्वर अनुचित साधनों के प्रयोग व नीच कर्म करने वालों की पूजा-उपासना को भी व्यर्थ बताया है- **"कारण खोटा, करतब हीना, थारी खाली पड़ी नवाजूं!**

इसी प्रकार संत सुरजन जी ने भी मनुष्य को कच्चे (बुरे) कर्मों से दूर रहकर मुक्ति प्राप्त का उपदेश दिया-

"जगत बिहूणा मुक्ति ना होई, करतब न कर काचो।
झूठे-झूठे हुवैले भारी, सांचा पंथ सो साचों ॥"

भक्त कवि उदौ जी नैण ने भी सुकरत किए बिना मनुष्य जन्म को निष्फल माना है:-

"उधव औसर बीतगो, चैत्यो नहीं गंवार।
सुकरत कियौ न हरि भज्यौ, गयौ जमारो हार ॥"

गुरु जी कहते हैं कि जिनके कर्म ओछे (हीन) है वे न तो सांसारिक सुख उठा पाते हैं तथा न ही आवागमन से मुक्त हो सकते हैं।

"ओछी किरिया आवै फिरिया, भ्रान्ति भिसत न जाई।"

केवल शुभ कर्म ही मनुष्य के साथ चलते हैं बाकि सब कुछ यहीं धरा रह जाता है क्योंकि 'कफन में जेब व ताबूत में तिजोरी' नहीं होती है।

सुकृत साथ सखाई चालै।

जीवन की क्षणभंगुरता व मृत्यु की अव यंभाविता को याद दिलाते हुए गुरु जी कहते हैं कि तुम्हें जो कुछ करना है वो अभी कर करलो क्योंकि जीवन का पल भर का भी भरोसा नहीं है।

"जो कुछ कीजै मरने पहले, मत भलकई मर जाइयौ"

अंत में कर्ममय जीवन की प्ररेणा का उपदेश देते हुए गुरु जम्भेश्वर कहते हैं कि हमें हृदय से प्रभु नाम का सिमरन करते हुए हाथों से अच्छे कार्य करने चाहिए।

"हिरदै नावं विसन को जंपौ, हाथै करो टबाई"

❐ **अनिल कुमार**
गाँव नाढोड़ी जिला फतेहाबाद
मो. : 98966-10800
Email: anil29dharnia@gmail.com

आलेख

गुरु जाम्भोजी की वाणी में लोक चेतना

आज हम नैतिक पतन, सांस्कृतिक क्षरण, सामाजिक विसंगतियों तथा धार्मिक पराभव के युग में जी रहे हैं। मानवता, प्रेम, करुणा, दया एवं प्राणी मात्र के प्रति सहानुभूति जैसे गुणों का ह्रास तथा दूषित जीवन शैली वर्तमान में हमारे लिए सबसे विकट चुनौती है। ऐसे समय में धर्म, अध्यात्म, दर्शन एवं नैतिक आचरणों से परिपूर्ण संतों की वाणी तथा उनकी लोक-चेतना जन साधारण के लिए प्रेरक होगी। वर्तमान की त्रस्त, कुण्ठित, दिशाहीन, भ्रमित एवं भोगवादी संस्कृति की ओर उन्मुख जनता के लिए गुरु जाम्भोजी का दर्शन उपयोगी एवं पथ-प्रदर्शक है। जाम्भोजी द्वारा प्रदत्त सादा-जीवन, उच्च-विचार का दृष्टिकोण, श्रमशीलता, प्रकृति से निकटता तथा शुद्ध-सात्विक जीवनाचरण की शैली वर्तमान पीढ़ी के लिए उपयोगी एवं अनुकरणीय होगी।

गुरु जाम्भोजी अपने समय की महान् विभूति थे। उनकी वाणी लोक की मुक्ता-माणिक है। वे उच्च कोटि के विचारक एवं संत थे। इन्होंने नश्वर, आत्मा, मोक्ष, जीव, जन्म-मरण के विषय में विचार प्रकट किये तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए नाम स्मरण, गुरु के महत्व तथा सत्संग के लाभ को भी बताया। उन्होंने निर्गुण व सगुण तथा कथनी व करनी का समन्वय किया। जीवां ने जुगती, मुवां ने मुक्ति का संदेश दिया अर्थात् युक्ति युक्त जीवन यापन करते हुए, मृत्यु के पश्चात् मोक्ष की प्राप्ति कर सके, इस हेतु सद्मार्ग दिखाया। ऐसे ही नियमों पर आधारित बिश्नोई पंथ का प्रवर्त्तन किया। ये नियम अत्यन्त वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक हैं तथा मनुष्य मात्र के लिए कल्याणकारी और उपयोगी हैं। जाम्भोजी की वाणी सरल, सम्यक एवं व्यवहारपरक है। इन्होंने दर्शन के गूढ़ सिद्धान्तों को जन सामान्य की बुद्धि के अनुरूप सरल लोक भाषा में अभिव्यक्त किया। जाम्भोजी की लोक-चेतना अत्यन्त मानवपरक एवं कल्याणकारी हैं।

बिश्नोई पंथ के प्रवर्त्तक गुरु जाम्भोजी का जन्म भाद्रपद कृष्णा 8 संवत् 1508 (1451 ई.) सोमवार की अर्द्धरात्रि में हुआ था। गुरु जाम्भोजी जन्म से ही अद्भुत व्यक्तित्व संपन्न थे। जाम्भोजी ने समराथल पर वि.सं. 1542 (1482 ई.) में कार्तिक कृष्णा अष्टमी को कलश स्थापना कर अपने मत (बिश्नोई पंथ) का प्रवर्तन किया तथा लोगों को ज्ञानोपदेश दिया।

बिश्नोई पंथ के संस्थापक गुरु जाम्भोजी के दो नियम जीव दया पाळणी, अर रूंख लीलो नहीं घावै का अक्षरश: पालन करते हुए बिश्नोई पंथ ने विश्व में अनूठी मिसाल कायम की है, इससे बड़ा लोक चेतना का मूर्तस्वरूप क्या हो सकता है। 'जम्भवाणी' में गुरु जाम्भोजी ने जन्मधारी जीवों, देवी-देवताओं, जपी, तपी, पीर तथा आकाशचरों आदि सभी की उपासना का निषेध करते हुए निर्गुण निराकार ईश्वर को स्मरण करने बात कही है।

'जपी, तपी तक पीर रषो सर,
कांय जपीजै, ते पांणि जायां जीयौं।
खेचर, भूचर, खेतरपाळा परगट गुपता।
वसिग सेस गुंणिद फुणिंदा।
चौसटि जोगंणि बांवन वीरू,
कांय जपीजै तै पांणि जाया जीयौ,
जपां त एक निरालंभ सिंभू,
जिंहके माई न पीयौ।

गुरु जाम्भोजी ने मुस्लिम समाज में व्याप्त बाह्य आडम्बरों का तीव्र विरोध करते हुए कहा-

"चड़ि-चड़ि भींते, मड़ी मसीते, क्यूँ उलबंग पुकारो,
दिल साबति हज काबो नैड़ौ, क्यां उलबंग पुकारो।
कारण खोटा करतब हीणां, थारी खाली पड़ी निवाजूँ

मुसलमानों में धर्म के नाम पर की जाने वाली हिंसा के प्रति चेतावनी देते हुए कहा :-

सुंणि रे काजी सुंणि रे मुल्ला सुंणि रे बकर कसाई।
किण री थरपी छाळी रोसो, किणरीगाडर गाई?
चर फिरि आवै सहजि दुहावै तिंहका खीर हलांली।
तिंहिकै गळै करद क्यौं सा रौ, थे पढ़ि गुंणि रहिया खाली।"

गुरु जाम्भोजी ने बाह्याचारों से ग्रस्त लोगों को सावचेत करते हुए कहा कि दर्शन मात्र से कार्य सिद्धि नहीं होते अपितु चेतन होकर तथ्य को समझने की आवश्यकता है।

'गोरख दीठै सिध ने होयबा, पोह उतरिबा पांरू
कलिजुग बरतै चेतो लोई, चेतो चेतण हारू।

मध्यकालीन समाज में धर्म के नाम पर फैले तथाकथित तंत्र-मंत्र, डाकिन-साकिन आदि अंधविश्वासों पर करारा प्रहार करते हुए मन को ही योग साधना का केन्द्र बताया।

डाकिणि साकणि निंद्रा खुध्या,
अै म्हारे तांबै कूप छिपायो।
म्हारै मनही मुंदरा, तन ही खंथा,
जोग मारग सह कीयो।

14वीं-15वीं शताब्दी में नाथों, जोगियों के पाखण्डों, आडम्बरों एवं उनके अजीबोगरीब आचार-व्यवहारों से जनता त्रस्त थी, ऐसे नाथों के खिलाफ ताल ठोककर जाम्भोजी कहते है :-

नाथ कहावै मरि मरि जावै
थे क्यों नाथ कहावै
नान्हीं पवणी (मोटी) जीवा जूंणी निरजत सिरजत,
फिरि फिरि पूठा आवै।

गुरु जाम्भोजी ने समाज में मूर्तिपूजा एवं तथाकथित बाह्य दिखावों पर कटु शब्दों में व्यंग्य किया है-

'धवणां धूजै पांहण पूजै, वैफुरमांण खुदाई।
गुर चेलै कै पाए लागै, देखौ लोग अन्याई।
काठी कंणिजौ रूपा रेहण, कापड़ मांहि छिपाई।
नीचा पड़ि पड़ि तिंह नै धोकै, धीरा रे हरि आही।
बांभण नाउं लादण रूड़ा, बूता नाउं कूता।

गुरु जाम्भोजी ने लोगों को आचरण की शुद्धता, शील का पालन, संयम एवं सत्य आदि नैतिक नियमों की पालना हेतु प्रेरित करते हुए इनके महत्व से अवगत कराया।

सुचि सिनांने संजमे चालौ पांणी देह पखाळी।
गुरु के वचने नविं खविं चालौ,
हाथि जपौ जप माळी।

उन्होंने तत्कालिक दिग्भ्रमित जनता को जीवन जीने की उचित विधि बताते हुए नम्रता, क्षमा एवं स्वभाव की सरलता अपनाने का संदेश दिया-

'जीवत मरो रे जीवत मरो, जिण जीवंण की विधि जांणी।
जे कोई हो हो होय करि आवै, तो आपण होइयै पांणी।
जांहकै बोहती नवंणी बोहती खंवणी,
बोहती किरिया समांणी।'

गुरु जाम्भोजी स्वयं भी आजीवन क्रियाशील रहे तथा उन्होंने जनता को परिश्रम एवं कर्म के महत्व बताते हुए व्यक्ति एवं समाज की उन्नति हेतु आवश्यक कहा -

"कणं विणि कूकस, रस विणि वाकस,
विणि किरिया परिवार किसौ।"

संसार में भ्रमित लोग कार्य न करके निरन्तर अपने भविष्य के विषय में जानना चाहते हैं तथा जीवन में सदैव भविष्य वक्ताओं के मुँह ताकते हुए सुखद परिवर्तन की आशा में निठल्ले बने रहते हैं, उन्हें चेतन करते हुए कहा है-

हाळी पूछै पाळी पूछै, आ कळि पूछंण हारी।
थळी फिरंतो खिलहरी पूछै, मैं र गुमाई छाळी।
बांण चहोड़ि पारधियो पूछे, सांमी! किंहि गुंण चूकै चोट हमारी।
रोह रोह मूरिख मुगध गिवांरा, करौ मजूरी पेट छलाई।

जाम्भोजी ने लोगों को कथनी एवं करनी में साम्य रखने का पाठ पढ़ाया-

'पहलू किरिया आप कुमाइयै, तो अवरां नै फुरमाइयै।
जे क्यौंह कीजै मरण पहलू, मत भळकइ मर जाइयै।'

जन सामान्य को 'सादा जीवन उच्च विचार के विषय में कहा तथा स्वयं भी आजीवन अत्यंत साधारण जीवन जीते रहे।

म्हे आप गरीबी तन गूदड़ियो,
कारण किरिया देखो।"
विंदो विवरौ विवरि विचारौ,
भूलि स नांही लेखो।

उन्होंने कहा कि हक की कमाई जैसी भी मिले, बिना संकोच सहर्ष स्वीकार कर लिया जाये :-

'खरड़ औढ़ीजै, तूंबा जीमीजै, सुरह दुहीजै
किरत खेत की सीवं मैं लीजै पीजै उडा नीरूं"

जीवन के साधारण मूल्यों से अनभिज्ञ, लोगों से संबंध जोड़ा तथा अज्ञानी, पीड़ित, संत्रस्त, अभाव ग्रस्त तथा 'असभ्य' कहे जाने वाले साधारण लोक के जीवन को उन्नत बनाने का कार्य किया। जाम्भोजी ने लोक में चेतना फूंकने हेतु उन्हीं की सरल, निश्छल, अकृत्रिम एवं ओजस्विनी भाषा में संदेश दिया।

चांदणै थकै अंधेरै कांय चालो भूलि रह्या गुरवाटो,
नूरथकै घट थूळ क्यों राखो सबळ विगोवो खाटो।

गुरु जाम्भोजी की वाणी तथा उनकी लोक-चेतना को समझकर, स्वाध्याय कर तथा व्यवहार रूप में ग्रहण करके ही मानव जाति अपना कल्याण कर सकती है। जाम्भोजी की लोक-चेतना केवल अध्यात्मपरक ही नहीं अपितु व्यक्ति, समाज के अनुरूप एवं वैज्ञानिक दृष्टियुक्त है। गुरु जाम्भोजी का चरित्र, उनकी कर्मशीलता, पर्यावरण संरक्षण का सिद्धान्त, गौ पालन, पशु पक्षियों के प्रति दया भाव, जीव रक्षा का सिद्धान्त तथा नित्य-प्रति प्रत्येक व्यक्ति द्वारा यज्ञ और हवन करने की परम्परा आज के युग में आदर्श स्वरूप है। इन नियमों का पालन करके प्रदूषित वातावरण से मुक्त होकर स्वस्थ-शुद्ध पर्यावरण निर्मित किया जा सकता है। इन्होंने वाणी में आन्तरिक एवं बाह्य शुद्धता की आवश्यकता पर बल दिया, जो कि व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य हेतु आवश्यक है।

गुरु जाम्भोजी की वाणी में जात-पात व वर्ण-व्यवस्था का विरोध, आर्थिक शोषण के प्रति आक्रोश, कदाचारों का विरोध, दुर्व्यसन व सामाजिक कुरीतियों की भर्त्सना, हिन्दू-मुस्लिम एकता, धर्म निरपेक्षता, जातीय एकता, श्रम-साधना, कर्म का महत्त्व, सादगीपूर्ण जीवन पद्धति का अंगीकरण आदि नियम प्रत्येक मनुष्य के लिए स्वस्थ जीवन दृष्टि निर्मित करने में सहायक है। इनका पालन करते हुए व्यक्ति अपने व्यक्तित्व तथा समाज का सर्वांगीण विकास कर सकता है।

गुरु जाम्भोजी ने शील व सदाचार पर बल देते हुए आत्मोत्थान तथा नैतिक विकास के लिए सत्संग, नाम स्मरण तथा सद्गुरु की महिमा का उल्लेख किया। उनका सम्पूर्ण साहित्य अद्वैतवाद पर आधारित है, वे ब्रह्म एवं अल्लाह में कोई भेद नहीं करते हैं। जाम्भोजी का साहित्य गहन चिन्तन एवं गम्भीरता पर आधारित है। इनकी वाणी मे ज्ञान, भक्ति एवं योग तीनों का समन्वय प्रस्फुटित हुआ है, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए आदर्श है। गुरु जाम्भोजी की वाणी पाखण्ड का खण्डन तथा मानवता का मण्डन करती है। इनकी लोक-चेतना वर्तमान में भी उतनी ही प्रासंगिक, महत्त्वपूर्ण तथा मंगलमयी है, जितनी कि मध्यकाल में थी। विनम्रता, क्षमा एवं दया जैसे दिव्य गुणों से मंडित जाम्भोजी की लोक परक दृष्टि नैतिक मूल्यों की रक्षा, चारित्रिक विकास, पर्यावरण शुद्धि, मानवीय एकता तथा संस्कृति के परिवर्द्धन के लिए संजीवनी की भांति प्राणदायी है।

❐ **श्रीमती पुष्पा बिश्नोई**
(शिक्षक शोध अध्येता)
राजकीय कन्या महाविद्यालय, पीपाड़ शहर (जोधपुर)

दान सुपाते बीज सुखेते - श्री गंगानगर में 2007 से भव्य गुरु जम्भेश्वर मन्दिर का निर्माण कार्य जारी है। इस मंदिर पर लगभग डेढ़ करोड़ रुपये लागत आने की संभावना है। इस पुनीत कार्य हेतु श्री ओम प्रकाश सिगड़ सुपुत्र श्री सोहन लाल सिगड़ जयपुर निवासी ने 7 लाख 25 हजार रुपये मन्दिर निर्माण हेतु दान दिया। इसके अलावा श्री सिगड़ आस-पास के क्षेत्र में राजकीय विद्यालयों, मन्दिरों, गुरुद्वारों व गरीब लड़कियों के विवाह में भी अब तक करोड़ों रुपयों की राशि दान में दे चुके हैं। स्थानीय सभा उनका हार्दिक धन्यवाद व उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

- सुभाष कड़वासरा, सचिव, बिश्नोई सभा गंगानगर

माता हंसा गोद खिलाए, त्रिभुवन पालक को।
आये म्हारे गुरु जम्भेश्वर वचन के पालन को
अनमोल रतन दिया प्रभु यह उपकार तुम्हारा है।
निस दिन याद करें तुमको पहला फर्ज हमारा है।
पावन पर्व की बेला में हम यह संकल्प दोहराएंगे।
श्री चरणों की शपथ हमें हम अपना धर्म निभाएंगे।

सत्य

गुरु जांभोजी की वाणी में मनुष्य

उत्तर भारत के भक्ति आन्दोलन को मध्ययुग की एक महान सांस्कृतिक घटना माना गया है। इस आन्दोलन के माध्यम से गुरु जांभोजी, कबीर, सूरदास, मीरा, तुलसीदास जैसे महान संतो की वाणी ने करोड़ों दग्ध और दु:खी भारतीयों में आत्मसम्मान की शीतल धारा प्रवाहित की। इन सबमें गुरु जांभोजी का स्थान सबसे महत्वपूर्ण और ऊंचा है क्योंकि तत्कालीन समय में समस्त भारतवर्ष देशी राजाओं एवं सामन्तों सहित धार्मिक सामाजिक पाखण्डों के मकड़जाल में फंसा था जो राजपूताना में भीषणतम स्थिति में था। साथ ही प्रकृति के माध्यम से इस भीषणता में बिश्नोई पंथ की स्थापना करना एक महान क्रांतिकारी घटना थी, जबकि राजपूत अधिकांश भारत में शक्तिशाली और दमनकारी शासक थे।

गुरु जांभोजी ने भक्ति और धर्म के साथ-साथ मानव जीवन की तमाम सच्चाइयों को उद्घाटित किया है तथा तत्कालीन खण्डित और पतनशील सामाजिक, राजनैतिक तथा वर्ण व्यवस्था पर करारा प्रहार किया है। वर्ण और जाति व्यवस्था का दो टूक शब्दों में विरोध करते हुए उसे कर्म आधारित करने पर जोर देते हैं-

"उत्तम कुली का उत्तम ना होयबा, कारण किरया सारूं।
गोरख दीठा सिद्ध न होयबा, पोह उतरबा पारूं।"

(शब्द नं. 26)

अगर मानव सत्य और सामाजिक एवं पारिवारिक व्यवहारिकता की बात की जाए तो आज भी उनकी एक एक उक्ति ब्रह्म वाक्य प्रतीत होती है। एक अच्छे तथा सुखी समाज की कल्पना जांभोजी ने की थी और उसका प्रकटीकरण वे अपनी सबदवाणी में भी करते है-

"एक दु:ख बूढ़े घर तरणी अइयो, एक दु:ख बालक की मां मुइयों, एक दु:ख ओछे को जमवारूं, एक दु:ख तूठे से व्यवहारूं। (शब्द नं. 60)

अर्थ स्पष्ट है यदि एक वृद्ध व्यक्ति के घर युवा स्त्री होगी तो उनकी जीवन रूपी गाड़ी संतुलन खो देगी और वे अपना दाम्पत्य जीवन कभी भी सुख से नहीं भोग सकेंगे उसी तरह अगर छोटे बालक की मां का देहांत हो जाए तो उसकी पीड़ा असहनीय होगी जिसके कारण उस बालक का पालन-पोषण अति कठिन हो जाएगा, ये तमाम व्यवहारिक सत्य हैं जो आज भी उतने ही प्रासंगिक है।

गुरु जांभोजी मानव समाज की कल्याण कामना के प्रति पूरी तरह से समर्पित मनुष्य के दु:ख और पीड़ा के प्रति समान रूप से संतप्त तथा उसके हर्ष एंव उल्लास सहित हमारे सामने आते हैं और केवल मनुष्य ही नहीं प्रकृति की एक-एक हलचल और गतिविधि के साथ तालमेल करते दिखई पड़ते हैं-

"चर फिर आवै सहज दुहावै, तिसका खीर हलाली,
जिसके गले करद क्यूं सारो, थे पढ़ सुण रहिया खाली।" (शब्द नं. 8)

हिरणा द्रोह क्यूं हिरण हतीलू, कृष्ण चरित बिन क्यूं बाध बिडारत गाई (शब्द नं. 14)

आदि ढेरों उक्तियां ऐसी कही हैं जो मानव जीवन में प्रतिदिन घटित होने वाली घटनाओं से सरोकार रखती है।

धर्म के नाम पर सहस्त्राब्दियों से चले आ रहे पाखण्ड के खिलाफ खड़े होने वाले राजपूताना के प्रथम लोकनायक थे गुरु जांभोजी। तत्कालीन सामान्य जन को धार्मिक आडम्बरों और तीर्थाटनों के व्यर्थ दिखावे से छुटकारा दिलाया। जिसकी मिसाल बिश्नोई पंथ के रूप में आज भी मौजूद है। यह पंथ आज भी एक ऐसा साफ सुथरा पंथ है जिसमें सबसे कम कुरीतियां और आडम्बर हैं। हालांकि समय के साथ इसमें भी विकृतियां आई परन्तु दूसरे समाजों की अपेक्षा कम। गुरु जांभोजी ने हिन्दू एंव मुस्लिम धर्म गुरुओं सहित तमाम पाखंडियों को ललकारा-

"हिन्दू होये के तीरथ न्हावै पिण्ड भरावै, मुस्लिम होय हज काबो धोके।" (सबद नं. 7)

"काजी मुल्ला पढिया पंडित निंदा करे गिवारा
दोजख छोड़ भिस्त जे चाहो तो कहिया करो हमारा।"

(सबद नं. 94)

"अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर बाहर लोका चारूं"

आदि के माध्यम से हमें यह भी जानकारी मिलती है कि तत्कालीन समाज इन कुरीतियों से ग्रसित था। जिन्हें दूर करने के लिये गुरु महाराज ने 20+9 नियमों का एक सशक्त माध्यम हमें प्रदान किया जो भारतवर्ष में बिश्नोई नाम से प्रसिद्ध हुआ।

गुरु जांभोजी का समकालीन समय अत्यन्त भीषण समय था इस बात का जिक्र हम पूर्व में कर चुके हैं उनके द्वारा हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों पर प्रहार करते हुए दोनों धर्मों में मानव सत्य पर बल दिया और सबसे बड़े मानवीय गुण अर्थात् अहिंसा धर्म का पालन करने की प्रेरणा दी जिसे आगे चलकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सहित बड़े-बड़े महापुरुषों ने अपना प्रमुख हथियार बनाया आचार्य तुलसी ने भी कहा है-

"दया सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।"

जांभोजी ने इन सबसे दो कदम आगे रखते हुए यह नियम प्रतिपादित किया- जीव दया पालणी रूंख लीलो नहीं पावे।

जिन शर्तों की पूर्ति की आकांक्षा गुरु महाराज ने आने वाली पीढ़ियों तथा अनुयायियों से की वे केवल उक्ति मात्र नहीं उनकी अपनी हकीकत थे। जांभोजी ने धर्म मजहब से दूर कृष्णावतार के रूप में कलिकाल में मानवता की सेवा का अनूठा कार्य सम्पन्न किया।

गुरु महाराज के अनुसार इस कलिकाल में प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्त्तव्य से विमुख हो रहा है, इसी कारण समाज में अनिश्चिंतता का वातावरण हो रहा है। माता-पिता ही अगर अपने बच्चों के प्रति कर्त्तव्यों से मुंह मोड़ेंगे तो दूसरों से उम्मीद की कल्पना ही निरर्थक है।

"इहि कलयुग में दोय जन भूला, एक पिता एक माई।
बाप जाणे मेरे हलियो टोरे, कोहर सींचण जाई।
माय जाणे मेरे बहुटल आवै, बाजै बिरध बधाई।"

(शब्द नं. 85)

21वीं सदी के इस मोड़ पर हम समाज में अनेकों विकृतियों और बुराइयों का बोझ अपने कन्धे पर ढो रहे हैं। कुछेक तो आधुनिकता के नाम पर प्रवेश कर चुकी है और कुछ को हमने लोगों की देखादेखी ग्रहण कर लिया है। इस सन्दर्भ में देखा जाए तो आधुनिक कौन है? जांभोजी एवं उनका दर्शन या हम? यह बात स्पष्ट है कि जांभोजी एवं उनका युग ज्यादा पढ़ा लिखा ना होकर भी इन रूढ़ियों से दूर था और आज का समाज शिक्षित होकर भी इनके मकड़जाल में उलझा है। आइये हम इस जन्माष्टमी के पावन अवसर पर संकल्प लें कि अगले वर्ष इसी दिन से पहले पहले एक-एक करके इन सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों को दूर करेंगे तथा एक स्वस्थ समाज की स्थापना में अपना अमूल्य योगदान देंगे।

❐ **डॉ. मनमोहन लटियाल**
वरिष्ठ अध्यापक, सांवतसर, बीकानेर (राज.)
मो.: 9999206695

गुरु जाम्भोजी ही मोक्ष का मार्ग दिखाते हैं

गुरु जम्भेश्वर जी का ज्ञान हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। हमारे भीतर व्याप्त अज्ञानता के अंधकार को नष्ट कर ज्ञान का प्रकाश भर देता है।

श्रीमद्भगवद्गीता के उद्गाता भगवान श्री कृष्ण की जगतगुरु के समान वन्दना की गई है। प्राचीनकाल से सद्गुरु की विशेष प्रतिष्ठा थी। धर्मनिष्ठ राजा महाराजा भी इनकी खोज और परख को वरीयता देते रहे हैं।

गुरु जम्भेश्वर जी का दिया हुआ ज्ञान आज के दौर में भी उतना ही सटीक है। वर्षों पहले पर्यावरण एवं जीव रक्षा का ज्ञान हमें दिया था। आज भी उनके इन नियमों को मानते हुए बिश्नोई समाज के सपूत जीवों एवं पर्यावरण की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर रहे हैं। जिस प्रकार माँ शिशु को गर्भ में धारण कर अपने अंगो से उसका पोषण करती है वैसे ही गुरु शिष्य को अपनी शरण में लेकर उसका आध्यात्मिक दृष्टि से पालन-पोषण करता है।

सद्गुरु जाम्भोजी की शरण में जाकर ही हम सुयोग्य माता-पिता, शिक्षक, कृषक, व्यवसायी, सामाजिक कार्यकर्ता और सच्चे सेवक बन सकते है।। गुरु सांचा है, यदि सांचा ठीक है तो ईंट निश्चित रूप से ठीक, चौकोर और सुघड़ होगी।

बौद्धिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों और उत्कृष्ट संवेदनाओं से युक्त जाम्भोजी की गुरु परम्परा से बिश्नोइयों को यदि ज्ञान की सौगात न मिली होती तो वह जहां के तहां होते।

❐ **सुशीला गोदारा**
पत्नी श्री संजय गोदारा (एडवोकेट)
जवाहर नगर, बीकानेर (राज.)

व्यंग्य

खुजली

चांद मेरे आंगन के ऊपर से गुजरा तो घर में उछल कूद मच गई। घर के सारे लोग छलांगे मारते-मारते थक हारकर बैठ गए। चांद तो ठहरा चांद, किस-किस के घर में ठहरे। उसे जाना था, वो चला गया। इसे मेरे घर के लोगों को पागलपन ही कहिए, जो चांद को पकड़ने की जिद्द कर बैठे थे, जो हुआ अच्छा ही हुआ, आखिर पड़े-पड़े जिन्दगी बिताने वाले लोगों में कुछ करने की हिम्मत तो आई।

अपनी पीठ पर लकड़ी से खुजली करते-करते मैं गली में घूमने लगा। कई कुत्ते, गधे, सांड, बंदर भी खुजली कर रहे थे। मुझे लगा सांस लेने से भी ज्यादा जरूरी है खुजली करना, तो क्या हम एक दूसरे की खुजली नहीं कर सकते, अगर हम ऐसा करने लगे तो सामाजिक समरसता बढ़ेगी, भेदभाव मिटेंगे, हम जान लेंगे कि किस आदमी को कितनी खुजली की जरूरत है। आखिर चारों ओर अपनी-अपनी खुजली मिटाने के ही तो उपक्रम चल रहे हैं। राजनीति, धर्म, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा के पवित्र क्षेत्रों में खुजारिये लोग हावी हो गए हैं। अपनी-अपनी मर्जी से सभी लोग इस पवित्र कार्य (खुजली) में लगे हैं। मूल को कोई पकड़ना नहीं चाहता, ज्ञान का मार्ग सिर अर्पण करने से मिलता है। आजकल न त्याग तो वासनाओं की आग के आगे छोटा पड़ने लगा है। अगर हम सिर अर्पण कर देंगे तो खुजली कौन करेगा। कई धर्म के ठेकेदारों ने खुजली करने के लिए सेवक रख लिए हैं, जिन्हें सेवक नहीं मिले वे अपनी पीठ गोबर की भींतों से रगड़ रहे हैं। धर्म को जानने पहचानने की कशमकश में जनता मठ बदल रही है। सारे देवताओं के आगे नाक रगड़ने के बाद भी हासिल कुछ नहीं हुआ, क्योंकि वे जहां भी जाते हैं धर्म के धुरंधर अपनी पीठ उनके आगे उधाड़ कर खुजली करवाने लग जाते हैं। बड़े-बड़े धर्म सम्मेलनों, धार्मिक चर्चाओं, मेलों, तीर्थों को जम्भेश्वरी आंखों से देखे तो अनर्थ नजर आता है। जिन्हें जेलों में होना चाहिए वे धर्माधिकारी बने बैठे हैं। वे अपने अहंकार में सामाजिक फतवे जारी करने लगते हैं। इनके फतवों का टारगेट होती है महिलाएं, युवतियां व युवक। क्या पहनना है? क्या खाना है? कहां शादी करनी है? कैसे गीत चलाने है? सारी लिस्ट इनके पास मिल जाएगी। ये खुजली डिपार्टमेंट के हैड हैं। हाँ इन लिस्टों में इनका अपना कहीं नाम नहीं होता। धर्मगुरुओं की परम्परा से ये अछूते हैं। इन्हें सेवा चाहिए, हजारों लोग इनके चरण छूते रहे यही इनका मनोरथ है। जम्भेश्वर जी की वाणी को सम्भालने का सामर्थ्य हर किसी में कहां आ पाता है। जिस गुरु ने वक्त को बदल दिया, राजसत्ताओं, व मठाधीशों की हेकड़ी निकाल दी उनके प्रचारक क्या कर रहे हैं? क्या गुरुजी देख नहीं रहे? क्या ये बिना बिस्तर के सो सकते? क्या ये भूखे प्यासे रह सकते हैं? क्या ये राजसत्ता से भिड़ सकते हैं? क्या ये प्राणियों की रक्षा के लिए मर सकते हैं। हां साधारण भक्त लोगों ने जीवों की रक्षा के लिए प्राण त्यागे हैं। वे गुरु की शरण में है। क्या इन बड़े लोगों ने कभी अपनी जान जोखिम में डाली है। अगर आपको पता हो तो उनके प्रति मैं भी वंदन करूंगा। हमारा समाज नैतिक, धार्मिक और सामाजिक त्रासदी भोग रहा है। बिश्नोइयों के गांव शराब के ठेकेदारों की पहली पसंद बन गए हैं। इस पतनशील समय में वे कहां है जो धर्म व समाज के अगुवा बने घूम रहे हैं। हम मंदिर तो सुंदर बना सकते हैं लेकिन मन को सुंदर कैसे बनाए इसका विधान हम भूल गए हैं।

खैर आप फिर से सोचें क्या मरने के बाद कुछ करना होता है जीते जी कुछ करने वाला श्रेष्ठ होता है। ये खुजली संक्रामक रोग होता है जनाब। ये किसी को नहीं छोड़ता ये मरने वाले के पीछे हलवा, पूरी, खीर, जलेबी, शर्बत तक बनवा डालता है। इससे कहां तक बचोगे? इससे बचने का एक ही मार्ग है जम्भेश्वर को फिर से जाने। इस बार मन से जाने। कहां नए-नए ठिकाने खोजते हो, जो कल तक यहीं धक्के खाते फिरते थे उन्हें बैठे बिठाये गुरु गद्दी मिल गई, तैयार भौतिक साम्राज्य मिल गया। धर्मान्ध भीड़ मिल गई और लग गए धर्म की मनचाही व्याख्या करने।

❐ **सुरेन्द्र सुंदरम्,** व्याख्याता
लिखमीसर (पीलीबंगा)
मो. 9414246712

श्रीकृष्ण भगवान : सबदवाणी के परिप्रेक्ष्य में

सबद 01 जाम्भोजी बालपन से मौन रहे। उनके पिता लोहटजी तथा माता हँसा देवी को इससे बड़ी चिंता हुई, तब उन्होंने नागौर राज्य के एक प्रसिद्ध तांत्रिक खेमनराम पुरोहित को बुलाया। उक्त तांत्रिक ने अनेक प्रपंच किए, परन्तु बालक जाम्भोजी नहीं बोले। पुरोहित ने अपनी पराजय स्वीकार करते हुए कहा कि मेरे ये 64 दीपक जल नहीं रहे हैं, यदि ये दीपक जल जाऐं तो यह बालक बोल सकता है। पुरोहित को पाखण्ड खण्डित करने के लिए जाम्भोजी ने एक कच्चे धागे की कूकड़ी ली, उसे मिट्टी के कच्चे करवे के गले से बांधकर, पास के कुंए में से पानी से भर कर निकाला तथा उन दीपकों में उस पानी को डालकर अपनी योग-माया से एक साथ प्रज्ज्वलित कर दिया। कच्चा धागा, कच्चा घट और कुंए में से पानी निकलवा तथा पानी से दीपक जलाना देख कर उपस्थि जन आश्चर्यचकित रह गये। पुरोहित ने जान लिया कि यह बालक कोई साधारण बालक न होकर कोई दिव्य शक्ति का अवतार है। वह पुरोहित खेमनराय बालक जाम्भोजी के पैरों में गिर पड़ा।

उस समय प्रथम बार अपना मौन त्याग कर जाम्भोजी ने सात वर्ष की आयु में खेमनराय के प्रति यह सबद कहा :-

"यह संसार कृष्ण की लीला है। तुमने देख लिया कि कच्चे करवे में पानी भर कर कुंए में से निकाला गया। यह कोई चमत्कार नहीं है, यह केवल परमात्मा की लीला है। कृष्ण की कृपा बिना सच्चा ज्ञान प्राप्त होना कठिन है।"

सबद-67 द्रूणपुर गांव का वासी मोती मेघवाल और उसकी पत्नी दोनों बिश्नोई बन गये। वे साधुओं जैसा जीवन जीने लगे। ग्राम ठाकुर बीदा जोधावत को मोती का यह व्यवहार बहुत बुरा लगा। ठाकुर ने मोती को बुलाकर उसे कैद में डालने का हुक्म दिया तथा कहा कि वह अपने ईष्ट देव से मदद लेना चाहे तो उसे चार पहर की छूट दी जाती है। उस संकट की घड़ी में मोती मेघवाल ने गुरु जम्भेश्वर भगवान को याद किया। भक्त वत्सल भगवान उसी प्रात: काल दूणपुर पहुंच गये और नगर के बाहर शुद्ध वन भूमि पर अपना आसन लगाया। अंहकारी बीदा राठौड़ वहां आया तथा जाम्भोजी की परीक्षा लेने हेतु उनसे उनके चमत्कारिक कार्य कर दिखाने को कहा तथा अन्त में भगवान कृष्ण की तरह एक ही समय में कई शरीर धारण कर भिन्न-भिन्न स्थानों पर दर्शन देने का आग्रह किया। गुरु जम्भेश्वर भगवान ने उसकी यह शर्त भी पूरी की और एक ही समय अनेक नगरों में हवन-पूजन करते हुए दिखाई दिए। बीदे ने उन सैकड़ों गांवों में पहले से ही अपने आदमी भेज दिये थे।

इस प्रकार विभिन्न अलौकिक क्रियाओं द्वारा बीदे को यह विश्वास दिलाया कि वे पूर्ण ब्रह्म भगवान कृष्ण के अवतार हैं। गुरु जाम्भोजी ने कहा है कि श्रीकृष्ण की माया अपार है। हम बरसती हुई मेघ घटाओं की असंख्य-अपार-अनगिनत एवं फुहारों को गिन सकते हैं। हमारे सर्वव्यापी निर्गुण रूप को कोई नहीं जान सकता। कृष्णावतार में हमने कौरवों को एक-एक कर आपस में भाई को भाई से लड़वाकर उनका अंहकार नष्ट किया।

सबद-65 जैसलमेर के राजा जैतसिंह ने जाम्भोजी महाराज से कहा कि वह उनके लिए पत्थरों को मंदिर बनाना चाहता है। गुरु महाराज ने सबद 65 में जैतसिंह को कहा- 'राजसत्ता का सुख और वैभव तो अन्य राजा भी भोगते हैं, परन्तु जैसा राज्य सुख दुर्योधन ने भोगा, वह अतुलनीय हैं राग रागनियां तो और भी बहुत सी हैं, परन्तु जो राग रागनी कृष्ण ने अपनी बाँसुरी से प्रस्फुटित की, वैसी राग इस त्रिलोकी में कोई अन्य नहीं है।'

सबद-53 जब लोहा पागल ने गुरु जम्भेश्वर भगवान से पूर्वोक्त सबदों को सुनने के पश्चात् कहा कि उसे विश्वास हो गया है कि जाम्भेजी पूर्ण गुरु है। वह उनका शिष्य बनना चाहता है। गुरु महाराजा उसे अपना शिष्य बना ले तथा आज्ञा दें कि क्या करना है? लोहा पागल की मनो इच्छा जान गुरु महाराज ने उसे यह सबद कहा - 'हे प्राणी! भगवान कृष्ण से विमुख रहने पर तुम्हारा संसार सागर से तैर कर पार होना उसी प्रकार कठिन है, जैसे पत्थर का पानी में तैरना। यह पूर्णत: निश्चित समझो कि एक दिन इस शरीर को छोड़ना पड़ेगा। इस देह से अलग होना पड़ेगा। इस संसार में ऐसे रहो, जैसे तुम यहां कुछ समय के लिए अस्थाई रूप से ठहरे हुए हो और इस अस्थाई निवास में रहते हुए हे जीव! तुम जो कुछ सत्कर्मों की कमाई करोगें, वह तुम्हें स्वर्ग में मिल जाएगी। इस परदेश में कमाया हुआ धन तुम्हें अपने देश में मिल जाएगा। यह संसार परदेश है, स्वर्ग तुम्हारा अपना घर'।

❐ **नीरज बिश्नोई**
सदस्य, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा एवं
जिला अध्यक्ष, अ.भा. जीव रक्षा बिश्नोई सभा,
अजमेर (राजस्थान)

विष्णु अवतार गुरु जाम्भोजी

धर्म की रसात्मक अनुभूति का नाम भक्ति है। धर्म है विष्णु के सत्स्वरूप की व्यक्त प्रवृत्ति, जिनकी असीमता का आभास अखिल विश्व स्थिति में मिलता है। इस प्रवृत्ति का साक्षात्कार घर-परिवार जैसे छोटे क्षेत्रों से लेकर समस्त अवनीमण्डल और अखिल विश्व के बीच किया जा सकता है। घर-परिवार या समाज की रक्षा में, लोक के परिचलन में और समष्टि रूप में, सम्पूर्ण विश्व की शाश्वत स्थिति में विष्णु के समस्त स्वरूपों के दर्शन होते हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि विष्णु के स्वरूपों (भिन्न-भिन्न रूपों) की प्रवृत्ति का साक्षात्कार जितने विस्तृत क्षेत्र के बीच हम करते हैं, भगवत्स्वरूप की ओर उतनी ही बढ़ी हुई भावना हमें प्राप्त होती है।

विष्णु के समस्त स्वरूपों को विस्तृत जनसमूह के कल्याण के साथ जोड़ा जा सकता है। धरातल के विस्तृत जनसमूह के कल्याणार्थ भगवान विष्णु समय-समय पर अपने भिन्न-भिन्न रूपों में (अलग-अलग नामों से) अवतार धारण करते हैं और अपने भक्तों को लोक व्यवहार से अलग करके आत्म-कल्याण की ओर अग्रसर करते हैं। परिवार धर्म, समाज धर्म, लोक धर्म आदि से लेकर विश्व धर्म तक के कल्याण हेतु विष्णु का अवतार समय-समय पर अपने पूर्ण स्वरूप में दिखाई पड़ता है।

अवतार का सर्वप्रथम उल्लेख वेदों से माना जाता है। एक ज्योति स्वरूप परमात्मा अनेक रूपों में प्रकट होते हैं। इस परमात्मा स्वरूप की सत्ता सम्पूर्ण पदार्थों में विद्यमान रहती है। अवतारवाद की इस कड़ी में 'अवतार' शब्द का उल्लेख परमात्मा या महान विभूतियों के प्रादुर्भाव होने के लिए किया जाता है।

इस प्रकार अवतार से तात्पर्य है कि परमात्मा का निराकार से साकार स्वरूप धारण करना। विशिष्ट अर्थ में यह शब्द मुख्य रूप से विष्णु के लिए प्रयुक्त होता है। भागवत ग्रंथों के अनुसार ईश्वर का अवतार कई बार हो चुका है और भविष्य में भी होगा। भू-मण्डल पर जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है। तब-तब भगवान विष्णु लोक कल्याणार्थ भिन्न-भिन्न योनियों में प्रविष्ट होकर धर्म-मर्यादा की स्थापना करते हैं। एक ओर जहां भागवत ग्रंथों में विष्णु के मानव कल्याण का सर्वाधिक उल्लेख मिलता है वहीं, दूसरी ओर विष्णु अवतार गुरु जांभोजी का अवतार सम्पूर्ण जीवमात्र (जीव दृष्टि) के लिए माना जाता है।

'गांवे गाडर सहरे सूअर जळम जळम अवतारूं' (सबद सं. 11)

ऊपर जो कुछ कहा गया है उससे यह स्पष्ट होता है कि भगवान विष्णु शुभ कर्म करने वालों के विस्तार और धर्म रक्षा के लिए अवतार धारण करते हैं। धरातल पर जब-जब दुष्ट प्रवृत्ति के लोग अहंकार के वशीभूत होकर अन्याय तथा अनुचित कार्य करते हैं, तब-तब परमात्मा (विष्णु) का प्रादुर्भाव होता है और भगवत महिमा फलीभूत होती है।

जम्भवाणी में उल्लेखित अवतार प्रसंग

यह हम कई जगह दिखा चुके हैं कि विष्णु के सत्य रूप की अभिव्यक्ति और प्रवृत्ति को लेकर गुरु जांभोजी की भक्ति पद्धति चली है, जो जम्भवाणी (सबदवाणी) नाम से प्रचलित है। इसमें अवतार का प्रकाश अर्थात् विष्णु के विभिन्न रूपों का प्रकाश गुरु जांभोजी ने अपनी वाणी में किया है।

जम्भवाणी में स्वयं गुरु जाम्भोजी के अवतार के बारे में जो प्रसंग उल्लेखित हुए हैं वे इस प्रकार हैं-

1. तेतीसां की वरण वहां म्हे, बा'रां कजै आयौ सबद सं. 27)
2. बा'रां कजै पड्यो विछोहो, संभळि संगळि झूरूं (61)
3. जे नर दावो छोड़यो मेर चुकाई, राह तेतीसां की जांणी (71)
4. कोडि तेतीस पहुंचणहारी, ज्यौ छकि आई सा'री (72)
5. म्हे पहराजा सूं कौल ज लीयौ, नारिसिंध नर कानूं (91)
6. कोड़ तेतीसूं वाड़ै दीन्ही, जांह की जाति पिछांणौ (112)
7. पांच करोड़ी ले महराज तरियौ खरतर करी कमाई।
   सात करोड़ी ले राजा हरिचंद तरियौ,
   तारादे रोहतास हरिचंद हाट बिकाई।

नव करोड़ी ले राव दहूठल तरियौ धन्य कुतांदे माई।
बा'रा कोडी समांहण आयौ, पहराजा सूं कौल ज थाई (99)

जम्भवाणी में उल्लेखित इन (उपर्युक्त) प्रसंगों से यह स्पष्ट होता है कि गुरु जाम्भोजी में 'उण्डे नीर' धोराली धरती पर अवतार इसलिए धारण किया है कि सतयुग में विष्णु भक्त प्रह्लाद के उद्धार के लिए परमात्मा विष्णु ने नरसिंह रूप धारण कर हिरण्यकश्पिु का वध किया था। उस वक्त 33 करोड़ जीव भक्त प्रह्लाद के अनुयायी थे। इनमें से 5 करोड़ जीवों का उद्धार तो विष्णु रूप परमात्मा ने उसी युग में कर दिया। शेष 28 करोड़ जीवों के उद्धार के लिए विष्णु ने अलग-अलग युगों में उद्धार (कल्याण) करना इस प्रकार बताया-

त्रेतायुग में 7 करोड़ जीवों का उद्धार सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के साथ, द्वापर युग में 9 करोड़ जीवों का उद्धार धर्मराज युधिष्ठिर के साथ, इस प्रकार 21 करोड़ जीवों का उद्धार इन तीनों युगों में हो गया। शेष 12 करोड़ जीवों के उद्धार के लिए इस कलियुग में विष्णु का जाम्भोजी रूप में अवतार हुआ। गुरु जाम्भोजी ने 12 करोड़ जीवों के कल्याण का कार्य अपने ज्ञानोपदेश तथा धर्माचरण की शिक्षा से 'बिश्नोई पंथ' के रूप में किया।

जाम्भाणी साहित्य में विष्णु अवतार गुरु जाम्भोजी के अवतार तथा अवतारी महापुरुष के साथ परमधाम या मोक्ष-प्राप्ति से सम्बन्धित अनेक रचनाओं में उल्लेख मिलता है। संतकवि सुरजनदास जी पूनिया ने जाम्भोजी के जीवन चरित्र में सद्गुरु के अवतार से सम्बंधी द्रष्टव्य पद-

'वेद पुराण जे पुली गढ़, मढ कीनी तियार।
जीव पड़े जो खोट ले, सत गुरु ले अवतार॥
अलख पुरुष दरशण दियो, मन में कियो बिचार।
माता अन्तर ऊपजी, आप लियो अवतार॥
संमत पनरासो अढोतरे, कृतिका नखतर परमाण।
भादवो वदि अरु अष्टमी, चंदर वार पुनि जाण॥'

गुरु जाम्भोजी का अवतार वृत्त भी अन्य महापुरुषों से कुछ भिन्न तथा उनके माहात्म्य को प्रदर्शित करने वाली विभिन्न अनुश्रुतियों से आच्छादित है। मध्ययुग विशेष रूप से चमत्कारों का युग था। उस युग का सरल विश्वासी जन समाज अपने आध्यात्मिक गुरु की स्मृति चिरस्थायी रखने के लिए सहज ही ऐसे अनेक पदों की रचना करते थे। जिनमें मनुष्य की आध्यात्मिक प्रगति पद रचना या जीवन चरित के उद्देश्य से अपने परमात्मा का आनुवांशिक रूप ग्रहण किया जा सके। संत खेमदास अपने परमात्मा (गुरु जाम्भोजी) का स्वरूप इस प्रकार स्पष्ट करते हैं-

जोगी जंभ देव जटा जूट धारी शंभु जैसे।
भव्य देह विराजत है, भंगवा सु भेस में।
परम परचंड दोरे दंड दभ खंडण को।
मण्डण महान धर्म देश रू विदेश में।
ज्ञान की दशा ते उनमत विष्णु भेसधारी।
दत अवद्यूत जैसे देन उपदेस मे।
सेस में सुरेस में, दिनेस में न एते गुण।
तेते गुण गुरु में विराजत विशेष में।

जम्भ भक्त कवि तेजोजी चारण की रचनाओं में भी, तेजोजी ने अपने पूरण गुरु जाम्भोजी की आत्मिक शक्ति, तत्त्व-प्राप्ति एवं विष्णु के सकल सगुण स्वरूप का बखान इन पंक्तियों के माध्यम से किया है जो निश्चय ही गुरु जांभोजी के पूर्ण स्वरूप को स्पष्ट कराते हैं-

भूख दुख दोरहा दुकट, पहलाद तणी वाटे बहे।
अवतार अचंभ जम्भ थलि आयो, लिखी न प्राप्ति केम लेह।
जिसी चाल चलावे, चाल पणि तेसी चालू।
जिसा बोल बोलावे, बोल पणि तेसा बोलू।
जिस मारग तूं मेलै, जीव तिंहि मारग जावै।
सरस तुझ समरथ, प्राण प्राणिया न थावै।
विणती विसन वाचा अचल, सुणो श्याम सेवक कहे।
महमाण मन म्हारो मुकंद, तूं रखो तेसूं रहे॥
मन सुध भाव मन महमाण, तब तेज तारण तरण।
भव आण उणि अनेक भव, समरथ जाम्बाजी तो सरण।

कवि ने अत्यन्त कुशलता से अपने गुरु जाम्भोजी की श्रेष्ठता अंकित की है। कवि अल्लूजी चारण की जब मनोकामना पूर्ण हो गई तो उन्होंने गुरु जाम्भोजी के यशोगान हेतु अपने आपको समर्पित कर दिया तथा कवि ने 'जम्भवाणी' को पंचम वेद की उपाधि प्रदान की। इनके साथ-साथ कवि ने अपनी भावाभिव्यंजना लोक प्रचलित, सशक्त और प्रभावशाली शब्दों में इस प्रकार की है-

वेद जोण वेराग खोज, दीठा नर निगम।
संन्यासी दरबेस शेख, सोफी नर जंगम।
विधा वियायी मोहि आज, आसा धरि आयो।
पाणी अन्न अहार पेटि, सुख परयो पायो।
पांचवो वेद सांभलि शब्द, च्यारि वेद हुंता चलू।
केवल जम्भ सांवल कवल, आज साच पायो अलू।

जिण वासिंग नाथियो, जिण कंसासुर मारे।
जिण गोवल राखियो, कनड़ आंगली उधारे।
पूतना परहारी, लियो थण खीर उपाड़े।
जिणी कागासर छेदियो, चंद गिरि नांवे चाड़े।
एतला परवाड़ा पुरिया, अवर परवाड़ा प्रभु सहे।
अवतार देव जम्भ तणो अलू, कन्हण तणो अवतार कहे।

गुरु की सर्वशक्तिमत्ता, उपदेश, सत्य, शील, संतोष आदि का पालन, विष्णु जप, दुष्कर्म और पाखण्ड त्याग सत्कार्य आदि का वर्णन तथा पूर्णरूपेण आत्मसमर्पण। कवि की दृष्टि में ऐसा गुरु और 'प्रह्लाद पंथ' भाग्य से ही प्राप्त होता है। महात्मा वील्होजी विरचित 'कक्का सैंतीसी' में कवि ने गुरु जाम्भोजी को संसार के समस्त संकटों का विनाशकारी एवं लोक रक्षक रूप निर्दिष्टित किया है-

पपा परम गुरु जम्भ, धरि हिये ताको ध्यान।
तीन ताप नासे तुरत, उपजे उर विज्ञान।
उपजे उर विज्ञान, सकल शंसय मिट जावै।
जलम मरण मिटजाय, पूर्ण परमार्थ पावै।
बाढ़े विमल विवेक, होय सब पातक हानी।
पपा परम गुरु जम्भ, करि विसन हिये ध्यानी।

जम्भवाणी का आरम्भ और अंत भी गुरु शब्द से ही होता है। जम्भवाणी का प्रारम्भ गुर 'चिन्हू और धरम बखांणी' तथा अंतिम सबद की अन्तिम पंक्ति- मेटि ले गुरु के दरसंणा' अर्थात् आरम्भ में गुरु की पहचान और अंत में दर्शन और भेंटवार्ता के साथ होता है। सच्चे एवं पूरण गुरु की पहचान करना ही गुरु जाम्भोजी की वाणी का मूल है। जाम्भाणी संत कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं में गुरु की असीम कृपा का उल्लेख करके उनके चरणों की वंदना की है तथा अमूर्त, अव्यक्त ब्रह्मा की अगमता, अनिर्वचनीयता और अचिन्तयता का वर्णन करके सगुण विष्णु के अवतार का प्रस्ताव भी करते हैं-

राव करसी उजवणौ, जोसलमेर सुथान।
जाम्भोजी कूं ल्यावस्या, लेस्या कछू गुरु ज्ञान॥
(कथा जैसलमेर की)

सींव सूधे जे सामें आऊँ, चरण वंद ने शीश निवाऊँ।
आवै गुरु आपो परकासे, दरसण दीण पातक नासै॥

इस प्रकार गुरु जाम्भोजी के विष्णु अवतार से सम्बन्धित रचनाओं से यह पूर्णरूप से स्पष्ट होता है कि गुरु जांभोजी के अवतार का कवियों ने भिन्न-भिन्न रूपों में चरित्र-चित्रण किया है। वे न केवल उनकी काव्य रचना के प्रधान नायक या विष्णु अवतार हैं, वरन कवियों के इष्टदेव भी। उनके स्वभाव की यह विशेषता है कि उन्हें जो जिस भाव से भजता है उसे वे उसी भाव से प्राप्त होते हैं। फलतः भक्तिभाव की विविधता के अनुरूप उनका व्यक्तित्व भी अनेक रूपों में प्रकट हुआ है और कवियों ने अपने इष्टदेव के प्रति सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया है। आध्यात्मिक चिन्तन, मनन और विष्णु मंत्र का जाप ही जाम्भोजी के शब्दों में उपासना एवं आत्मकल्याण का मंत्र है। आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी, ग्रह, नक्षत्र, दिशाएं, वृक्ष वनस्पति, नदि, समुद्र समस्त वर्ग भगवान के शरीर हैं, इन सभी रूपों में भगवान स्वयं प्रकट होते हैं। वे समस्त लोकों में व्याप्त है।

तिल में तेल पोहप मां वास, पांच तत मां लियो परगास
जैसे तिल में तेल और फूलों में गन्ध होती है, वैसे ही पांच तत्वों से निर्मित देह में आत्मा प्रकाश निवास है।

जांभाणी साहित्य में गुरु जाम्भोजी का विष्णु अवतार, अवतार का कारण (हेतु), बाल ग्वाल रूप, लीला रूप, लोक रक्षक एवं लोक उद्धारक रूप, रामायण एवं महाभारत के नीति कुशल एवं व्यवहारवादी रूप, कुशल योद्धा तथा ब्रह्म के साथ-साथ परब्रह्म रूप का भी उल्लेख मिलता है।

परम गुरु जाम्भोजी जनमत के संरक्षक के साथ-साथ अनूप ज्योति रूप होकर घट-घट में व्याप्त है। परम गुरु जाम्भोजी की इस जन्माष्टमी महापर्व पर गुरु के बतलाये गए नियमों एवं आचार-संहिता का पालण करके इस धरती पर पुनः गुरु जाम्भोजी की उपादेयता को कायम रखना होगा। **'जागो जो वो जोति न खोवो, छलि जासी संसारू'**- हमें जागना होगा, आत्म तत्त्व को खोजना है, यह समय ऐसे ही नहीं बिताना है, किसी भी दिन यह आत्मा शरीर छोड़कर चली जाएगी।

❑ **रामस्वरूप (शोध छात्र)**
हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास वि.वि.,
जोधपुर-342001

समाज में नारी का स्थान

मनु स्मृति में कहा गया है कि- "यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता:" यह है भारतीय मानस का आदि शक्ति, अर्द्धांगिनी, गृह लक्ष्मी नारी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन। नारायण के साथ लक्ष्मी, शिव के साथ भवानी, राम के साथ सीता की आराधना, नारी शक्ति की ही अर्चना है। अपाला, अमृता, गार्गी, लोपामुद्र, मैत्रेयी, विदुला तथा महालसा की गौरवमयी परम्परा को भारतीय नारी ने आज तक निभाया है। पुरुष और समाज के प्रति अपने दायित्व को पूरी ईमानदारी से निर्वाह किया है फिर भी उसे अबला, रमणी जैसी संज्ञाओं से सम्बोधित होकर पुरुष की दासी, अनादर का पात्र ही बनना पड़ा है।

भारतीय नारी का तिरस्कृत स्वरूप -"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आँखों में है पानी।" पुरुष को वात्सल्य एवं अपने आंचल के दूध से जीवन दान देने वाली नारी ने बदले में आँसू ही पाएं है। यह बड़ी हृदय विदारक बात है। वह पतिव्रता है, सती है अर्थात् उसे आजन्म एक पुरुष के अबाध और असीम शासन की कठपुतली बने रहना है। वह 'गृह लक्ष्मी' है अर्थात् उसे घर रूपी बाड़े की सीमाओं में ही अन्तिम सांस लेनी है।

वह 'देवी' है अर्थात् पुरुष की कामुक दृष्टियों से पूजित और चाटुकारिता भरे स्त्रोतों से सन्तुष्ट होती रहे। उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं हो, क्योंकि वह महान है, क्योंकि वह क्षमामयी है, क्योंकि उसने पुरुष के विश्वास घात और अंहकार को अपनी ममता के धागों से बार-बार बांधने का प्रयत्न किया है। यही है आज भारतीय नारी का रूप। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि:-

पुरुष का अबाध शासन, नरकृत शास्त्रों के बंधन।
सब है नारी ही को लेकर, अपने लिए सभी सुविधाएं,
पहले ही कर बैठे नर॥

नारी पर आजीवन पुरुष का पहरा रहा है। बचपन में पिता उसकी चौकसी करें, युवावस्था में पति का पहरा रहे और वृद्धावस्था में पुत्र उस पर नज़र रखे, मानो वह जन्मजात अपराधिनी है। आज मुट्ठी भर नगर निवासिनी बालिकाएं भले ही विद्यालयों से लाभ उठाती हों, किन्तु आज भी आदिवासी जातियों, घुमक्कड़ जातियों, जनजातियों, गाड़ोलिया जातियों, पशुपालकों की बालिकाएं आज भी शिक्षा से कोसों दूर है। जहां यह समाज निवास करता है, वे गाँव आज भी नारी शिक्षा की कल्पना करने में भी असमर्थ है। शिक्षा सपना भी एक वाकई सपना बना हुआ है। नारी का दूसरा अभिशाप उसका वैधव्य है, बाल विधवाओं के आजीवन बहते आँसू समाज को अभिशप्त है। पुरुष विधुर होने पर मनचाहे विवाह कर सकता है, परन्तु नारी तो एक पतिव्रत की अधिकारिणी है, कैसी विडम्बना है, इस स्वार्थ भरे पुरुषवादी संसार में। कल्पना मात्र से तन सिहर उठता है। जबकी यह कल्पना नहीं यथार्थ है।

नारी का तीसरा दुर्भाग्य पर्दा है, नारी के मुख पर पर्दा डालकर निश्चिंत होने वाले पुरुष ने वस्तुत: अपनी ही शक्ल पर पर्दा डाल दिया है। अपनी पीड़ा, अपनी आकुलता में ही घुट-घुट कर मरते रहना है। यह पुरुषवादी समाज का इंसान परन्तु समय का तकाज़ा है नारी की स्वतंत्रता, समानता, समता और स्वाभिमान।

भारतीय नारी को अपने विकास की दिशा निश्चित करनी है। वह मानव सृष्टि के विकास की सर्वोतम सीढ़ी है। उसे अपनी शालीनता, अपना स्वरूप, अपनी पहचान, अपनी मौलिकता की रक्षा स्वयं करते हुए आगे बढ़ना है। नारी को आगे बढ़ने के साथ-साथ पीछे मुड़कर देखते हुए चलना है क्योंकि उसे गांवों के उपेक्षित अंचल में अत्याचार भोगती अपनी करोड़ों बहनों के भाग्य को जगाना है। दहेज प्रथा एवं बाल विवाह जैसी नारी को उत्पीड़ित करने वाली कुरीतियों को कानून द्वारा समाप्त किया जा रहा है। परन्तु आज के हालात में नारी सुरक्षित नहीं है, नारी में आत्मविश्वास का संचार हो रहा है। वह स्वयं अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहती है।प्रकृति को पुरुष और नारी दोनों की आवश्यकता है, क्योंकि दोनों एक ही गाड़ी के दो पहिये है। एक भी पहिया कमजोर है तो समाज का विकास और अस्तित्त्व अधूरा है।

❐ **कुमारी अभिलाषा बिश्नोई**
पुत्री श्री उदयराज खिलेरी अध्यापक
ग्राम-मेघावा, डा.-वीरावा, वाया सांचोर-343041
जिला-जालोर (राजस्थान) मो.: 09828751199

अमर शहीद शैतान सिंह बिश्नोई कथा

सरस्वती माता कंठे आजा
शैतान सिंह भादु की कथा बणाज्या ॥
दो भाइयों की जोड़ कहीजे।
शैतान भाई की कथा भणीजे ॥
माघ चौदस की रात थी, बारह बजे की बात थी।
बैठे थे सब मिलकर घर में, निकली आवाज बंदुक की थी ॥
सो रहा था जग सारा, पर शैतान की इच्छा और थी।
हिरणों की रक्षा की खातिर, बात पक्की ठान ली थी ॥
निकल पड़ा था उसी क्षण, और भाइयों का साथ था।
बस यही से शुरू हुआ, यह रस्ता बड़ा विरान था ॥
25 वर्ष की उम्र थी, जीव रक्षा का जज्बा न्यारा था।
इस जज्बे ने जगजीता, हिरण शैतान को प्यारा था ॥
बड़े-बड़े धोरों में, मंजिल कुछ और थी।
बचाणा था हिरण को, पर रात को सर्दी जोर थी ॥
ना पिछे हटे ना मौत से डरे, वीरता दिखला दी थी।
निकल पड़े थे गाड़ी लेकर, बाजी जान की लगा दी थी ॥
दौड़ रहा था शैतान, साथियों के साथ में।
दिख गये दो मुसलमान, बन्दुक थी हाथ में ॥
बोला शैतान ओ शिकारियों, भाग के कहाँ जाओगें।
हिरण मारने निकले हो, पर जेल की हवा खाओगें ॥
बोला शैतान, दुष्ट इन हिरणों ने तेरा क्या बिगाड़ा था।
दुष्ट बोला भाग यहाँ से, तू भी मारा जाऐगा ॥
सिना ताने खड़ा शैतान, बोला दुष्ट तू हारा जाऐगा।
दुष्ट हत्यारे हनीफ ने बन्दुक उठाई।
गोली शैतान सिंह के सिने लगाई ॥
सो गया शैतान धरती माँ के संग।
रोने लगा घर, परिवार और साथियों का अंग-अंग ॥
भादू जात गांव सालासर ननेऊ में रहेवे।
हिरणा तणो अपणो शरीर देवे ॥
उल्टा काम मुसलमानों ने कीन्हा।
उन हत्यारों को जेल में दीन्हा ॥
30 जनवरी अमावस्या और गुरूवार।
स्वर्ण अक्षरा में लिखिजियो, नमन बार-बार ॥
वीरा जांग जन्मीयों, सुत अर्जुन रो वीर।
भादुआं री ढ़ाणियां, हिरणा तणो शरीर ॥
धर्मपत्नी पुष्पा खिलेरी बोली, मेरे पति पर किसने चलाई गोली।
भाई मांगीलाल बोला, दुष्ट हत्यारे हनीफ ने चलाई गोली ॥
पुत्र पियूष और पुत्री ज्योति कहसी।
म्हारा पिताजी शहीद हुआ है ना जग में रहसी ॥
दुष्ट मुसलमान ने गोली से शैतान को मारा।
इक्कठे हो गये जीव प्रेमी और बिश्नोई समाज सारा ॥
इक्कठा हुआ समाज सारा, हजारों की भीड़ थी।
वाहनों की कतारों के साथ, न्याय दिलाने की पीड़ थी ॥
देख समाज की एकता और ताकत, प्रशासन भी डोल गया।
मांगा था जो हक अपना, पूरा पिटारा खोल गया ॥
मान दियो, सम्मान दियो, मानी मांग अनेक।
हिरणा तणों शरीर देवे, बिश्नोई वीर और नेक ॥
पर्यावरण प्रेमी, सन्तजन, नेता पहुचीयाँ, दीवी श्रद्धांजलि जोर।
जम्भसरोवर ओरण माही, बोल्या मधुरा मोर।
मर मीटणियां आँ शहीदा ने याद करांला सारा।
इणसु समाज आगे बढ़ेगा, उतरांला भवजल पारा ॥
बोला रामनिवास वाह रे शैतान, तुम्हे धर्म की शान बढ़ाई है।
अमर रहेगा नाम तेरा यहीं हांणियाँ की दुआई है ॥

❐ रामनिवास खिलेरी हांणियाँ
सुपुत्र श्री सहीराम बिश्नोई,
गांव-हांणियाँ, तह. बावड़ी, जिला-जोधपुर (राज.)
मो.: 9982184241

सूचना व निवेदन

आदरणीय पाठको! जैसा कि आपको पहले सूचित किया गया था उसी के अनुसार यह जन्माष्टमी विशेषांक अगस्त-सितम्बर का संयुक्त अंक है। तकनीकी कारणों से इस पर केवल सितम्बर 2014 ही अंकित किया गया है। कृपया करके इसे अगस्त-सितम्बर 2014 का संयुक्त अंक समझा जाए। इस अंक हेतु हमें अनेक विद्वान लेखकों के ढेर सारे लेख प्राप्त हुए जिनके लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं। स्थानाभाव के कारण हम अनेक लेखों को इसमें स्थान नहीं दे सके जिसके लिए हम विद्वान लेखकों के प्रति क्षमाप्रार्थी हैं। ऐसे लेखों को आगामी अंकों में प्राथमिकता के आधार पर प्रकाशित किया जाएगा। आशा है विद्वान लेखक इसे अन्यथा नहीं लेंगे और पूर्ववत् अपना आशीर्वाद व स्नेह अपनी इस पत्रिका को देते रहेंगे।

- सम्पादक

"अवतारतत्व-मीमांसा"

प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रगति चाहता है, चाहे वह कृषि, व्यवसाय, नौकरी आदि किसी भी क्षेत्र में हो। सरकारी और गैर-सरकारी कर्मचारियों को नियमित पदोन्नति मिलती है। यहाँ तक कि धार्मिक, सामजिक क्षेत्र में सेवाकार्य करने वाले भी ऐसी ही आकांक्षा रखते है। कोई भी अपने वर्तमान पद से नीचे उतर कर कार्य करना नहीं चाहता। संविधान का भी यह विधान है कि किसी व्यक्ति को नियमित या उसकी विशेष सेवा को देखते हुए पदोन्नति दी जाती है या उसकी खराब सेवा के कारण उसे पद से बरखास्त कर दिया जाता है पर उसका पद घटाया नहीं जा सकता। पदोन्नति की दौड़ में व्यक्ति इतना ऊँचा पहुंच जाता है कि वह जहां से चला था, उस जगह से उसका संपर्क बिल्कुल टूट जाता है। दस-बीस मंजिल ऊपर खड़े आदमी से जमीन पर खड़ा आदमी संवाद कैसे करे ? ऊपर वाला नीचे उतरना नहीं चाहता, नीचे वाले को ऊपर जाने की इजाजत नही है। यह संवादहीनता ही समाज में उपद्रव का कारण बनती है। शासन-प्रशासन, सत्ता, सरकारों में ऊँचे पदों पर बैठे लोगों का जब आम आदमी से सम्पर्क समाप्त हो जाता है तब सम्पूर्ण व्यवस्था भ्रष्ट हो जाती है। पर इस तंत्र से परे भी कोई सत्ता है जो नीचे वालों से संवाद करने के लिये, उनके कष्टों का निवारण करने के लिये, उन्हें अभयता, आश्वासन, आह्लाद प्रदान करने के लिये नीचे उतरती है। वह सत्ता है, परमसत्ता परमात्मा और उसका नीचे उतरना ही अवतार है। इस अवतार के कई प्रकार है जैसे- नित्यावतार, गुणावतार, विभवावतार, तत्त्वावतार, अर्धावतार, अन्तर्यामी-अवतार, लीलावतार, मन्वन्तरावतार, युगावतार, आवेशावतार आदि।

वैसे तो भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान है। वे हमें स्थूल दृष्टि से दिखाई नहीं देते। योग की सिद्धावस्था को प्राप्त अधिकारी पुरुष उन्हें देख सकता है। दुष्टों पर शासन करने के लिये भगवान अवतार लेते है-

अठगी ठंगण, अदगी दागण, अगजा गंजण, ऊनथ नाथण, अनू नवावन। कहिं को मैं खैंकाल कीयों। कहिं सुरग मुरादे देसां। काहिं दौरे दीयूं॥ (शुक्ल हंस, सबद 67)

"ठग, अंहकारी, धूर्त, उद्दण्ड, दुष्ट लोगों को दबाने, नाथने, दागने, नवाने और फिर भी न माने तो उनका विनाश करके नरकों में भेजने और साधु पुरुषों को स्वर्ग देने के लिये मैं अवतीर्ण होता हूँ।"

सभी के लिए दृष्टित्रम्य शरीर में भगवान आविर्भूत होते है। इसी आविर्भाव को अवतार कहते हैं। गीता में भगवान कहते हैं कि:-

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत"

(गीता अध्याय 10, श्लोक 42)

"अथवा हे अर्जुन! इस बहुत जानने से तेरा क्या प्रयोजन है। मैं इस सम्पूर्ण जगत् को अपनी योग शक्ति के एक अंश मात्र से धारण करके स्थित हूँ"।

यानि भगवान अवतार तो लेते हैं पर अपना सम्पूर्ण अवतार कार्य इस जगत को धारण किये हुए अपनी शक्ति के थोड़े से अंश से ही कर देते हैं। भगवान की पूरी शक्ति का तो कोई पारावार ही नहीं है। वे सर्वशक्तिमान है। अगर वे अपनी शक्तियों को और अधिक मात्रा में प्रकट कर दें तो संसार उसे सहन नही कर पाएगा। भगवान की कृपा और शक्ति प्राप्त, उनका परमप्रिय सखा अर्जुन भी जब भगवान के विराट रूप का तेज सहन नहीं कर सका और व्याकुल होकर कहने लगा-

अदृष्टपूर्व हृषितोऽस्मि दृष्टवा, भयेन प्रत्यथितं मनो में।
तदेव में दर्शय देवरूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास॥
किरीटिन गदिन चक्रहस्त मिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रवाहो भव विश्वभूर्ते॥

(गीता अध्याय 11, श्लोक 45,46)

मैं पहले न देखे हुए आपके इस आश्चर्यमय रूप को देखकर हर्षित विष्णुरूप को ही मुझे दिखाइये। हे देवेश! हे जगन्निवास प्रसन्न होइये। मैं वैसे ही आपको मुकुट धारण किये हुए तथ गदा और चक्र हाथ में लिये हुए देखना चाहता हूँ, इसलिए हे विश्वस्वरूप! हे सहस्रबाहो! आप उसी चतुर्भुज रूप से प्रकट होइये।

भगवान जाम्भोजी भी सबदवाणी में कहते हैं कि अगर मैं सम्पूर्ण शक्ति के साथ प्रकट हो जाऊँ तो चारों दिशाएँ और नवद्वीप (नवों द्वीप) थरथराने लगे-

चार चक्र नव द्वीप थरहरै। जो आपो परकासूं।

(सबद-73)

मनुष्य आदि प्राणी तो क्या, पृथ्वी और दिशाएं भी

भगवान के तेज को सहन करने में समर्थ नहीं है। अवतार लेते समय भगवान किसी सांसारिक प्राणी के गर्भ में नहीं आते, वे प्रकट होते है। माता को सुख देने के लिये उसे अवश्य गर्भ का आभास होता है। समयावधि पूर्ण होने पर वे माता के सामने चतुर्भुज रूप में प्रकट होते है और फिर मां के अनुरोध करने पर नवजात बालक का रूप धारण कर लेते है। कौशल्या, देवकी के सामने तथा माता हंसा के सामने भी भगवान ऐसे ही प्रकट हुए थे। पंच भौतिक तत्त्वों से रहित भगवान का यह तेजोमय रूप ही बाद में पृथ्वी पर अपना अवतार कार्य पूर्ण करता है।

भगवान इतने शक्तिमान है कि वे अपने संकल्प मात्र से ही इस जगत का सृजन और प्रलय कर सकते हैं, फिर वे दुष्टों के विनाश के लिए स्वयं अवतार लेकर अनेकों कष्ट उठाते हुए साधारण मनुष्य की तरह जीवन जीते हुए क्यों घूमते है? यह प्रश्न जिज्ञासु मन में उठ सकता है। वे बैकुण्ठ में बैठे ही या अवतार लेने के बाद अयोध्या तथा गोकुल में बैठे ही संकल्प कर लेते तो रावण, कंस आदि जलकर राख बन जाते। निश्चित ही ऐसा हो सकता था पर भगवान के अवतार के सैकड़ों, हजारों साल बाद भी भक्त उनकी लीलाओं का श्रवण, गान करके अपने जीवन का कल्याण करते हैं। सर्वव्यापी परमात्मा ही इस संसार के पालनकर्ता है तथा उनके अवतारों की कथाएं कलयुग के समस्त पापों का विध्वंस करने वाली है –

अवति योऽनिशं विश्व सच्चिदानन्द ईश्वरः।
अवतारकथा तस्य कलिकल्मष नाशिनी॥

जो मनुष्य दुस्तर संसार–सागर के पार जाना चाहते है, उनके निमित्त भगवान की अवतार कथा के रसास्वादन को छोड़कर अन्य कोई अवलम्ब नही है। अवतार कथाएं हमें भगवान की ओर उन्मुख कराती हुई हमारे श्रेय का मार्ग प्रशस्त करती है। हमारे पर कृपा करने के लिये भगवान अवतार ग्रहण करते हैं –

"नृणां निःश्रेयसार्थाय व्यक्तिर्भगवतो नृप।"

(श्री मद्भ.10/29/14)

भगवान अवतार लेने के लिये हर समय तैयार रहते है। भगवान का एक अवतार है– यज्ञरूप। 'यज्ञो विष्णु' विष्णु ही यज्ञ है। श्री गुरु जाम्भोजी के रूप में भगवान कलिपावन अवतार समराथल पर यज्ञ की संस्थापना कर रहे है। मानो एक अवतार दूसरे अवतार को प्रकट कर रहा है और साथ में यह भी संदेश दे रहा है कि इस विधि से तुम भी अपने घर में नित्य परमात्मा को प्रकट कर सकते हो।

पैदा वह होता है, जो पहले नही था। प्रकट वह होता है जो पहले था, पर अदृश्य था, छुपा हुआ था, हमारी आँखों से ओझल था। वह था तो हमारे आसपास ही पर हम उसे देख नहीं पर रहे थे क्योंकि भगवान शून्य में रहते है। विष्णु सहस्रनाम में भगवान का एक नाम शून्य है (वीरहा विषमः शून्यो)। शून्य में गूंजने वाला अनहद नाद ही भगवान की वाणी है उसी से वेद प्रकट हुए है। आज भी हम आंख और कान बंद करके शून्य में स्थित होने का प्रयत्न करते है तो वह वाणी हमें अपने अंदर गूंजती हुई प्रतीत होती है, तभी तो साधक बाहरी प्रपंच, शोरगुल, आपाधापी से दूर एकान्तिक शून्य में बैठकर परमात्मा की प्राप्ति का यत्न करते है। मोक्ष प्राप्ति चाहने वाले मुमुक्ष लोग समाज, घर–परिवार और उसके रिश्ते–नातों से संबंध विच्छेद करते–करते फिर अपने शरीर का भी मोह छोड़ देते है तथा पूर्णत– जब वे अकेले यानि केवल मात्र जीवात्मा का अहसास करने लगते है तब वे शून्य में विलीन हो जाते है। इस शून्य को श्री गुरु जाम्भोजी ने परिभाषित करते हुए कहा है कि –"जब पवन प्राणी, धरती, आकाश, चन्द्र, सूर्य आदि कुछ भी नही था, तब भी एक परमात्मा था और चारों तरफ धूँधकार की स्थिति थी"–

तद होता एक निरंजण शिंभू, कै होता धंधू कारू।

(सबद–4)

इस सबद में भगवान अपने को अनादि बता रहे है– छत्तीस युग कई बार बीत गए है, पहले का अन्त–पार नहीं है, मैं तब भी था, अब भी हूँ और आगे भी रहूंगा।

बात कदे की पूछे लोई। जग छत्तीस बिचारू। ताह परैरे अवर छतीसूं।
पहला अंत न पारू। म्हे तदपण होता अब पण आछे, बल–बल होयसां
कह कद कद का करूं विचारूं॥

गीता में भी भगवान ऐसा ही कहते है –

न में विदुः सुरगणाः प्रभव न महर्षचः।
अहमादिर्हि देवाणं महर्षीणां च सर्वशः॥
यो माम जयनादि च वेत्ति लोकमहेश्वरम्।
असम्मढ़ः स मर्त्सेषु सर्वपापैः प्रमुच्चते॥

(गीताः 10/2–3)

मेरी उत्पति को अर्थात् लीला से प्रकट होने को न देवताजन जानते है और न महर्षिजन जानते है, क्योंकि मैं सब प्रकार से देवताओं और महर्षियों का भी आविकारण

हूँ। जो मुझको अजन्मा अर्थात् वास्तव में जन्मरहित, अनादि और लोकों का महान् ईश्वर तत्त्व से जानता है, वह मनुष्यों में ज्ञानवान पुरुष सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है।

यहां भगवान स्पष्ट कर रहे हैं कि मेरा जन्म नहीं होता बल्कि मैं प्रकट होता हूँ। मेरा आदि और अंत नहीं है तथा ये सम्पूर्ण लोक मेरी इच्छा मात्र से ही संचालित हो रहे। भगवान को इस प्रकार सर्वशक्तिमान, सबके नियंता और अनादि जान लेने पर ही जीव पाप मुक्त हो जाता है। उनके जन्म की खोज करने निकले ब्रह्माजी, देवता और महर्षि नेति-नेति कह चुके है। भगवान के प्रभाव को जान लेने पर जीव भगवान के शरण हो जाता है और उसका भगवान में प्रेम बढ़ जाता है तथा यही जीव के पापनाश का कारण बनता है।

महात्मा वील्हो जी भगवान के प्रकट होने का बड़ा ही सुन्दर वर्णन 'उमाहा' में करते है -

बाबो जंबू द्वीपे परगटियो, चोचक हुया उजास।
आप दीठो केवल कथे, जिंहि गुरु की हम आस॥
समराथल रली आवणा, जित देव तणो दीवाण।
परगटियो पगड़ो हुयो, निज अंधियारी भांण॥

इस जम्बू द्वीप (भारत वर्ष) में भगवान प्रकट हो गए है, चारों दिशाओं में प्रकाश फैला गया है। स्वयं सन्मुख बैठकर वे कैवल्य ज्ञान का कथन कर रहे है, ऐसे गुरु भगवान ही हमारी पसन्द है। मिलजुल कर लोग समराथल आ रहे है, वहां देवजी का दरबार लगा हुआ है। उनके प्रकट होने पर दिन निकल आया है, जैसे अंधियारी रात में सूरज उदय हो गया हो।

जो जन्मता है वह मरता भी है पर जो प्रकट होता है वह मरता नही है, वह केवल अदृश्य होता है -

तिथि नव निरखी, ओल्हे हुवा अलेख।

संत केसो जी ने भगवान के अंतर्ध्यान होने के लिये कितने सटीक 'ओल्हे' शब्द का प्रयोग किया है। वे भगवान अब भी हमारे आस-पास ही है, वे तो हमें छिपकर देख रहे है, पर हम नहीं देख पर रहे है। ऐसा कौन सा उपाय है, जिससे हमें भी भगवान दिखाई दे जाएं? केसो जी कहते है-'भगवान से प्रेम करो, वे आपको दर्शन दे देंगे और आपका आवागमन मिट जाएगा'।

हरि हेत कीजे दरस दीजे, पार घर पहुंचाय।
दास केसो आस थारी, म्हारी आवागवण निवार॥

❐ **विनोद जम्भदास कड़वासरा**
हिम्मतपुरा, तह.-अबोहर, जि.-फालिल्का
(पंजाब) मो. 09417681063
E-mail: jambhdasvinod29@gmail.com

रिधीपति सिधिपति शीलपति सुरपति सदा सहाय।
गतिदाता गोबिन्द सुमरि, गोकुल हरिगुण गाय।।

क्यों विशेष है जन्माष्टमी?

अन्य हिन्दू जातियां तो श्रीकृष्ण भगवान का जन्म होने के कारण मन्दिरों को भव्य ढंग से सजाकर जन्माष्टमी मनाते हैं, पूरे देश व कुछ विदेशों में भी मनाते हैं और हम गुरु जम्भेश्वर जन्माष्टमी। यह भी प्रभु ईश्वर विष्णु जी की ही कृपा है कि भगवान कृष्ण के रूप में व जम्भेश्वर के रूप में विष्णु जी ने काफी अन्तराल से जन्म लिया लेकिन वही भादवा का महीना, तिथि, समय आदि। जन्माष्टमी के दिन इस प्रकार बिश्नोई व अन्य जातियां इस त्यौहार को एकजुट होकर मनाते हैं।

शायद विष्णु भगवान ने भादवा में जन्म इसलिए भी लिया हो कि यह वर्षा ऋतु होती है और पानी में भी स्वयं विष्णु होते हैं। इस समय चारों तरफ हरियाली होती है। हरियाली से भी मानव का मन प्रसन्न होता है। श्रीकृष्ण के रूप में जब विष्णु मौजूद थे तो कृष्ण जी ने कहा था कि तालाब में नंगे मत नहाया करें, तो उन्होंने कोई परवाह नहीं की। भगवान ने सोचा कि ये अपनी तरफ से तो अच्छा स्नान कर रही हैं। लेकिन पानी में नंगा नहाने से पाप लगता है। क्योंकि पानी में भी विष्णु और युवा अवस्था में हम अपने पिता के समक्ष नंगे नहीं नहा सकते। यह तो एक उदाहरण हुआ। भादवा में सबसे ज्यादा पानी होता है तो विष्णु ही विष्णु। अत: यह समय विशेष होता है हर वर्ग के लिए मनोहारी समय।

❐ **हेतराम जाणी**, बड़वा, भिवानी मो.: 9991153570

क्षमा : वैर परम्परा को शान्त करती है

प्राय: देखने में आता है कि किसी भी प्रकार की प्रभुता सम्पन्न या शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति के द्वारा प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने को नियन्त्रण में रखना या इसका प्रतिकार न करना, चुपचाप-शान्तिपूर्वक बैठे रहना, बड़ा ही मुश्किल होता है क्योंकि उसमें नम्रता, सहिष्णुता, उदारता, सौम्यता, करुणा और कृतज्ञता आदि गुण सहसा उत्पन्न नहीं होते। परन्तु जो व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में भी क्रोध, आवेश और उत्तेजना रहित होकर संयमित बने रहते हैं वे ही पूजनीय एवं महान होते हैं। ऐसे व्यक्तियों में क्षमाभाव कूट-कूटकर भरा होता है। महाभारत में तो क्षमा को सर्वोपरि बताते हुए कहा है-

क्षमा ब्रह्मं, क्षमा सत्यं, क्षमा भूतं च भावि च।
क्षमा तप:, क्षमा शौचं, क्षमयेदं धृतं जगत्॥

अर्थात् क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत और भविष्यत् है। क्षता तप है, क्षमा पवित्रता और शुद्धि है। क्षमा ने ही यह जगत् धारण कर रखा है, अन्यथा संसार में कभी का प्रलय, अराजकता एवं संघर्ष फैल जाता। दुनिया तबाह हो जाती। अतएव वैरभाव, प्रतिहिंसा, प्रतिरोध आदि सबको आत्मा के महान् शत्रु मानकार उनसे अलग रहने का प्रयास करना चाहिए तभी दूसरे के हृदय को क्षमाभाव से जीता जा सकता है। 'प्रतिकार करने में सामर्थ्य होने पर भी दूसरे के अपकार को सहन करना अथवा प्रत्युत्तर न देना ही क्षमा है' -

'सत्यपि प्रतिकारं सामर्थ्येऽपकारसहनं क्षमां। इसलिए कहा भी है- 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' क्षमा वीरों का आभूषण है।

सौराष्ट्र नगर में दो भाई रहते थे उनमें बड़ा भाई बड़ा ही सौम्य और शान्त प्रकृति का था किन्तु छोटा भाई ठीक उसके विपरीत उग्र एवं क्रोधी स्वभाव का था। एक दिन घर में किसी छोटी सी बात पर झगड़ा हो गया। बड़े भाई ने उसको समझाने की बहुत कोशिश की मगर, वह नहीं समझा। प्रत्युत क्रोध में आग बबूला होकर हाथ में लाठी लेकर बड़े भाई को मारने के लिए दौड़ा। वैसे तो हमेशा बड़ा भाई शान्ति से काम लेता और चुप रहता। लेकिन उस दिन उसको भी क्रोध आ गया कि मैं तो इसको आराम से समझा रहा हूँ। मगर यह समझने के बजाय उलटा मुझको ही लाठी से मारने आ रहा है। यह सोचकर उसने छोटे भाई के हाथ से लाठी छिनकर उसको मार दी। लाठी लगते ही छोटा भाई जमीन पर गिर पड़ा और वहीं उसने दम तोड़ दिया। यद्यपि बड़े भाई ने लाठी इतनी जोर से नहीं मारी थी, किन्तु उसकी आयु इसी निमित्त से पूर्ण होनी थी।

छोटे भाई को मरणासन्न देखकर बड़े भाई को बहुत ज्यादा दु:ख एवं पश्चाताप् हुआ। इससे घर का माहौल बड़ा ही दु:खद व अजीब सा बन गया। छोटे भाई की पत्नी की दृष्टि में वह अपने को हमेशा उसका अपराधी महसूस तो करता ही था, साथ ही आसपास के लोगों के भी व्यंग्यबाण सहन करने पड़ते थे कि देखो कैसा दुष्ट है, कहने को बड़ा भाई था मगर, छोटे को लाठी से मारकर उसके प्राण लेने में थोड़ा भी बड़प्पन नहीं दिखाया। जो अपने छोटे भाई को मार सकता है वह दूसरों को क्या छोड़ेगा?

प्रतिदिन लोगों के कटु वचन सुनकर एक दिन उसके मन में विचार आया कि जब तक मैं गांव में रहूंगा ये लोग मुझे कोसते रहेंगे। दूसरे छोटे भाई की विधवा एवं उसके बच्चों का दु:ख भी मुझसे अब सहन नहीं होता। अच्छा है, यह घर इनके नाम करके मैं अन्यत्र जाकर जीवन व्यतीत करूं। यह सोचकर वह अपनी पत्नी एवं बच्चों को लेकर चित्तौड़ चला गया। वहां जाकर उसने अपनी काव्य प्रतिभा एवं कुशलता से राजसभा में अपना स्थान बना लिया। कुछ ही महीनों में वह कविरत्न की उपाधि से सम्मानित भी किया गया।

कवि की मृत्युपरान्त उसका पुत्र भी पिता से कहीं अधिक प्रतिभा सम्पन्न एवं चतुर निकला और देखते ही देखते वह राजसभा का कविरत्न बन गया। कवि पुत्र राणा सौराष्ट्र का इतना प्रिय एवं सम्मानित व्यक्ति हो गया कि घर से राजसभा तक लाने और पुन: वहां से घर पहुंचाने के लिए पालकी एवं राजसेवक राज्य की ओर से नियुक्त किए गए थे। साथ ही घर में सभी प्रकार के सुखोपभोग के साधन एवं नौकर-चाकर भी जुटाये गये थे। घर के आसपास सरकार की ओर से पहरा लगा रहता था। राजा

या दरबारी भी कभी उसकी बात से इन्कार नहीं करते थे क्योंकि उसमें सुन्दर, आकर्षक कविता बनाने की और साहित्य रचना करने की अद्‌भुत शक्ति थी। इतना होने पर भी प्रभुता एवं प्रतिभाशक्ति का मद या क्रोधावेश उसमें जरा भी नहीं था। अपनी पवित्रता एवं क्षमाशीलता और विनय भावना से उसने सभी का मन जीत लिया था।

चित्तौड़ में जैसे यह कवि पद को अलंकृत कर रहा था। वैसे ही सौराष्ट्र में उसके चाचा के दो पुत्र भी, जिनके पिता लाठी के प्रहार से परलोकवासी हो गये थे- वे भी बड़े होकर कवि बन गये थे। एक बार दोनों पुत्रों ने अपनी माता से पूछा- 'माँ! हमने कभी अपने पिता जी को नहीं देखा, वे छोटी उम्र में ही कैसे चले गये थे?' माँ, हमें बतलाओ।

माँ ने बताया- 'बेटा! तुम्हारे पिता अपनी मौत से नहीं मरे थे, उनके बड़े भाई ने उनको लाठी मारी थी। मारते ही वे नीचे जमीन पर गिर पड़े और उनके प्राण छूट गये।' यह सुनते ही क्रोध से उनका खून उबलने लगा और बोले- माँ, जल्दी बतलाओ हमारे पिता जी का हत्यारा कहां रहता है। हम उसे जिन्दा नहीं छोड़ेंगे। अपने पिता की हत्या का बदला अवश्य लेंगे, जिसने बचपन में ही हमारे सिर से पिता का साया छीन लिया था। माँ ने उन्हें बताया कि सुना है वे चित्तौड़ जाकर रहने लगे हैं। वहां बहुत बड़े कवि बने हुए हैं।

यह सुनकर छोटे भाई के दोनों बेटे बदले की ज्वाला को लेकर चित्तौड़ पहुंच गये। वहां एक मकान किराये पर लेकर रहने लगे। धीरे-धीरे उसने राजसभा में जाकर अपनी काव्य प्रतिभा से संगीतकार के रूप में स्थान प्राप्त कर लिया। किन्तु कविरत्न की तुलना नहीं कर पाये, क्योंकि बुद्धि एवं सामर्थ्य होते हुए भी अभिमान, क्रोध, लोभ आदि विकारों से ग्रस्त थे। जबकि कविरत्न इन सभी दुर्गुणों से रहित निरभिमानी, गम्भीर, निर्लोभी एवं ईर्ष्या रहित था। राजसभा में किसी भी नये कवि के आने पर वे हृदय से उसका स्वागत एवं सम्मान करते थे। ऐसे ही उन्होंने अपने इन दोनों चचेरे भाइयों का भी स्वागत किया, जबकि उन्हें इनके इरादों के विषय में कुछ भी पता नहीं था कि वे उसके पिता से वैर का बदला लेने आए हैं।

संगीतकार के पद पर रहते हुए उन्होंने जानकारी प्राप्त करनी शुरू कर दी कि यहां पर बड़े कवि कौन हैं? जानकारी मिली कि हमारे पिता को मारने वाला तो अब इस दुनिया में नहीं है उनका पुत्र ही कविरत्न है। इसको कैसे मारना है? इसी उधेड़बुन में लगे वे नये-नये उपाय सोचने लगे। परन्तु कविरत्न तो अपने घर अकेला नहीं जाता, राजसभा में सवारी से आते-जाते हैं। साथ ही सिपाहियों का संगीन पहरा भी होता है। कैसे मारना होगा?

एक दिन पाक्षिक पर्व का पवित्र त्यौहार था, कविरत्न ने कहा- 'आज मुझे पालकी नहीं चाहिए, मैं पैदल ही राजसभा में जाऊँगा।' सिपाहियों ने भी साथ चलने के लिए बहुत आग्रह किया मगर उसने उनको भी साफ मना कर दिया। दोनों भाई तो इस मौके की तलाश में थे ही, जैसे ही वह अकेले घर से निकलकर गली के नुक्कड़ पर पहुंचे, उनका पीछा करते हुए दोनों भाई उसको घेरकर खड़े हो गये और हाथ में तलवार लेकर बोले- अरे दुष्ट, पापी! ठहर जा! यहां पर बड़ा कविरत्न बनने का नाटक कर रहे हो, तेरे पिता ने मेरे पिताजी की हत्या की थी, हम उसी का बदला लेने आए हैं। अब तुझे भी जीवित नहीं जाने देंगे। मरने के लिए तैयार हो जा?

उन दोनों भाइयों ने जैसे ही उसको मारने के लिए तलवार उठाई कि कविरत्न ने कहा- भाइयो! तुम्हारे और मेरे पिताजी के मध्य परिस्थितियां क्या थी, इनको तो हममें से कोई भी नहीं जानता। इस समय हम सब भाई हैं। हमें पुराना वैर नहीं रखना चाहिए, क्योंकि यदि उस वैर की खातिर तुम मुझको मारोगे तो उसका बदला मेरे पुत्र तुमसे लेंगे, तुम्हारी मौत का बदला फिर तुम्हारे पुत्र लेंगे। इस प्रकार यह वैर-परम्परा कभी भी समाप्त नहीं होगी। चलो, मेरे घर।

परन्तु उन दोनों भाइयों के ऊपर तो वैर का बदला सवार था। वे कहां उसकी बात सुनने वाले थे। क्रोधावेश में बोले- अच्छा, अपनी मृत्यु को सामने देखकर ज्ञानी, ध्यानी जैसा उपदेश देना शुरू कर दिया है। बचने के लिए और कौन से नये उपाय खोज रहा है। लेकिन हमसे बचकर आज तू जीवित नहीं जा पाएगा। कविरत्न द्वारा वैरभाव छोड़ने के लिए समझाए जाने पर भी जब वे समझ नहीं पाए तो कविरत्न ने कहा- भाइयो! अगर तुम मुझको मारकर अपनी वैर अग्नि को शान्त करना चाहते हो तो ठीक है, मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूँ क्योंकि यदि मुझको मारते हुए तुमको किसी ने देख लिया तो तुम पकड़े जाओगे। इसलिए आज रात को दस बजे इस नगर के बाहर शिव मन्दिर में तलवार लेकर आ जाना। मैं भी वहां आ जाऊँगा। तुम

खुशी से मुझे मारकर अपना बदला पूरा लेना।' यह सुनकर उत्तेजित होते हुए दोनों बोल- तू हमें बेवकूफ समझ रहा है, परन्तु हम तुझे जीवित जाने नहीं देंगे।

इस पर कविरत्न ने कहा- भाई! मैं भागने की नहीं, तुम्हें बचाने की सोच रहा हूँ। यदि तुम्हारी आत्मा मुझको मारने से ही शान्ति पाती है तो ठीक है, मैं मरने के लिए तैयार हूं। मुझे मारने से डर नहीं लगता। तुम विश्वास करो, मैं आज रात में ठीक समय पर वहां पहुंच जाऊंगा, जिससे तुम निर्भय होकर मुझे मार सकोगे। दोनों भाइयों ने कहा- ठीक है। तुझ पर भरोसा नहीं है। परन्तु तेरी पवित्रता की बातों पर विश्वास कर लेते हैं। हां, याद रखना यदि नहीं पहुंचा तो उसका परिणाम अच्छा नहीं होगा।

कविरत्न ने घर आकर सारी बात पत्नी को सुनाते हुए कहा- बोलो, तुम्हारी इच्छा क्या है? वैर परम्परा रखनी है या इसे रोकनी है? पत्नी बोली- प्राणनाथ! वैर विष-वल्ली है। हमें किसी से वैर नहीं रखना है बल्कि इसको इसी समय कुचल देना है। पत्नी की अनुमति पाकर कविरत्न झटपट तैयार होकर सही समय पर निश्चित स्थान पर पहुंच गया। जहां पर उसके चचेरे भाई पहले से ही उपस्थित थे। कविरत्न ने कहा- 'प्रिय भाइयो! मुझे आने में विलम्ब तो नहीं हुआ अब तुम जैसे चाहो वैसे ही मुझको मारकर अपनी आत्मा को शान्ति दे सकते हो।'

दोनों भाई जैसे ही कविरत्न को मारने के लिए उद्यत हुए तभी घोड़ों की टाप सुनाई दी। दोनों भाई घबरा गये। हाथ नीचे करके बोले- दुष्ट! तूने यह अच्छा नहीं किया। तुमने तो अकेले आने के लिए कहा था फिर हमें पकड़वाने का यह नाटक कैसा किया जा रहा है? कविरत्न ने कहा- 'भाइयो! मैंने तो किसी को आने के लिए नहीं कहा। न ही मुझे मालूम है कि कौन आ रहा है।' इतने में ही दो घोड़े उनके नजदीक आकर खड़े हो गये। एक पर कविरत्न की पत्नी बैठी थी और दूसरा घोड़ा खाली था।

पत्नी को सामने देखकर कविरत्न ने कहा- यह सब क्या है? तुम यहां पर क्यों आई हो, तो पत्नी ने कहा- स्वामी! यद्यपि आप मुझसे इजाजत लेकर आए थे। आपके आने के बाद मेरे मन में विचार आया कि मेरे पति तो वैर परम्परा शान्त करने के लिए अपना बलिदान देंगे लेकिन दोनों लाडले देवर पकड़े जाएंगे, क्योंकि आपको मारकर ये पैदल कितनी दूर जाएंगे। जैसे ही राजा को, पुजारी को पता चलेगा आपके हत्यारों को पकड़कर फांसी पर चढ़ा दिया जाएगा। अतः पुनः यह वैर परम्परा आपकी सन्तानों में बनी रहेगी। यह सोचकर मैं दो घोड़े लायी हूं जिससे ये सुरक्षित सीमा पार कर सकें और इस बात का पता किसी को न चले। इसलिए मैं भी आपकी चिता में जलकर अपने प्राण त्याग दूंगी। जीवित रहने पर हो सकता है किसी के पूछताछ करने से मुंह से कदाचित् सत्य निकल जाए जो बड़ा अनर्थ हो जाएगा।

पत्नी के गौरवमय वचन सुनकर कविरत्न ने उसको धन्यवाद देकर अपने भाइयों से कहा कि जल्दी से अपना काम पूरा करो। किन्तु पति-पत्नी के परस्पर समर्पण संवाद एवं पवित्र भावना को सुनकर दोनों का हृदय परिवर्तित हो गया। बहुत समय से मन में दहकती हुई वैर की ज्वाला एकदम शान्त हो गयी और अपने को धिक्कारते हुए बोले- आप लोग धन्य हैं, महान हैं, आप यदि चाहते जो हमें पकड़वा सकते थे। स्वयं भी हमारी हत्या करने में समर्थ हो सकते थे, लेकिन आपने ऐसा नहीं किया, अपितु हमारी वैराग्नि को शान्त करने के लिए दोनों आत्म बलिदान देने के लिए तैयार हो गये। दोनों ने हाथ में उठायी हुई तलवार दूर फेंक दी।

निरन्तर आंखों में गंगा-जमुना का जल धारण करते हुए दोनों भाई उनके चरणों में गिरकर बोले- 'भाई-भाभी! आप दोनों धन्य हैं। आपकी उदारता, दूरदर्शिता प्रशंसनीय है। आपने हमें राजा से मृत्युदण्ड न दिलाकर स्वयं क्षमा धारण करके हमारे अपने परिवार को नष्ट होने से बचाया। आज हमें भाई-भाभी के रूप में सद्गुरु की प्राप्ति हुई है जो हमारे लिए हमेशा पूजनीय रहेंगे।

कविरत्न और उनकी पत्नी दोनों ने उनको प्रेमपूर्वक समझाया और उनके हृदय में निहीत आत्मग्लानि को दूर करके अपने घर लाए और आश्वासन दिया कि राजसभा में तुम्हारे मान-सम्मान पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इस प्रकार कविरत्न अपनी क्षमा, सहिष्णुता, उदारता और नम्रता के बल पर अपने भाइयों के हृदय को बदलकर उनकी वैर भावना दूर करने में समर्थ हुए।

❐ **डॉ. उमा जैन**
रीडर, संस्कृत विभाग,
मु.ला. एण्ड जयना. खेमका गर्ल्स कॉलेज,
सहारनपुर (यूपी)

पुस्तक समीक्षा खेजड़ली रो खड़ाणोंः सिंहावलोकन

प्रकाशकः जांभाणी साहित्य सदन, बाड़मेर

लेखकः मास्टर बंशीलाल ढाका

मूल्यः 65.00

'काव्येषु नाटकं रम्य' कहकर हमारे प्राचीन वाङ्मय में नाटक विधा की महता प्रदर्शित की गई है। श्रव्य के साथ-साथ दृश्य होने के कारण नाटक सदैव से ही लोक के आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। नाटक का रंगमंच से जुड़ाव इसे साहित्य की अन्य सभी विधाओं से एक पृथक् व विशिष्ट स्थान प्रदान करता है। 'नाटक रंगमंच के लिए होता है' इसीलिए नाटक को लेखन की कसौटी भी माना जाता है। संकलन त्रय का प्रवाह कोई सिद्धहस्त लेखक ही निभा सकता है। यदि नाटक किसी ऐतिहासिक घटना पर आधारित हो तो लेखक का दायित्व दोहरा हो जाता है। एक ओर नाटक के तत्वों का निर्वहन तो दूसरी ओर ऐतिहासिक तत्त्वों का निर्वहन। नाटक 'खेजड़ली रो खड़ाणों' में ऐसे ही दोहरे दायित्व का निर्वाह मास्टर बंशीलाल ढाका ने किया है।

प्रस्तुत नाटक की घटना नाटकीय तो है ही साथ ही ऐतिहासिक भी है और संवेदनशील भी। इसीलिए ऐसी घटना पर लिखना पर्याप्त श्रम व गहन अध्ययन की अपेक्षा रखता है, जो लेखक ने किया है। सात अंकों और उन्नतीस दृश्यों में विभाजित इस नाटक की भूमिका व पूर्व पीठिका में लेखक ने तथ्यों पर विस्तार से प्रकाश डालकर पाठकों पर अतिरिक्त कृपा की है। पर्यावरण संरक्षण के अग्रदूत गुरु जाम्भोजी का यहां परिचय देना पूर्णतः प्रासंगिक है क्योंकि उन्हीं के वचनों की आन के लिए ही यह अभूतपूर्व बलिदान हुआ था। लेखक ने पूर्व पीठिका में खेजड़ली की घटना के साथ-साथ पर्यावरण रक्षा हेतु हुए अन्य बलिदानों का संक्षिप्त परिचय देकर इस महाबलिदान की पृष्ठभूमि स्पष्ट की है। यहां नाटक के तत्त्वों पर संक्षिप्त प्रकाश डालकर लेखक ने पाठकों की नाटक के प्रति समझ पैदा करने का प्रयास किया है। इस घटना के प्रत्यक्षदर्शी संत कवि गोकलजी व अन्य तत्कालीन साहित्यकारों का स्मरण करके लेखक ने कृतज्ञता भरा कार्य किया है। खेजड़ली बलिदान को लेकर अब तक लिखी गई रचनाओं का परिचय भी लेखक ने दिया है जिससे ज्ञात होता है कि एतदविषयक सामग्री का गहन अध्ययन करके ही उन्होंने अपनी अवधारणा व कथावस्तु का निर्धारण किया है। अत्यंत ही सीधी, सरस व सरल राजस्थानी भाषा में रचित इस नाटक की अन्यतम उपलब्धि है इसके बीच-बीच में 'रस भरे गीत व कविताएं' जो किसी भी नीरसता की संभावना को समाप्त कर देते हैं। नाटक के चुटकीले और छोटे-छोटे संवाद वस्तुतः इसके प्राण हैं। कथानक की स्पष्टता, रोचकता और तारतम्यता स्तुत्य है। पात्रों की सृजना अत्यंत ही सजीव है। राजस्थानी भाषा की स्वाभाविक सरसता का प्रवाह सर्वत्र दिखाई देता है। नाटक की सफलता की कसौटी यानि 'रंगमंच' की दृष्टि से भी यह एक सफल कृति है। लेखक ने अत्यंत सतर्कता से इसे लिखा है। कोई भी ऐसा दृश्य या वस्तु विधान नहीं रखा है जिससे इसके मंचन में दुविधा उत्पन्न हो जो कि एक सफल नाटककार का प्रथम गुण होता है। अंत में खेजड़ली खड़ाणे के 84 गांवों की सूची देकर नाटक को पूर्णता प्रदान की है।

खेजड़ली बलिदान को लेकर अब तक आधा दर्जन छोटी-बड़ी साहित्यिक कृतियां लिखी गई है। इसमें तो कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि अब तक लिखी गई इन रचनाओं में यह नाटक सर्वाधिक खोज व मंथन के साथ लिखी गई रचना है। यह कोरी ऐतिहासिक रचना नहीं है, एक साहित्यिक कृति है, जिसमें आवश्यक कल्पना का रंग भी है। आशा है इसी दृष्टिकोण से पाठक इसका पठन करेंगे और समालोचक समालोचना भी। मैं विश्वास करता हूँ कि इस कृति में प्रस्तुत सामग्री का अध्ययन गुरु जाम्भोजी के पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांतों तथा जाम्भाणी साहित्य के विश्व कल्याण के दृष्टिकोण को आमजन तक पहुंचाने में सहायक होगा। इस पठनीय, मननीय, मंचनीय और संग्रहणीय कृति के लिए लेखक को कोटि-कोटि साधुवाद।

❐ **डॉ. सुरेन्द्र कुमार**
सहायक प्रोफेसर (हिन्दी)
दयानन्द स्नातकोतर महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा)
मो. 09812108255

अमर ज्योति नियमावली

1. अमर ज्योति साधारणतया प्रत्येक मास की 1 तारीख को भेजी जाती है। यदि आपको 15 तारीख तक न मिले तो, कृपया कार्यालय में ग्राहक संख्या सहित सूचित कीजिए। इससे पहले आप अपने डाकघर से पूछताछ अवश्य करें।
2. अमर ज्योति का वार्षिक शुल्क 70/- रुपये, आजीवन (50 वर्ष के लिए) शुल्क - 700/- रुपये तथा एक प्रति सामान्य अंक का मूल्य 10 रुपये और विशेषांक का 30 रुपये है।
3. नये ग्राहक कृपया अपना शुल्क पहले भेजें। अपना पूरा पता पिन कोड, मोबाइल नं., ई-मेल सहित लिखें।
4. रचनाएं फुलस्केप पृष्ठ पर एक ओर 2 इंच हाशिया छोड़कर साफ सुथरे अक्षरों में हस्तलिखित या टंकित करके ही भेजी जाए तथा साथ में मौलिकता संबंधी प्रमाण-पत्र अवश्य भेजें अन्यथा स्वीकार्य नहीं होगी।
5. संकीर्ण मानसिकता, दलबन्दी एवं व्यक्तिगत आक्षेप युक्त लेख प्रकाशित नहीं होंगे।
6. सम्पादक को मूल रचना के भावों को सुरक्षित रखते हुए उसमें परिवर्तन, परिवर्द्धन और संक्षेपण करने का पूर्ण अधिकार होगा।
7. रचनाएं सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक व आध्यात्मिक हो। वे सामयिक, सूचनाप्रद व रूचिकर भी हो सकती है।
8. अस्वीकृत रचनाओं को वापिस भेजने की कोई व्यवस्था नहीं है। यदि प्रेषक अपनी रचना वापिस चाहते हैं तो पता लिखा तथा समुचित टिकट लगा लिफाफा साथ में अवश्य भेजें।
9. पत्रिका में प्रकाशित किसी लेख से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं होगा। लेख की सामग्री के लिए लेखक ही पूर्ण रूप से उत्तरदायी होगा।
10. नव लेखकों को प्रोत्साहन देने के लिए उनकी रचनाओं पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। उपयोगी लेखमालाओं को छापने पर भी विचार हो सकता है।
11. अमर ज्योति में नवीन कृतियों पर समालोचना भी प्रकाशित होती है। अत: लेखक महोदय समीक्षा हेतु पुस्तक की दो प्रतियां तथा साथ में यदि समीक्षा हो तो वह भी भेजने की कृपा करें। समीक्षा अधिकारी विद्वानों से करवाई जाएगी।
12. पत्रिका को अधिकाधिक उपयोगी एवं रूचिकर बनाने हेतु पाठकों के सुझावों का सदा स्वागत होगा।
13. आलेखों/रचनाओं से सम्बन्धित जानकारी के लिए सीधे लेखक/रचनाकार से ही सम्पर्क करें।
14. 'अमर ज्योति' के प्रचार-प्रसार में विशेष सहयोग करने वाले तथा 100 से अधिक सदस्य बनाने वाले महानुभावों को किसी विशेष कार्यक्रम में सम्मानित किया जाएगा तथा उनका नाम अमर ज्योति में प्रकाशित भी किया जाएगा।
15. 'अमर ज्योति' के शुभचिन्तक अपने खुशी के अवसरों पर दान देकर इसकी सहायता कर सकते हैं। समय-समय पर ऐसे महानुभावों का नाम अमर ज्योति में प्रकाशित किया जाएगा।

पर्यावरण तीर्थराज खेजड़ली'

बिश्नोई समाज में आठ धामों को श्रेष्ठकर माना गया है जो बिश्नोइयों के लिए किसी तीर्थ से कम नहीं है। इन आठ धामों के अतिरिक्त भी एक तीर्थराज धाम है जो भारत में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में बिश्नोईज्म संस्कृति/ परंपरा का परिचायक बना है। यह धाम बिश्नोई समाज का सांस्कृतिक/ सामाजिक परंपरा का गौरव है, अपने आराध्य देव के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। जिस प्रकार आठ धामों की यात्रा करना बिश्नोइयों की परंपरा रही है उससे बढ़कर इस धाम की यात्रा करना प्रत्येक बिश्नोई ही नहीं पर्यावरण प्रेमी के लिए श्रेष्ठकर है। यहां पहुंचकर प्रत्येक व्यक्ति गौरव की अनुभूति करता है। यह धाम यहां आने वाले प्रत्येक धर्म विमुख होते व्यक्तियों को अपने पूर्वजों की परंपरा से जोड़ने का माध्यम है। बिश्नोइयों के लिए ही नहीं वरन् समूची मानव जाति के लिए प्रेरणा स्त्रोत स्वरूपक इस धाम का नाम खेजड़ली तीर्थ स्थल है जो वैश्विक परिदृश्य में विश्व तीर्थ/पर्यावरण तीर्थराज खेजड़ली के नाम से पहचाना जाता है। जोधपुर जिले से लगभग 25 किलोमीटर दूर दक्षिण में प्रकृति के आंचल में बसा खेजड़ली गांव यहां हुए पर्यावरण यज्ञ के लिए प्रसिद्ध है जिसे यहां के श्रेष्ठ मनुष्यों ने अपने शरीर की यज्ञाहुति देकर सफल बनाया। यहां वृक्ष रक्षार्थ बिश्नोइयों ने अहिंसात्मक रूप से आत्मोसर्ग किया, यह बलिदान सन् 1730 (विक्रम संवत् 1787) में हुआ। जब जोधपुर के राजा अभयसिंह ने नये महल के निर्माण का निर्णय लिया तो चूने को पकाने हेतु लकड़ियों की आवश्यकता पड़ी तब राजा ने दीवान गिरधर दास को खेजड़ली वृक्षों को आदेश दिया। जब इस बात की खबर जंभ अनुयायियों को हुई तो उन्होंने जांभोजी द्वारा प्रदत्त शिक्षा 'जीव दया पालणी, रूंख लीलो नी घावे' का अनुसरण करते हुए वृक्ष नहीं काटने दिये। जब इसकी सूचना मजदूरों ने गिरधर भंडारी को दी तो गिरधर ने बिश्नोइयों को दूर रहने को कहा और मजदूरों को पेड़ काटने का आदेश दिया तब बिश्नोई लोगों ने जांभोजी की बात 'संसार में प्रत्येक प्राणी मात्र के प्रति दया का भाव रखना और हरे वृक्ष नहीं काटना' (यहां जांभोजी ने वृक्षों को उन जीवों में शामिल कर, अहिंसा से भी आगे की बात कही, जैसे शायद यह सृष्टि बचाने की अंतिम बात हो) का स्मरण कर प्रतिक्रियात्मकरूप से वृक्षों की कटाई से पहले स्वयं की मृत्यु स्वीकार हरे वृक्षों से लिपट गये। निर्दयी गिरधर ने वृक्षों से लिपटे बिश्नोइयों को भी साथ काटने का आदेश दिया जिसमें वृक्षों से पहले खुद को समर्पित कर बिश्नोइयों ने धर्म नियमों के प्रति अनंत आस्था प्रकट करते हुए 'जीव दया पालणी, रूंख लीलो नी घावे' को प्रत्यक्ष रूप से साकार किया/ पर्यावरण रक्षण हेतु घटित हुए इस यज्ञ में 84 गांवों के 64 गौत्रों के 217 परिवारों के, 363 नर-नारियों ने अपने शरीर को अर्पित किया। इस अद्वितीय यज्ञ में सर्वप्रथम 'सिर सांटे रूंख रहे तो भी सस्तो जाण' का उद्घोष करती वीरांगना नारी 'अमृता देवी' ने अपने शरीर की आहुति दी। इस घटना के उपरांत जोधपुर राजा ने बिश्नोई समाज से क्षमायाचना कर उन्हें ताम्रपत्र लिखकर दिया था जिसमें बिश्नोइयों के गांवों में हरे वृक्षों की कटाई निषेध और भविष्य में ऐसी घटना न होने का आश्वासन दिया गया। 10 सितंबर 1989 को खेजड़ली में वृक्ष रक्षार्थ शहीदों की याद में यहां शहीद स्मारक निर्मित किया गया, जहां देखा जाए तो प्रतिदिन प्रकृति प्रेमियों का मेला लगा रहता है। पर प्रमुख रूप से प्रतिवर्ष शहीदी दिवस के उपलक्ष में भादवा सुदी दशमी को पर्यावरण मेला भरता है जिसमें बिश्नोई व पर्यावरण प्रेमी शहीदों को नमन करने आते हैं। आज भी शहीद स्मारक के आसपास की मिट्टी लाल है। स्मारक के पीछे गुरु जम्भेश्वर जी का भव्य मंदिर स्थित है जो बिश्नोइयों के प्रकृति प्रेम और अटूट श्रद्धा का प्रतीक है। खेजड़ली मेले की शुरुआत अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के संस्थापक श्री संत कुमार जी राहड़ ने शहीदी स्मारक बनवा कर करवाई थी। खेजड़ली वृक्षों से आच्छादित शहीद स्मारक खेजड़ली का स्वरूप मनमोहक है। यहां प्रत्येक प्रजाति के पक्षी स्वच्छंद भाव से घूमते मिल जाते हैं।

आज पर्यावरण संरक्षण हेतु घटित हुई इस अहिंसात्मक आत्मोसर्ग की घटना की याद में राज्य सरकार पर्यावरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति विशेष को प्रतिवर्ष 'अमृता देवी पुरस्कार' से सम्मानित करती है। खेजड़ली धाम राज्य में पर्यटन में भी अहम माना जाता है। ऐसे पवित्र तीर्थ स्थल पर आकर यहां के प्राकृतिक मनोहर दृश्यों को देखना ही अपने आप में गौरव की बात है। राजस्थान के सुदूर मरु आंचल में स्थित खेजड़ली तीर्थ स्थल समूचे विश्व में पर्यावरण का एक मात्र तीर्थ स्थल है जो मानव समाज को सदा-सर्वदा प्राकृतिक संपदा संरक्षण की प्रेरणा देता रहेगा।

❐ **जय खीचड़**
गांव मोडायत, बीकानेर (राज.)
मो.: 8739967062

बिश्नोई मन्दिर सिरसा में राष्ट्रीय जाम्भाणी संस्कार शिविर आयोजित

बिश्नोई सभा, सिरसा एवं जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर द्वारा समाज के 13 से 18 वर्ष आयु वर्ग के छात्रों के लिए साप्ताहिक राष्ट्रीय जाम्भाणी संस्कार शिविर श्री गुरु जम्भेश्वर मन्दिर, सिरसा के प्रांगण में 20 जून से 26 जून 2014 तक आयोजित किया गया। इस शिविर में हरियाणा के सिरसा, हिसार, फतेहाबाद जिलों के अतिरिक्त साथ लगते राजस्थान व पंजाब के 120 विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। 20 जून को उद्घाटन समारोह के आरम्भ में लालासर साथरी से पधारे श्रद्धेय सन्त स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज तथा नीम गांव, मध्यप्रदेश से आये स्वामी विद्यानन्द के सान्निध्य में तथा अन्य अतिथिजनों व महानुभावों की उपस्थिति में समारोह के मुख्य अतिथि श्री सुजानाराम बिश्नोई मुख्य अभियन्ता जनस्वास्थय विभाग हरियाणा ने पवित्र जम्भज्योति प्रज्ज्वलित की तथा तदोपरान्त शिविर में आए बच्चों ने गुरु महाराज की साखी प्रस्तुत की। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता हिसार बिश्नोई सभा के कोषाध्यक्ष श्री राजाराम खिचड़ ने की। सिरसा सभा सचिव श्री ओ.पी. बिश्नोई ने पधारे अतिथि जनों का स्वागत किया तथा डॉ. मनीराम सहारण ने मंच संचालन किया व शिविर कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री खेमचन्द बैनीवाल, कोषाध्यक्ष श्री राजकुमार बैनीवाल, सहसचिव श्री जगतपाल कड़वासरा व कार्यकारिणी सदस्यों में देशकमल बिश्नोई, श्री हवासिंह बैनीवाल एडवोकेट, सुशील बैनीवाल, सोमप्रकाश बिश्नोई, श्री कृष्ण बैनीवाल, हनुमान गोदारा, पवन कड़वासरा एडवोकेट, इन्द्रजीत धारणीयां, गोपीराम देहडू, हनुमान सिहाग, कृष्णपाल बैनीवाल, सेवक दल सदस्यों में भूपसिंह कस्वां, रिछपाल बैनीवाल, पृथ्वीसिंह गोदारा, सुआराम कड़वासरा, सुखचैन (पंजाब) से विष्णु थापन व अन्य गणमान्य महानुभाव, महिलाए, पुरुष व बच्चे उपस्थित थे।

डा. सुरेन्द्र कुमार खिचड़ सम्पादक अमर ज्योति व महासचिव जाम्भाणी साहित्य अकादमी ने शिविर के दौरान बच्चों को अनुशासन की पालना करने व शिविर उद्देश्य व कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। मुख्य अतिथि ने तथा अन्य अतिथि जनों मे हिसार सभा सचिव श्री मनोहर लाल गोदारा, बिश्नोई जीव रक्षा समिति हरियाणा प्रधान रामेश्वर डेलू, यू.पी. मुरादाबाद से पधारे योगेन्द्र पाल सिंह, पंचकुला से प्रैस प्रभारी व संयुक्त सचिव श्री पृथ्वी सिहं बैनीवाल, पंजाब से श्री विनोद जम्भदास कड़वासरा, फतेहाबाद सभा से श्री ओम प्रकाश भिरडाना तथा सुग्रीव कड़वासरा ने अपने सम्बोधन में ऐसे शिविरों की महता बताई तथा भविष्य में बच्चों को ज्यादा से ज्यादा संख्या में आने का आग्रह किया। 26 जून तक चलने वाले शिविर में बच्चे प्रात: 4 बजे उठते थे तथा 5 से 6 बजे तक इन्द्राज बिश्नोई की देखरेख में योग प्राणायाम करते थे तत्पश्चात एक घन्टा हवन यज्ञ का कार्यक्रम होता था। दोपहर से पहले व दोपहर के बाद के सत्रों में विद्वान सन्तजनों व वक्ताओं द्वारा बच्चों को जाम्भोजी के जीवन चरित्र, 29 धर्म नियमों, सबदवाणी, बिश्नोई पंथ इतिहास के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास, कैरियर निर्माण, विद्यार्थी दिनचर्या तथा स्वास्थ्य व सामान्य ज्ञान की शिक्षा दी गई। विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। शिविर के दौरान मुख्य वक्ताओं के अतिरिक्त गुड़गांव से योगाचार्य गिरिराज, डॉ. ओ.पी. चौधरी नेत्र चिकित्सक, डॉ. राजेन्द्र गोदारा, श्री राम कुमार डेलू, अबोहर जल संरक्षण अभियान से जड़े रमेश गोयल तथा बलबीर राम पूनियां ने भी बच्चों को सम्बोधित किया। एक दिन बच्चों ने ऐतिहासिक सरसाईनाथ मन्दिर व अन्य स्थलों का भ्रमण किया तथा जानकारी ली।

26 जून को शिविर समापन अवसर पर बीकानेर से पधारी जांभाणी साहित्य अकादमी संरक्षक डॉ. श्रीमती

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि श्री सुजानाराम जी को सम्मानित करते सभा के पदाधिकारी।

समापन सत्र में विद्यार्थियों को संबोधित करते स्वामी सच्चिदानंद जी शास्त्री व मंचासीन अतिथिगण।

सरस्वती बिश्नोई मुख्य अतिथि थी तथा उन्होंने बच्चों को संस्कारवान होने के साथ-साथ अच्छे कैरियर निर्माण हेतु जीवन में उच्च लक्ष्य निधारित करने तथा उसे प्राप्त करने के लिए बुलन्द इरादों के साथ परिश्रम व तप करने के लिए प्रेरित किया। जोधपुर से पधारे प्रमुख पर्यावरणविद् श्री खम्मुराम खिचड़ ने प्रात: शहर में निकाली गई पर्यावरण जागृति रैली की अगुवाही की तथा बच्चों व उपस्थित जनों को पालीथीन रहित व स्वच्छ वातावरण बनाने के लिए प्रयासरत रहने को कहा। हनुमानगढ़ से पधारे जाम्भाणी साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष व प्रवक्ता डॉ. बनवारी लाल सहू ने अकादमी की स्थापना व इसके मुख्य उदेश्यों पर प्रकाश डाला। समापन अवसर पर प्रचार सचिव डॉ. मनीराम सहारण ने मंच संचालन किया तथा शिविर की गतिविधियों की जानकारी दी। सभा सचिव श्री ओ.पी. बिश्नोई ने अतिथिजनों का स्वागत किया तथा बच्चों को शिविर में दी गई शिक्षा व सुविधाओं का वर्णन किया। साहित्य अकादमी महासचिव डॉ. सुरेन्द्र कुमार खिचड़ ने शिविर की विस्तृत जानकारी दी तथा जाम्भाणी युवा जागृति मंच के गठन की सूचना दी। इस अवसर पर सभी सभा पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य, सेवक दल सदस्य, गुरु जम्भेश्वर छात्र संघ सदस्य और विभिन्न सभाओं के प्रतिनिधि, अभिभावकगण तथा बड़ी संख्या में स्त्री, पुरुष व बच्चे उपस्थित थे। प्रात: की रैली में प्रतीक गोदारा ने विशेष भूमिका निभाई। शिविर दौरान प्रात: व सायं हवन में पुजारी धन्नाराम का विशेष योगदान रहा।

समापन समारोह अवसर पर सन्तोषजनक ढ़ग से शिविर पूरा करने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र दिये गए। विभिन्न प्रतियोगिताओं में अव्वल स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया। लिखित प्रतियोगिता परीक्षा में शुभम काकड़ धागड़ ने प्रथम, कैलाश भादू धागड़ ने द्वितीय तथा उमेश कड़वासरा बडोपल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शुभम ने निबन्ध में

शिविर के दौरान पर्यावरण चेतना रैली का आयोजन करते प्रतिभागी।

प्रथम तथा भाषण में भी द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मनदीप गोदारा खैरेकां ने भाषण में प्रथम, गायन प्रातियोगिता में प्रथम तथा योग-प्राणायाम में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निबन्ध में मोहित गोदारा पंजुवाना ढाणी ने द्वितीय व अजय पंवार सदलपुर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण में धर्म तरड़ पन्नीवाला पंजाब, व रितिक देहडू सिरसा द्वितीय तथा कनिष्क भांभू श्री गंगानगर तृतीय स्थान पर रहा। गायन में अंशुल कालीराणा सदलपुर, धर्मतरड़ व मोहित गोदारा द्वितीय व मनोज लटियाल हाणियां जोधपुर तृतीय स्थान पर रहा। वाद- विवाद प्रतियोगिता में अनुज पंवार आदमपुर व उमेश कड़वासरा की टीम प्रथम, धर्म तरड़ व उज्ज्वल डूडी सिरसा की टीम द्वितीय तथा अजय पंवार व आजाद सिहाग शेखुपुर दड़ौली की टीम तृतीय स्थान पर रही। आजाद सिहाग ने योग प्राणायाम में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। शिविर में सर्वतोन्मुखी बेहतर प्रर्दशन करने पर शुभम काकड़ व मनदीप गोदारा को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। अतिथि जनों व वक्ताओं ने बच्चों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन पर उन्हें बधाई दी तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। समापन अवसर पर अन्त में स्वामी सच्चिदानन्द जी ने अपने सन्देश में बच्चों को शुभाशीष दिया व उन्हें सद्मार्ग पर चलने की नसीहत दी। अन्त में सभा के प्रधान श्री खेमचन्द बैनीवाल ने शिविर समारोह में शिरकत करने वाले सभी अतिथिजनों व अन्य महानुभावों के प्रति आभार प्रकट किया। उमावड़ा गायन व प्रसाद ग्रहण के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

❐ मंत्री, बिश्नोई सभा, सिरसा

पर्यावरण एवं जीव रक्षा बिश्नोई सभा हरियाणा का गठन

हरियाणा राज्य के वन्यजीव प्रेमियों को सगंठित करके जीव एवं पर्यावरण संरक्षण में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु पर्यावरण एवं जीव रक्षा बिश्नोई सभा हरियाणा को पंजीकृत करवाया गया है। संस्था के प्राथमिक उद्देश्यों में एंबुलैंस सहित अस्पताल/पशु चिकित्सालय शैल्टर स्थापित करना, पौधारोपण अभियान, स्वयंसेवकों की टीम तैयार करके उन्हें जीव रक्षा प्रशिक्षण, कानूनी जानकारी व प्रशिक्षण देना, स्कूलों में जागरूकता शिविर लगाना, पोलीथीन की रोकथाम हेतु प्रयास करना, धारदार ब्लेडनूमा तार हटवाना, जीव एवं पर्यावरण हितैषी कानून को लागू करवाना। संस्था को आर्थिक व समाजिक सहयोग हेतु कार्यकारिणी व मनोनीत सदस्य बनाए जाएंगे लेकिन जो स्वयंसेवक जमीनी स्तर पर कार्य करने के इच्छुक होंगे उन्हें ग्राम स्तर पर इकाई गठित करके अपने क्षेत्राधिकार में कार्य करने हेतु संगठित व प्रशिक्षित किया जाएगा।

सदस्यता सहयोग राशि:- कार्यकारिणी सदस्य व आजीवन सदस्य 11000 व 5100 रु. क्रमश: तथा स्वयं सेवकों के लिए आजीवन व वार्षिक 1100 व 100 रु. क्रमश:। सदस्यता के लिए संस्था के पंजीकृत कार्यालय नजदीक ज्याणी फोटोस्टेट, पुरानी कचहरी रोड, फतेहाबाद में सम्पर्क कर सकते हैं। यह संस्था गोरखपुर परमाणु संयंत्र से इलाके के जीवों की रक्षार्थ संरक्षित क्षेत्र हेतु दिल्ली स्थित "राष्ट्रीय ग्रीन ट्रिब्युनल" तथा माननीय उच्चतम न्यायालय में केस का खर्च वहन कर रही है जिसमें सहयोग का अनुरोध है। अत: दान के लिए संस्था "पर्यावरण एवं जीव रक्षा बिश्नोई सभा हरियाणा" के नाम चैक या खाता संख्या 33750564037 आईएफएससी सं. SBIN0004306 स्टेट बैंक ऑफ इंडिया लघु सचिवालय, फतेहाबाद में जमा करवा सकते है।

फतेहाबाद जिले की पहली पशु एम्बुलैंस की शुरूआत

फतेहाबाद वन्यजीव बाहुल्य जिला है लेकिन हाल ही के वर्षों में वन्यजीव दुर्घटनाओं के शिकार हुए है। इलाके के लोग इन्हें बचाने का प्रयास करते हैं लेकिन मौके पर चिकित्सा सुविधा ना मिलने या देरी से अस्पताल पहुंचने के कारण लगभग ये निरीह जीव मौत का शिकार होते हैं। लेकिन इन्हें बचाने के लिए प्रयासरत युवाओं ने पहल की और एम्बुलैंस सुविधा के प्रयास शुरू किए जिसके फलस्वरूप आज जिले की पहली पशु रक्षा एम्बुलैंस की शुरूआत हुई है। एम्बुलैंस दानी सज्जनों के सहयोग से राशि एकत्रित करके लगभग साढ़े छ: लाख की लागत से तैयार हुई

डी.सी. डॉ. डी. के. बेहरा हरी झंडी दिखाकर एम्बुलैंस का उद्घाटन करते हुए

है जिसमें विशेष सहयोग गांव नाढ़ोड़ी के जीव प्रेमियों तथा प्रसिद्व समाजसेवी देवीदयाल तायल का रहा। जीव रक्षा के लिए 20 सालों से कार्य कर रहे गांव नाढोड़ी के राधेश्याम धारनियां जो कि पीएफए फतेहाबाद के उपप्रधान और पर्यावरण एवं जीव रक्षा बिश्नोई सभा, हरियाणा के संगठन प्रदेशाध्यक्ष है, को इसके संचालन की जिम्मेवारी सौंपी गई हैं। उपायुक्त डॉ. डी.के. बेहरा ने कहा कि जीव रक्षार्थ यह अच्छी शुरूआत है और एम्बुलैंस जीवों को मौके पर तुरंत सेवा देने में समर्थ रहेगी। उपायुक्त ने मौके पर ही दो और एम्बुलैंसों का प्रस्ताव सरकार के पास भेजा जो कि संस्था को उपलब्ध करवाई जाएगी। इस मौके पर जिला पीएफए फतेहाबाद के अध्यक्ष विनोद कड़वासरा, पर्यावरण एवं जीव रक्षा बिश्नोई सभा, हरियाणा के संगठन अध्यक्ष राधेश्याम धारनियां, प्रसिद्ध समाजसेवी देवीदयाल तायल, बड़ोपल सरपंच जोगिन्द्र सिंह पुनिया, इन्द्राज ज्याणी, एडवोकेट सुशील बिश्नोई, सतबीर सहारण, संजय, दारा सिंह देहडू, प्रो. हवासिंह, धर्मवीर पुनिया, मा. मदनलाल सुथार, वाईल्ड इंस्पेक्टर द्वारका प्रसाद, महावीर प्रसाद, अमर एग्रो के सरदार जसपाल सिंह आदि मौजूद थे।

जीव रक्षार्थ बड़ोपल पंचायत ने दी 4 एकड़ भूमि दान

गांव बड़ोपल की पंचायत ने 4 एकड़ भूमि घायल एवं असहाय जीवों के इलाज के लिए दान दी है। पर्यावरण एवं जीव रक्षा बिश्नोई सभा हरियाणा की बैठक में सरपंच प्रतिनिधि जोगिन्द्र पूनियां ने संस्था के कार्यों को देखते हुए इसकी घोषणा की। इलाके में हिरण, नील गाय, सांड, गाय इत्यादि के घायल होने की सूचना मिलती है तो पशु एम्बुलैंस या जीव प्रेमी मौके पर पहुंचकर अस्पताल से इलाज करवाते हैं लेकिन घायल जीव को स्वस्थ होने तक देखभाल हेतु रखने

की कोई जगह नहीं है। लेकिन ग्राम पंचायत बड़ोपल ने संस्था को इसके लिए जमीन उपलब्ध करवाकर इस समस्या का निदान किया है। अब इस जगह पर समाज व जीव प्रेमियों की मदद से एक शैल्टर विकसित किया जाएगा जहां घायल जीवों को स्वस्थ होने तक रखा जाएगा और इलाज व चारे पानी की व्यवस्था भी की जाएगी। इस शैल्टर को पर्यावरण एवं जीव रक्षा बिश्नोई सभा हरियाणा तथा पीपल फॉर एनीमल्स फतेहाबाद इकाई द्वारा सामूहिक रूप से संचालित किया जाए।

पौधारोपण कार्यक्रम - बड़ोपल

दिनांक 15 जुलाई को पर्यावरण एवं जीव रक्षा बिश्नोई सभा हरियाणा के सहयोग से गांव बड़ोपल के नवनिर्मित राजकीय कन्या उच्च विद्यालय के प्रागंण में "तरू दिवस" मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि जिला फतेहाबाद उपायुक्त महोदय डॉ. डी.के. बेहरा जी, पुलिस अधीक्षक श्री शिवचरण अत्री, वन विभाग के अधिकारी डीएफओ श्री सतबीर सिंह श्योराण, आरएफओ कश्मीर सिंह, शिक्षा विभाग के अधिकारी डीईओ आशा ग्रोवर, डीईईओ डॉ. यज्ञदत्त वर्मा जी, सरपंच प्रतिनिधि श्री जोगिन्द्र पुनियां व सभी पंच और अन्य सभी विभागों के अधिकारियों के साथ साथ सैंकड़ों पर्यावरण प्रेमी पहुंचे। बड़ोपल व चिन्दड़ के पांच स्कूलों में कुल 780 पौधे लगाए गए। इस मौके पर आदर्श हाई स्कूल, धांगड़ द्वारा खेजड़ली बलिदान पर एक नाटिका प्रस्तुत की गई। उपायुक्त महोदय ने कहा कि हर इंसान को जीवन में कम से कम पांच पेड़ प्रति वर्ष लगाने चाहिए। पेड़ के लिए जान देना बहुत ही बड़ी बात है। महान थे वो सैंकड़ों लोग जिन्होंने पेड़ों की रक्षा के लिए अपना जीवन तक बलिदान कर दिया और इतिहास रच दिया लेकिन आज तीन सौ साल बाद सिर्फ बिश्नोई को ही नहीं बल्कि हर समाज, हर धर्म के व्यक्ति को पेड़ों के महत्व बारे में गंभीरता से सोचना होगा। उन अमर वीर शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि तभी मिलेगी जब हम सब मिलकर पौधरोपण करके इस धरती को हरा भरा रखेंगे। इस मौके पर पर्यावरण एवं जीव रक्षा बिश्नोई सभा हरियाणा के प्रदेशाध्यक्ष आत्माराम मांझू, संगठन अध्यक्ष राधेश्याम धारनियां, दारासिंह देहड़ू, एडवोकेट समुंद्र सिंह, मा. मदनलाल सुथार आदि मौजूद थे।

❐ **आत्माराम मांझू**
अध्यक्ष, पर्यावरण एवं जीव रक्षा
बिश्नोई सभा, हरियाणा

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रमी सम्वत् 2071 आसोज की अमावस्या

लगेगी - 23.9.2014, वार मंगलवार, प्रात: 9.44 बजे
उतरेगी - 24.9.2014, वार बुधवार, प्रात: 11.43 बजे

विक्रमी सम्वत् 2071 कार्तिक की अमावस्या

लगेगी - 22.10.2014, वार बुधवार, रात्रि 2.34 बजे
उतरेगी - 23.10.2014, वार गुरुवार, रात्रि 3.28 बजे

प्रमुख मेले व पर्व

खेजड़ली शहीदी मेला- 4.9.2014, वार गुरुवार भादवा सुदी दशमी;

माधा मेला जाम्भोलाव- 9.9.2014, वार मंगलवार, भादवा पूर्णिमा।

आसोज अमावस्या मेला : मुकाम 24.9.2014, वार बुधवार, आसोज अमावस्या

पुजारी : **बनवारी लाल सोढ़ा,** (जैसलां वाले)
मो.: **09416407290**

यह अंक आपको कैसा लगा?

आप सबके उन्मुक्त सहयोग, असीम स्नेह व सूझबूझ भरे मार्गदर्शन से आपकी चहेती पत्रिका 'अमर-ज्योति' धर्म प्रचार, सामाजिक जागरण व साहित्य समृद्धि में रत है। हमारा प्रयास रहता है कि इसका प्रत्येक अंक आपकी अभिरुचि के अनुकूल हो तथा यह पत्रिका आपकी आशाओं पर खरी उतरे। इस विशेषांक में भी हमने यही प्रयास किया है। हमारा प्रयास कितना सार्थक हुआ है इसके निर्णय का अधिकार आप सुधी पाठकों के पास है। अतएव कलम उठाइए और हमें लिख भेजिए कि यह अंक आपको कैसा लगा। आपसे अनुरोध है कि आप हमारी कमियों से हमें अवश्य अवगत करवाएं।

- संपादक

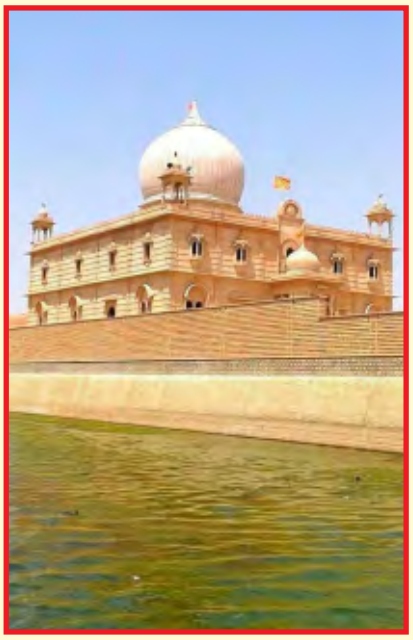

तीर्थ शिरोमणि जाम्भोलाव
तहसील फलौदी, जिला जोधपुर
राजस्थान

जांगलू धाम जहां श्री जम्भेश्वर
भगवान के चिम्पी व
चोला रखे हैं

पावन धाम रोटू, तहसील जायल,
जिला नागौर जहाँ श्री जम्भेश्वर
भगवान ने खेजड़ियों
का बाग लगाया था

लोदीपुर धाम जहां गुरु जाम्भोजी ने
खेजड़ी का वृक्ष लगाया था
जिला मुरादाबाद (उ.प्र.)

RNI NO. : 12406/57

POSTAL REGD. NO. L/Regd. NP/HSR/01/2014-2016
L/WPP/HSR/03/14-16

बिश्नोई मन्दिर हिसार के परिसर में नव निर्मित गुरु जम्भेश्वर मन्दिर

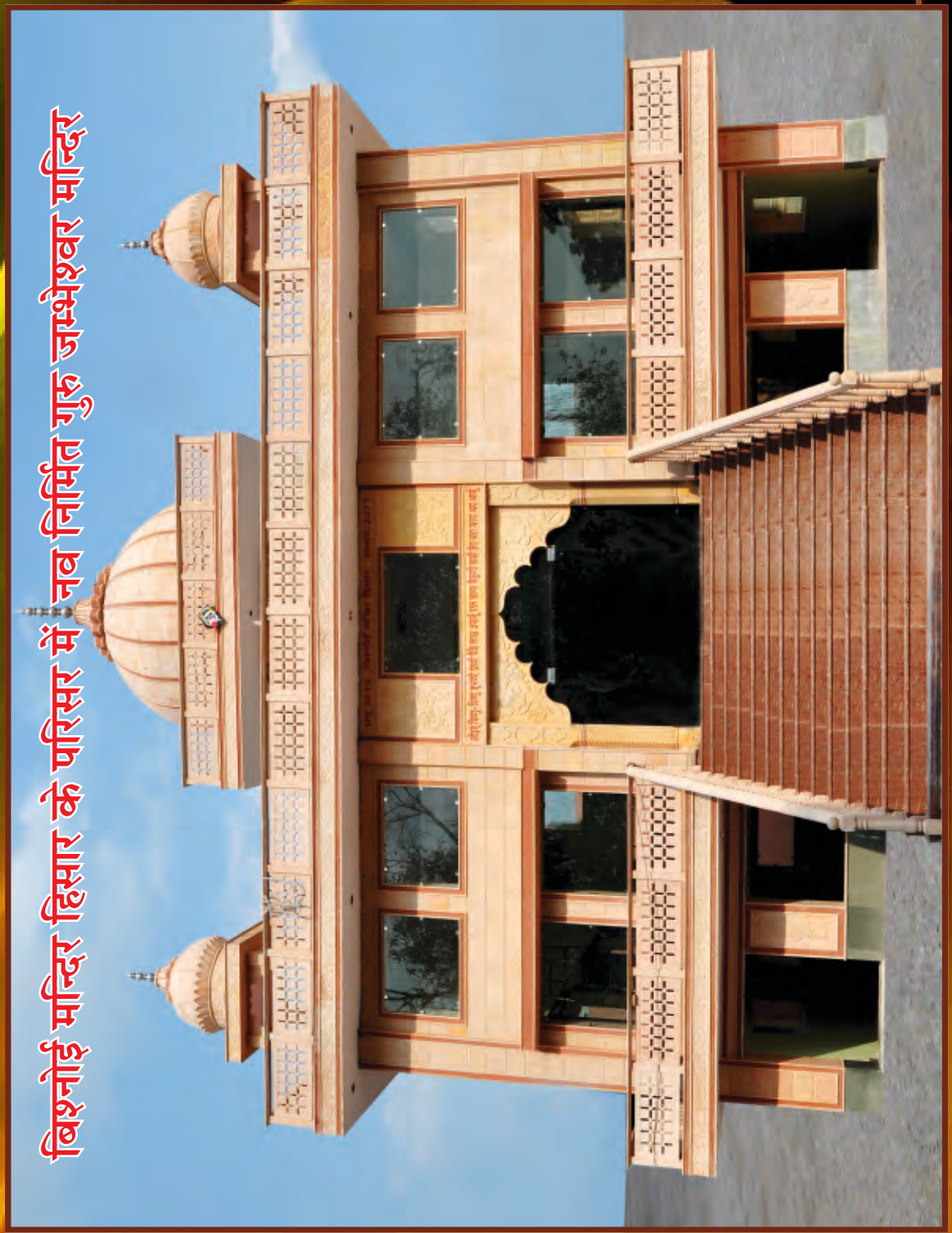

Printed at DOREX # 09896011117

मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 सितम्बर, 2014 को मुख्य डाकघर, हिसार से पोस्ट किया।